1988
प्रथम संस्करण

आवरण
श्री प्रकाश आर्टिस्ट

मूल्य
रुपये पचास मात्र

प्रकाशक
कृष्णा ब्रदर्स,
महात्मा गांधी मार्ग,
अजमेर-305001 (राज.)

मुद्रक
स्वस्तिक प्रिन्टर्स
हाथी भाटा, अजमेर

मणिपुर के समस्त
ज्ञात-अज्ञात हिन्दी
सेवकों को सादर
समर्पित........

अपनी बात

विगत लगभग बीस वर्षों से मणिपुर प्रवास मे मैं मणिपुर मे हिन्दी के विकास का प्रत्यक्ष साक्षी रहा हूँ तथा इन वर्षों म इसके विकास के इतिहास से हिन्दी अध्यापक होने के कारण जुडा रहा हू। मणिपुर की हिन्दी प्रचारक सस्थाओ, स्थानीय एव प्रवासी प्रचारको, अध्यापको से मेरा घनिष्ठ सबध रहा। इसी क्रम मे हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा के तथ्य मैं सकलित करता रहा।

डॉ. देवराज ने 'मणिपुर मे हिन्दी' आलेख 1985 मे गाजियाबाद 'साहित्य सम्मेलन' के वार्षिक अधिवेशन हेतु तैयार किया। वे उस समय मणिपुर आए ही थे। आलेख हेतु उन्होंने सर्वेक्षण किया और मैंने भी उन्हे उपलब्ध जानकारी दी। मणिपुर म हिन्दी की प्रगति के इतिहास की ओर इस आलेख मे सकेत था। 1985 मे ही मुझे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से व्याख्यान यात्रा पर राजस्थान के तीन विश्वविद्यालयों मे भेजा गया। मैंने इस व्याख्यान माला मे अन्य विषयों के साथ मणिपुर मे हिन्दी से सबधित आठ आलेख तैयार किए जो बाद मे पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए। इन आलेखों की सम्पादको एव पाठको द्वारा प्रशसा की गई, अत: मेरे मन मे मणिपुर म हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करने की कल्पना ने जन्म लिया। कल्पना को साकार करने मे कुछ लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

बधुवर श्री जगदीश शर्मा जी (हिन्दी सस्था सघ) ने पाडुलिपि तैयार करने का आग्रह किया। यहाँ डॉ देवराज भी निरन्तर यही कहते थे। इन्हीं कारणो से मूलरूप से केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की व्याख्यान माला हेतु तैयार किए गए तथा विभिन्न पत्रिकाओ मे प्रकाशित निबधो का सस्कार करके पुस्तक का रूप दिया गया है।

मध्यकाल मे हिन्दी की स्थिति का विभिन्न उपलब्ध साक्ष्यो से अनुमान लगाया गया है। उन्नीसवी शताब्दी मे मणिपुर मे हिन्दी की स्थिति के के प्रामाणिक दस्तावेज उपलब्ध हैं। बीसवी शताब्दी मे हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का विवरण यत्र-तत्र प्रकाशित भी हुआ है, किंतु प्रथम बार उसको अपेक्षित विस्तार दिया गया है। लगभग विगत 50 वर्षों म हिन्दी के प्रचार-

प्रसार के लिए जो प्रयत्न हुए हैं, उनमे से बहुत कुछ कालकवलित हो गया है। जो पुस्तकें-पत्रिकाए प्रकाशित हुई थी वे आज अनुपलब्ध हैं। अनेक हिन्दी सैनिको जिन्होने हिन्दी प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था, का परिचय भी कालक्रम मे लुप्त हो गया। अत. मैंने यह आवश्यक समझा कि यदि इस समय भी यह कार्य नहीं किया गया तो शेष सामग्री भी नि शेष हो सकती है।

एक बात और थी। भारत के अन्य भागो मे मणिपुर के सम्बन्ध मे जानकारी नही है। यह बहुत बडी कमी है। बहुत से पढे-लिखे लोग इस प्रदेश के सबध मे कुछ भी नही जानते। फिर मणिपुर मे हिन्दी पढाने एव पढने की बात जब भी मैं अन्य प्रातो मे जाता, कहता तो लोग आश्चर्य करते थे। उनकी अनभिज्ञता एव जिज्ञासा मेरे लिए एक चुनौती थी जिसको मैंने स्वीकार करके यह प्रयास किया है।

प्रारभ मे मणिपुर का सक्षिप्त किंतु सर्वांग परिचय दिया गया है। इस परिचय के परिप्रेक्ष्य म ही पाठक मणिपुर मे हिन्दी की भूमिका को समझ सकते हैं। मणिपुर मे हिन्दी की स्थिति पर विभिन्न दृष्टिकोणो से विचार किया है, यथा स्थान अपने अनुभवो के आधार पर सुझाव भी दिए हैं। इसी क्रम म लिपि के सबध मे भी एक अध्याय इसलिए जोडना आवश्यक समझा गया कि एक तो देवनागरी लिपि मणिपुर मे शताब्दियो से प्रचलित है और दूसरी बात मणिपुर के लिए लिपि एक विशिष्ट समस्या भी है।

यह प्रथम प्रयास है और मेरी अपनी सीमाए एव क्षमता है। इसलिए निश्चित रूप से बहुत कुछ छूटना स्वाभाविक है। मणिपुरी समाज कला एव साहित्य के क्षेत्र मे प्रबुद्ध एव सतत जागरूक है। यहाँ कला-साहित्य या किसी भी क्षेत्र मे किए गए कार्य की प्रशसा या तुरत भर्त्सना की जाती है। ऐसे पाठक-वर्ग के सम्मुख इस प्रयास को प्रस्तुत करते हुए सकोच एव भय हो रहा है। किंतु मैं सारस्वत भावना से इस तुच्छ प्रयास को सुधि पाठकों के सम्मुख केवल इसलिए प्रस्तुत करने का साहस जुटा सका हूँ कि उनको आलोचना एव प्रतिक्रिया मे भविष्य मे इसका सस्कार हो सकेगा। फिर यह प्रथम प्रयास है, इस क्षेत्र मे इसको एक सकेत मात्र माना जाए तथा भविष्य मे इस दिशा मे और कार्य किया जाय और छूटे हुए तथ्यो को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया जाय।

मैं एक निवेदन और भी करना चाहता हूँ कि मुझे जो भी सामग्री प्राप्त हो सकी है, उसी के आधार पर मैंने यह कार्य किया है। मेरा किसी के प्रति कोई दुराव नही है, यदि किसी भी सस्था व्यक्ति आदि का उल्लेख नहीं हुआ है, तो वह मेरे अज्ञान का ही परिणाम माना जाए और अन्यथा

न लिया जाए। मैंने पुस्तक की सामग्री को प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाने की भरसक चेष्टा की है, किंतु यदि कहीं कोई भूल हो तो उसको मानवीय दुर्बलता मानकर मुझे क्षमा किया जाए। जो भी सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं प्राप्त होंगी, उनके आधार पर दूसरे संस्करण में सुधार किया जा सकेगा। अतः पाठकों से निवेदन है कि अपने अमूल्य सुझाव देकर मेरा ज्ञानवर्द्धन करने का कष्ट करें।

इतिहास लिखना एक कठिन कार्य है और प्रथम बार लिखना और भी कठिन हो जाता है। यह पुस्तक भावी इतिहास की रूपरेखा का आधार बन सके तो मैं अपने श्रम को सार्थक मानूंगा। भविष्य में मणिपुर की भाषाओं और लिपि में संबंधित शोध कार्य की आवश्यकता का मैंने संकेत दिया है। यदि विद्वान इस क्षेत्र में कार्य करेंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी। इस प्रयास में सभी संस्थाओं, लेखकों तथा अन्य कई लोगों का मुझे सहयोग मिला है। वास्तव में जो कुछ अच्छा है वह उन का है और जो न्यूनताएं हैं वे मेरी हैं। यहां उन सबके नामों का उल्लेख करना संभव नहीं। किंतु कुछ का उल्लेख न करना भी कृतघ्नता होगी। श्री गोपीनाथ जी शर्मा, श्री हेमाचार्य जी शर्मा, श्री के. वाय. शर्मा, डॉ इबोहल काइजम, डॉ तोम्बा सिंह जी, डॉ. हीरा लाल, श्री चिंगोदिया चांद सिंह जी, श्री था मणिसिंह जी आदि का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने उदारता पूर्वक सामग्री उपलब्ध करवाई और यथा संभव सहयोग दिया। श्री सगोल सेम लनचेनबा मीतै एवं श्री सी एच निशान सिंह का आभार व्यक्त करना उनके द्वारा दी गई सहायता का अपमान करना होगा। दोनों ही मेरे अत्यंत निकट हैं और दोनों ने यथा संभव सहायता की है। प्रो. कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' डि लिट. के अमूल्य सुझावों से मुझे पुस्तक को सजाने संवारने में सहायता मिली है। उनको साधुवाद देकर औपचारिकता निभाने के साहस का मुझमें अभाव है।

अनुक्रमणिका

मणिपुर : संक्षिप्त परिचय

मणिपुर भारत के उत्तरी पूर्वी अंचल में सीमान्त स्थित छोटा सा राज्य है, जिसके उत्तर में नागालैंड, पश्चिम में असम, दक्षिण में मिजोरम और पूर्व में वर्मा है। इसका क्षेत्रफल 22, 356 वर्ग कि मी है और जनसंख्या 14, 11, 375 है। मणिपुर को प्रकृति ने दो भागों में विभाजित कर दिया है। पर्वत शृंखला के मध्य 1800 वर्ग कि मी की मणिपुर घाटी समतल है और शेष भाग पर्वतीय है। घाटी की समुद्रतल से ऊंचाई 800 से 1000 मीटर के बीच है, किन्तु पर्वतों में सर्वोच्च शिखर 2831 मीटर ऊंचा है। कर्क रेखा मणिपुर के बीच से गुजरती है, किन्तु ऊँचाई के कारण और वर्षा की अधिकता के कारण यहां ग्रीष्म या शीत का प्रकोप नहीं होता। मणिपुर का जलवायु प्रकृति ने वातानुकूलित कर दिया है। पर्वतों पर सदा बादल मंडराते रहते हैं। शरद ऋतु में पहाड़ों और घाटों में सुबह कोहरा छा जाता है। जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक एवं सुहाना है। औसत वार्षिक वर्षा 1034 मिली मीटर होती है। न्यूनतम तापमान 2 8° सेलसिएस तथा अधिकतम 33° सेलसिएस है।

पर्वतों में कम से कम 29 जन-जातियाँ रहती हैं जिनकी अपनी-अपनी भाषाएं हैं और वे एक दूसरे से मणिपुरी के माध्यम से सम्पर्क करते हैं। पर्वतीय जन को प्रकृति ने निडर, साहसी एवं वीर बना दिया है। अधिकतर जन-जातियों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है। घाटी में बसने वाले लोग "मैतै" हैं, जिनकी भाषा मणिपुरी है। ये सामान्यतः गौडीय वैष्णव धर्म को मानते हैं और साथ ही 'सनामही' नामक आदि धर्म को भी। ऐतिहासिक कारणों से "मैतै" जाति भी वीर एवं साहसी है। "मैतै" जाति की कला एवं संस्कृति प्राचीन होने के कारण बहुत ही समृद्ध है।

मणिपुर का प्राकृतिक सौंदर्य वास्तव में मणि के समान देदीप्यमान है। प्राकृतिक सौन्दर्य इसके नाम की सार्थकता प्रकट करता है। शस्य-श्यामल लहलहाते खेत, घने लम्बे वृक्ष और बांस के झुरमुट और गुल्मलताओं से आच्छादित पर्वत शृंखलाएं, जिनके वक्ष स्थल से वेगवती पर्वतीय सरिताएं एवं झरनों का प्रवाह, अलौकिक संगीत की सृष्टि करते हैं। पक्षियों का कलरव इस संगीत में अपूर्व रस घोलता है। तन्वंगी-तरुणी सी लेटी संकीर्ण उपत्यका में सरिता, झीलों और जलाशयों का जल रजत-धार सा चमकता है। पर्वत एवं मैदान में चारों ओर रंग-बिरंगे पुष्प खिले दिखाई देते हैं।

इस उपत्यका तरुणी का प्रकृति स्वयं अपने दक्ष करो से शृंगार करती है, वर्षा मे इसका हरित अंचल मादक पवन के झकोरो से लहराता है तो वसंत मे इसका सरसो के पुष्पों से सजा पीत वर्णी अंचल हवा से अठखेलियाँ करता है, तब उपत्यका तरुणी अभिसारिका या पीतवस्त्रधारिणी नई नवेली वधू लगती है।

घाटी और पर्वत सदा हरे-भरे रहते हैं। नम्बोल, इम्फाल, थौबाल, इरिल आदि नदियाँ इठलाती-बलखाती बहती रहती हैं। स्वच्छ लिपे-पुते घरो के आगन मे पुष्प-वाटिकाएं, आगन के पार घने बांसो का झुरमुट, झुरमुट से आता तोता-पखी प्रकाश—यह दृश्यावली नन्दन-वन से कम नहीं है। ग्रीष्म ऋतु का सूर्य मेघाच्छादित गगन मे गोधूली वेला के सूर्य सा ताप-विहीन रहता है। वर्षा के जल से धुली-भीगी स्वच्छ एव सुगन्धित पवन ग्रीष्म के ताप को सहलाती रहती है।

चाँदनी रातो मे मणिपुर का सौन्दर्य वैभव और बढ़ जाता है। पर्वतीय मार्ग म तारकोल की बलखाती सडक काली नागिन सी प्रतीत होती है। जलाशयो मे चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब तैरता है। जलाशयो मे छोटी-छोटी नावों पर नाविक मछली पकडते हैं, रात्रि की निस्तब्धता मे पतवारो की मधुर ताल म लोक गीत की स्वर लहरी गूज उठती है और पर्वतों से टकरा कर प्रतिध्वनित होती है, मानो गायक के स्वर का पर्वत दोहरा रहे हों। इन्ही चाँदनी रातो म प्रकृति के सौंदर्य वैभव की पृष्ठ भूमि में मणिपुरी मानस मयूर ढोलक मृदग की ताल पर थाप देने को मचल उठता है और आबाल-वृद्ध के पाँव थिरक उठते हैं। घाटी गाने लगती है, घाटी नाचने लगती है, उत्सव मनाती है और ससार का सबसे लम्बा त्योहार-पर्व एव नृत्य लाइ हराओबा आरम्भ हो जाता है। यह एक नृत्य-शृखला है, खम्बा थोइबी (द्वैत नृत्य), थाबल-चोङबा (चांदनी का सामूहिक नृत्य), मृदग (पुङ), करताल आदि नृत्य और नृत्य ही नही "इशै" (गीत) भी। सृष्टि कथा, प्रेम-कथाए गीतो के स्वरा म 'पना' (एक तारा) की ध्वनि के साथ गूज उठती हैं। 'मायबी' नृत्य देवी-देवताओ की प्रसन्नता के लिए प्रार्थना के साथ आरम्भ होता है। सिद्ध मायबी' श्वेत रग की वश-भूषा मे, तो नर्तक रग-बिरगी पोशाकें नृत्यों के साथ बदलत हैं। श्री राधा-कृष्ण के सयोग-वियोग के विविध लीलाओ के सस्कृत, मैथिली और ब्रज बोली के गीतों के साथ रास नृत्य, भेदोपभेदों के साथ, मंदिरों के प्रांगणों मे एव नदियों या झीलों के किनारे धार्मिक एव शास्त्रीय पद्धति से, शुद्ध मन और पवित्र आध्यात्मिक भावना से पूर्ण नृत्य, पर्व त्यौहारो पर आयोजित किय जाते हैं। नृत्य मध्य-रात्रि से उषा-काल तक विधि विधान पूर्वक चलते हैं, किन्तु

सध्या से मध्यरात्रि तक नट सकीर्तन व पूड चोलम नृत्य चलते हैं। नट सकीनन मे भारतीय ही नही मणिपुरी राग-रागनियो की कलात्मक प्रस्तुति रास-मडप मे की जाती है। तब पूङ (मृदग) पर गरुड के उडने, बादलों के गरजने, बिजली की कडकने, पशु-पक्षियो के बोलने की ध्वनियाँ मडप मे गूज उठती हैं। दो से सौ नर्तक मृदग पर जो करतब दिखाते हैं तो चर्म एव प्रज्ञा चक्षु तृप्त हो जाते हैं। 'रास' तो मनुष्य को आध्यात्मिक लोक मे ही पहुँचा देता है। पर्वतों मे बसने वाले भी कम नहीं। भाले, बर्छे कटार, धनुष-बाण, दाँव (विशेष हथियार) लेकर ढोल, नगारे की ताल पर स्त्री-पुरुष आदिम पोषाक म सजे श्रृ गी के स्वर के साथ हो-ही-हू की लम्बी तज आवाजो के साथ नाचते हैं। हाथो के स्थान पर पाँवो की गति प्रमुख होती है। मुद्राओ के बजाय तीखा-स्वर, तेज-सगीत और रग-बिरगे वस्त्र तथा पशुओ के सीगो, खाला तथा काष्ठ के रग-बिरगे मनकों का श्रृ गार ही दर्शकों को आकर्षित करता है। शिकार, कृषि, लकडी काटने के वृत्तों पर आधारित ये नृत्य रात भर चलते हैं।

"सात वार नौ त्यौहार" कहावत है मणिपुर की। आमोद-प्रमोद, खेल-कूद, नृत्य-उत्सव यहाँ के लोगों को विशेष प्रिय हैं, यहाँ का जीवन जो नाचता-गाता रहता है। यहाँ के निवासी उत्सव प्रिय हो तो आश्चर्य कैसा? प्रकृति इन्हे अपनी क्रोड मे पालती भी तो बडे ही लाड प्यार से है। त्यौहार-पर्व की लम्बी श्रृ खला, प्रत्येक त्यौहार से जुडे हैं—नृत्य, गीत, सगीत और खेल-कूद। होली, दीवाली दुर्गा पूजा आदि पौराणिक त्यौहार ही नही स्थानीय त्यौहारो की अपनी लम्बी परम्परा—शताब्दियो स नौकादौड, चैराओबा (नव वर्ष का उत्सव) आदि पर्व-त्यौहार भी मनाए जाते हैं। पर्वतारोहण, पूजा पाठ, पूर्वजो को भोजन देना ही नही रात भर बारोनी पर्वत पर मशालो की रोशनी मे शिव पूजन को जाना आदि विशिष्ट परम्पराएं भी इनसे जुडी हैं। प्रत्येक पर्व-त्यौहार के अत म मुक्ना (कुश्ती), खोङ काङ जै (हाकी), सगोल काङ जै (पोलो), युबी लाक्पी (नारियल छीनना) आदि न जान कितने खेल आयोजित किए जाते हैं। कोई सध्या ऐसी नही होती जब अपार दर्शकों की भीड मे खेल न होते हैं। परिणाम स्वरूप मणिपुर के खिलाडियो ने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। कौन नही जानता कि विश्वविख्यात लोक प्रिय खल पोलो की जन्मभूमि मणिपुर है। खेलो, नृत्यो, सगीत, हस्तकला-कौशल तथा हाथ से बुने वस्त्रो के कारण मणिपुर का नाम देश-विदेश मे जाना जाता है।

प्रकृति ने मणिपुर को वरदान देने मे पक्षपात किया है। शङाई जाति का दुर्लभ हिरन, ससार मे कही नहीं, मणिपुर म कैबुललाम जाओ नामक

तैरते द्वीप पर सुरक्षित है। लोकत्ताक झील और झील मे तैरते द्वीप मणिपुर के सौन्दर्य की श्रीवृद्धि करते हैं। झील का सौन्दर्य अपूर्व है। जल वनस्पति और बदलती ऋतुओ मे खिलते पुष्प झील का शृगार है। किनारे पर हरी मखमली दूब की चादर प्रकृति ने बिछा दी है। झील के बीच मे टेकरी, टेकरी पर बना सेंदरा विश्राम गृह और अपार जल राशि जो सुदूर क्षितिज से मिलते पर्वतो से घिरी है। शरद् ऋतु में साइबेरिया से उडकर आते हुए प्रशिक्षित एव अनुशासित सैनिको-से, नीले गगन मे, पक्ति बद्ध पक्षियों का कलरव दर्शक को मत्र-मुग्ध करता है।

प्रकृति ने मणिपुर के उन्नत भाल पर सिरोही पर्वत पर 2568 मीटर की ऊँचाई पर, सिरोलीली पुष्प बिन्दी के समान अकित कर दिया है। यह ससार का एक दुर्लभ पुष्प है। यह एक फूल ही क्या, फूलो की तो प्रकृति मानो प्रत्येक ऋतु मे प्रदर्शनी ही सजाती है।

'चैथरोल कुम्बाबा,' 'औगरी' 'नूतेङ लोन' से 'खम्ब-थोइबी सायोन' की 'मैतै' साहित्यिक परम्परा-गद्य-पद्य, ज्ञान-विज्ञान का अपार भडार सृष्टि काल से मौखिक, तीसरी शताब्दी के आस-पास 'मैतै मयेक' (मणिपुरी लिपि) मे अगर पत्रो पर लिखा गया, गरीब निवाज मणिपुरेश्वर द्वारा ली गई अग्नि परीक्षा (सन् 1732) मे सफल होकर आज भी जीवित है। इतिहास के क्रूर एव कठोर हाथ इस साहित्य एव लिपि का गला नही घोट सके। हाँ, इसकी सहज प्रवहमान धारा मे गतिरोध अवश्य उत्पन्न हुआ, जो लगभग दो शताब्दी तक बना रहा। क्रूर काल ने मैतै मयेक को छीन लिया, बगला असमी लिपि का प्रयोग आरभ हो गया। राजा के शाप से शापित मणिपुरी भाषा-साहित्य सृष्टि अवरुद्ध हो गई। तब चल पडी सस्कृत ग्रथो की अनुवाद परम्परा। मौलिक चिन्तन-मौलिक लेखन शाप ग्रस्त होकर कुठित हो गया। शताब्दियों से चली आ रही साहित्य धारा अवरुद्ध हुई जो बीसवी शताब्दी के तृतीय दशक मे कृत्रिम अवरोध को हटाकर पुन सहज गति से प्रवाहित हुई।

दुर्गम पर्वतो से घिरा यह लघुकाय भू-भाग कला-सस्कृति की साधना मे लीन रहा। आर्य एव मगोलियन सस्कृतियो का यह सधिस्थल रहा, जहाँ इन सस्कृतियो का सश्लेषण हुआ और मणिपुर ने अपूर्व सश्लिष्ट सस्कृति को जन्म दिया। किसी भी सस्कृति से कुछ ऋण लिया तो उसको मय सूद के चुकाया। बगाल से गौडीय वैष्णव भक्ति ली तो बगाल मे जब वह शाक्त प्रभाव से लुप्त हो गई तो मणिपुर के महाराजा भाग्यचद्र ने (1798) उसको अपने ही जन्म स्थान पर पुनर्जीवित किया। ब्रज सस्कृति से रास लिया किन्तु उसका सस्कार करके मणिपुरी रास दिया जो विश्वविख्यात है।

पर्वतो से घिरे इस राज्य को प्रकृति ने पृथक कर दिया किन्तु मानव ने भी इसकी उपेक्षा की। रेल मार्ग यहाँ आज भी नही पहुँचा। यहाँ के निवासी नित्य प्रति कलकत्ता व दिल्ली से आने वाले वायुयान को देखते हैं, पर रेल साक्षात् देखना आज भी स्वप्न है। परिवहन एव यातायात की समस्याओ से आज भी मणिपुर जूझ रहा है। देश से केवल इम्फाल-दीमापुर एव इम्फाल सिलचर मार्गों से जुडा है। दोनो ही मार्ग दुरूह हैं. दुर्गम हैं। दिन भर की थका देने वाली बस यात्रा है। बिना मार्ग के औद्योगिकरण की बात तो स्वप्न है।

लम्बी उपेक्षा ने, और कुछ धार्मिक सस्थाओं के प्रचार ने इस शांत और हरे-भरे प्रदेश मे विद्रोह की आग भडका दी। साठ के दशक से 1981 तक इस आमोद-प्रमोद, हर्षोन्माद मे लीन रहकर कला-सस्कृति, साहित्य की साधना करने वाले प्रात मे विद्रोह की चिंगारी भडकी जिसने देश के कई होनहार युवको को छीन लिया। मेधावी एव प्रतिभाशाली नवयुवक इस प्रदेश में फैले भ्रष्टाचार, शिक्षा-धर्म की आड मे बिछाए षडयत्र और केन्द्र सरकार की उपेक्षा की बलिवेदी पर बलिदान हो गए। यह आग कभी बुझती है, तो कभी भडकती है। हिंसा-प्रतिहिंसा से यह ज्वाला शान्त नही हो सकती। शताब्दियो से जो घाव इतिहास ने मणिपुर के सीने पर किए हैं, उन घावो का सही उपचार ही इस ज्वाला को शात कर सकता है। यदि यह आग शात हो जाए और भ्रष्टाचार के दानव का अत हो जाए तो मणिपुर की अपार प्राकृतिक सपदा और प्रतिभावान जन इस प्रदेश को देश ही नही विश्व के मानचित्र मे एक विशिष्ट सम्माननीय स्थान दिला सकते हैं।

□

मणिपुर : हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा

मणिपुर भारत के सुदूर उत्तरी प्रान्त पर स्थित पर्वतीय राज्य है, जिसको उत्तर-पूर्वी हिमालय पर्वत शृंखलाओं ने भारत के अन्य भागों से पृथक कर दिया है। प्रकृति की क्रोड में यह राज्य अपनी अलग भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को लिये, देश के एक कोने में उत्तरोत्तर विकास करता रहा। देश के अन्य भागों से भौगोलिक परिस्थितियों के कारण पृथक रहने पर भी यह भारतीय संस्कृति और अपनी प्राचीन उन्नत सभ्यता एवं संस्कृति के संश्लेषण में शताब्दियों से व्यस्त रहा तथा इसने एक विशिष्ट संश्लिष्ट संस्कृति को जन्म दिया। आर्थिक दृष्टि से मणिपुर पिछड़ा राज्य कहा जा सकता है, किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से नहीं। मणिपुर के विशिष्ट खेल, नृत्य एवं हाथ करघे तथा हस्तशिल्प के उत्पादन विश्वविख्यात हैं।

हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का वर्णन करने से पूर्व महाभारत कालीन मणिपुर की चर्चा अपेक्षित है। संस्कृत हिन्दी प्रदेशों की प्राचीन भाषा है और उससे मणिपुर तथा मणिपुरी भाषा का घनिष्ठ संबंध रहा है। यद्यपि मणिपुरी भाषा को विद्वान चीनी तिब्बती भाषा परिवार के उप-परिवार तिब्बती-वर्मी की एक स्वतंत्र भाषा मानते हैं, तथापि संस्कृत भाषा और परवर्ती भाषाओं से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इसके ऐतिहासिक कारण हैं। इन ऐतिहासिक कारणों के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का आकलन करना अभीष्ट है। भाषा परिवार की भिन्नता स्वीकारने के उपरान्त भी मणिपुरी भाषा ऐतिहासिक कारणों से सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीयता एवं भारतीय चिन्तनधारा से निकट सम्पर्क बनाए रही है। कुछ विद्वानों ने मणिपुरी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से भी मानी है। यहां इस विवाद में पड़ना अभीष्ट नहीं। भाषा वैज्ञानिक मणिपुरी भाषा परिवार के सम्बन्ध में शोध करके इसका निर्णय करें। अग्राङ्कित विवेचन से इस तथ्य की पुष्टि होगी।

प्राचीनकाल के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले मणिपुरी "पुया" (पुराण) तथा अन्य कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो प्राचीन मणिपुरी भाषा तथा लिपि में लिखे गए हैं। मणिपुर का यत्र तत्र भारतीय वाङ्मय में भी उल्लेख मिलता है। इन्हीं कुछ सूत्रों के सहारे जहां मणिपुर के प्राचीनकाल

के इतिहास, भाषा एव संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है, वहीं कुछ प्रश्न भी उठ खडे होते हैं और उन प्रश्नो का उत्तर भावी शोध पर ही निर्भर करेगा।

महाभारतकाल में अज्ञातवास मे जब पाडव मणिपुर आए थे तो यहाँ गधर्व नरेश चित्रवाहन राज्य करते थे। चित्रवाहन की पुत्री चित्रागदा के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर अर्जुन ने उससे विवाह की इच्छा प्रकट की। चित्रवाहन ने अर्जुन से कहा कि चित्रागदा उसकी एक मात्र सतान है और इसकी सतान ही उसकी सतान मानी जाकर उत्तराधिकारी होगी। यदि तुम्हे यह शर्त स्वीकार है तो तुम इससे विवाह कर सकते हो। अर्जुन ने राजा की शर्त मानकर विवाह किया। यह प्रसग महाभारत के आदि पर्व (सर्ग 207 में 14 से 23 श्लोक) में वर्णित है। श्रीमद्भागवत के 22 वें अध्याय मे निम्न श्लोक मे चित्रागदा से बभ्रुवाहन के उत्पन्न होने का उल्लेख है :—

इरावन्तमुलूप्या वै सुतायां बभ्रुवाहनम्।
मणिपूर पतेः सोऽपि तत्पुनः पुत्रिकासुत.॥ 9/22/32

अर्थात् उलूपी के गर्भ से इरावान और मणिपुर नरेश की पुत्री से बभ्रुवाहन का जन्म हुआ जो मणिपुर नरेश बना क्योकि यह बात पहले से ही तय थी।

महाभारत के आश्वमेधिक पर्व में अध्याय 78 से 82 में अश्वमेध के घोडे का मणिपुर पहुँचना, अर्जुन और बभ्रुवाहन का युद्ध, अर्जुन का मर जाना और बाद मे उलूपी के द्वारा नागो से संजीवनी मणि लाकर उसको जीवित करने आदि घटनाओ का उल्लेख है। महाभारत मे वर्णित मणिपुर को कुछ लोगो ने वर्तमान मणिपुर से भिन्न सिद्ध करने का प्रयास किया है। मणिपुर के पुरातत्ववेत्ता एव इतिहासकार डब्लु युमजाओ ने यद्यपि अकाट्य तर्क देकर वर्तमान मणिपुर को ही महाभारतकालीन मणिपुर सिद्ध किया है।[1] डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० एस के. चटर्जी ने मणिपुरी भाषा को कूकी-चिन वर्ग मे रखा और केवल मणिपुरी को ही नही नागा-मिजो भाषाओ को भी।[2] जो भी इन विद्वानो ने कहा उसको वेद वाक्य मान लिया गया है तथा इस क्षेत्र की भाषाओ का अध्ययन करने का प्रयत्न नहीं किया गया। डब्लु युमजाओ सिंह ने मणिपुरी शब्दो की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्दो से बताते हुए कुछ उदाहरण दिए हैं,

संस्कृत		मणिपुर	अर्थ
जा	—	चा	पुत्र या पुत्री।
इक्षु	—	चू	गन्ना
दण्ड (डडा)	—	ता	भाला

मणिपुर हिन्दी की ...

न्याय	—	निडाइ	तर्क
आदित्य	—	अदया	आकाश
बुद्धि	—	पोदिय	प्रतिभा
गौ	—	कौ	पशु
कुल	—	खुल	गाँव
प्राण	—	पान	जीवित
शृंग	—	चिङ	पर्वत
मस्तक	—	मतोक/मकोक	सिर
पालक	—	फालो	रक्षक

इन शब्दों की व्युत्पत्ति दिखाने से पूर्व विद्वान लेखक ने मणिपुरी में ध्वनि परिवर्तन के सामान्य नियमों का उल्लेख किया है। उल्लेखनीय है कि प्राचीन मणिपुरी में केवल 18 वर्ण या ध्वनियाँ ही थीं, उनके संदर्भ में युमजाओ के ध्वनि परिवर्तन के उदाहरण उचित लगते हैं। इन्‌तु युमजाओ सिंह के बाद अतोम बापू शर्मा दूसरे विद्वान हुए जिन्होंने ग्रियर्सन व टी एस हडसन की मान्यताओं को चुनौती दी और मणिपुर भाषा को तिब्बती बर्मी की शाखा मानने से इंकार किया। परन्तु दुर्भाग्य से ये भारतीय हैं और भारतीय ही नहीं स्थानीय विद्वान थे। घर का जोगी जोगड़ा आन गांव का सिद्ध। सो सिद्ध अंग्रेज ही रहे और बाद में डा० चटर्जी भी उस श्रेणी में सम्मिलित हो गए। इन भाषाओं पर भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से शोध की आवश्यकता है। मेरा मंतव्य किसी का विरोध करना या किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है। मेरा विनम्र निवेदन है कि इन भाषाओं के सम्बन्ध में शोध-कार्य किया जाए तथा पूर्वाग्रह त्यागकर सत्यान्वेषण किया जाए। दोनों में से जो भी मत उचित हो, उसको मान लिया जाए।

यदि मणिपुरी भाषा को तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार की भाषा मान भी लिया जाए तो भी यह तो स्वीकार करना ही होगा कि अनेक शताब्दियों से मणिपुरी भाषा पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव रहा है। संस्कृत ग्रंथों का मणिपुरी भाषा में अनुवाद हुआ है और उसकी लम्बी परम्परा है, जिसका अन्यत्र उल्लेख किया जाएगा। यहाँ हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का वर्णन अभीष्ट है।

राजा कयाम्बा या कियाम्बा का शासन काल पन्द्रहवीं शताब्दी माना जाता है।[3] इनके शासनकाल में भारत के विभिन्न भागों से ब्राह्मण मणिपुर में आए। इस ब्राह्मण प्रव्रजन की बात डाल्टन और श्री एस कोवा ने भी स्वीकार की है।[4] इन ब्राह्मणों ने यहाँ आने के बाद यहाँ की स्त्रियों से विवाह किए और यहीं के स्थायी निवासी बन गए। इस तथ्य का उल्लेख

"चैथरोल कुम्बाबा" नामक हस्तलिखित इतिहास ग्रंथ में भी हुआ है और मणिपुर इतिहास के विशेषज्ञ जे. राय भी इस बात से सहमत हैं[5]। श्री जे. राय ने लिखा है कि ये ब्राह्मण मुसलमान शासकों से अपने धर्म की रक्षार्थ भागकर यहाँ तक आए थे। एल. इबुङोहल सिंह ने तो अपने इतिहास में परिशिष्ट तीन में ब्राह्मण आव्रजकों के आने का स्थान, समय और उद्देश्य भी दिया है और साथ में यहाँ बसने के बाद उन्हें जिस 'सेगाइ' (वंश) का नाम दिया गया उसका भी उल्लेख किया है।[6] सूची बहुत ही लम्बी है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि ये आव्रजक गुजरात, ब्रज, वृंदावन, कन्नौज, मिथिला आदि विभिन्न स्थानों से आए थे। 15 वीं शताब्दी में हिन्दी नाम की भाषा का अस्तित्व नहीं था किन्तु हिन्दी पूर्व की विभाषाएं ब्रज, अवधि, मैथिली आदि का अस्तित्व निश्चित रूप से था। अतः हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का प्रारंभ पन्द्रहवीं शताब्दी से मानना होगा, क्योंकि ये ब्राह्मण अपने साथ ये भाषाएं लेकर आए होंगे, यह निश्चित है।

दूसरा आव्रजन मुसलमानों का सन 1606 ई में हुआ। खम्बा (1597-1652) के राज्यकाल में उसके भाई ने कछार के राजा के साथ मिलकर मणिपुर पर आक्रमण किया था। कछार की सेना में मुसलमान और निम्न जाति के हिन्दू थे। वे बंदी बना लिए गए तथा उन्हें यहीं बसने की आज्ञा मिल गई।[7] ये सैनिक पश्चिमी प्रदेशों के थे, अतः ये भी अपनी भाषाएं साथ लाए होंगे। ब्राह्मण आव्रजन तो 1467 ई. से 1834 ई. तक होता ही रहा है। इस प्रकार हिन्दी की पूर्व भाषाओं की यात्रा पन्द्रहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक निरन्तर जारी रही।

ब्राह्मण यहाँ उससे पूर्व भी आए हों तो ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव में कहना कठिन है। फिर भी एक ऐतिहासिक सूत्र है जिससे 1467 में ब्राह्मणों की उपस्थिति प्रमाणित होती है। राजा क्याम्बा को पोङ (बर्मा) के राजा ने विष्णु विग्रह दिया था। 1470 ई. में राजा क्याम्बा को भगवान विष्णु ने स्वप्न में दर्शन दिए और आज्ञा दी कि खीर और तुलसी दल से उनकी पूजा ब्राह्मण द्वारा करवाई जाए। राजा ने दूसरे दिन ब्राह्मण की खोज करवाई। खोज कराने से यह ज्ञात होता है कि ब्राह्मण थे किन्तु कम थे। बहुत कठिनाई से एक ब्राह्मण मिला जिसका नाम भानुनारायण था।[8] राजकुमार झलजीत सिंह ने इस संबंध में लिखा है कि ब्राह्मणों के क्याम्बा के पूर्व मणिपुर में ब्राह्मण प्रव्रजन की बात मानने के हमारे पास कारण हैं। किन्तु इस राजा के समय के बाद ब्राह्मण आव्रजन का प्रामाणिक विवरण उपलब्ध है। आगे उन्होंने यह भी कहा है कि क्याम्बा से बहुत पहले ही वैष्णव साहित्य मणिपुर पहुँच गया था। 700 ई. के आस-पास

मणिपुर के लोग रामायण और महाभारत पढते थे। नल दमयंती और अन्य कथाएं लोकप्रिय थी। किन्तु अधिक प्रचलन कयाम्बा के समय हुआ, जब लोग विष्णु पुराण, गीता और श्रीमद्भागवत पढ़ने लगे। 1598 ई के बाद तो रामायण, महाभारत, लक्ष्मण-विजय, बलदेव तीर्थ यात्रा का पाठ होता था और श्रोताओं के सम्मुख व्याख्या भी की जाती थी।

श्री सिंह के कथन के अनुसार 700 ई. के आस-पास यदि ब्राह्मण नहीं रहे होंगे तो रामायण महाभारत का अध्ययन कैसे सभव होगा? यहां यह भी ध्यान रखना है कि केवल ब्राह्मण ही उन्नीसवीं शताब्दी तक अध्ययन-अध्यापन का कार्य करते रहे थे। निश्चय ही सातवीं शताब्दी म ब्राह्मण पश्चिम से अपनी भाषा लेकर ही आए होंगे। इस तथ्य को स्वीकार करन पर हिन्दी की मणिपुर में यात्रा राजा कयाम्बा के समय से सात शताब्दी पूर्व स माननी होगी। इन ऐतिहासिक तथ्यों से हिन्दी या उसकी पूर्व भाषाओं की यात्रा 7 वीं नहीं तो 15 वीं शताब्दी से तो निश्चित रूप से ही होगी। पश्चिमी प्रदेशों से आने वाले लोग अपनी सस्कृति लाए और साथ ही भाषाएं भी। सांस्कृतिक प्रभाव के प्रमाण तो विष्णु पूजा से प्रमाणित होते हैं, किन्तु भाषा के लिए प्रमाण विरल हैं, अनुमान का आश्रय लेना विवशता है। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य है कि तुलसी व खीर (क्षीर) शब्दों का विष्णु पूजा के सदर्भ म उल्लेख हुआ है और यही वह सूत्र है, जो भाषाओं के आगमन का प्रमाण है।

राजकुमार झलजीत सिंह ने जैसा कहा है कि रामायण आदि ग्रन्थों का पाठ किया जाता था और व्याख्या भी। यह पाठ व व्याख्या ब्राह्मणों का कार्य था, जो पश्चिम से आए थे। मणिपुर भाषा में व्याख्या करने पर भी इनकी भाषाओं का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रभाव इनकी व्याख्या पर अवश्य रहा होगा। ब्राह्मण पौरोहित्य कर्म करते समय पूजा-पाठ में इन भाषाओं या भाषाओं के शब्दों का तो अवश्य प्रयोग करते रहे होंगे। डॉ॰ देवराज का भी यही अनुमान है। उन्होंने इस सबध म लिखा है—"वे (ब्राह्मण) धार्मिक कृत्य में, बीच-बीच में हिन्दी का प्रयोग करते थे। मदिर में भोग चढाने, धार्मिक भोज और कीर्तन के अवसर पर पुरोहित प्राय हिन्दी बोलते थे।" यदि वे कथावाचक हिन्दी बोलते थे तो हिन्दी को समझने वाले लोग भी अवश्य होंगे ही।

अठारहवीं शताब्दी से तो हिन्दी के प्रचलन की कहानी सिक्कों की जबानी सुनी जा सकती है। महाराज गरीबनिवाज के शासन काल 1709 से 1891 तक के मणिपुर के जो सिक्के उपलब्ध हो सके हैं उन पर देवनागरी में सस्कृत में इबारत है।[10] इन सिक्कों की तालिका देवनागरी के महत्व वाले अध्याय में दी गई है। यहां इतना कहना ही पर्याप्त है कि

सस्कृत की इबारत यह सिद्ध करती है कि स्थानीय लोग पश्चिमी भाषाए समझते थे। इस तथ्य को पुष्ट करने के लिए तत्कालीन राजाओ की प्रार्थनाए जो उपलब्ध हैं, यहाँ उद्धृत करना समीचीन होगा। यद्यपि इन प्रार्थनाओ के पदो पर कही-कही बगला प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है, किन्तु हिन्दी से इनकी निकटता स्वतः सिद्ध हो जाएगी।

इस प्रकार की प्रार्थनाए और भी रही होगी किन्तु उपलब्ध नही हो सकी हैं। सबसे पहली प्रार्थना महाराजा भाग्य चद्र उर्फ जयसिंह (1759-98 ई) की है

प्राणनाथ गोविन्द गुनेर सागर
अधम पतित जानि ना छाड किंकर
कोटि जन्म निज भृत्य ना कर विछेद
चरन विरह ज्वाने मरन विवाद।[11]

महाराज भाग्यचन्द्र की पुत्री बिम्बावती मजुरी जो मणिपुर की मीरा या दक्षिण की अदाल कही जाती हैं, ने भी अनेक पदो की रचना की। वे आजन्म कुमारी रही और श्री राधा-कृष्ण भक्ति म डूबी रही। उनके पद भी हिन्दी के निकट हैं

निशि-निशि भाग्यवती अनुरागमय,
कादि- कादि श्री गोविन्द दर्शनाकाखाहय (आकाक्षा)
हा गोविन्द प्राण हरि मोर मन
ना देखिले नहि रवे रवे कि पराण।

कवयित्री की दर्शनाकाक्षा के भाव हिन्दी के कितने निकट हैं, यह कहने की आवश्यकता नही हैं। दूसरा पद भी उन्ही का, देखिए :

श्री चरण भरसा करिया
यदि कृपा न करिले
नवदिपे पद तले
मरि वेह गरल भूखिया।

भाग्यचन्द्र के पुत्र लावण्यचद्र (1798-1801 ई) की प्रार्थना की भाषा भी देखिए :

जय जय वृन्दावन चन्द्र
ब्रजेंद्र नन्दन कृष्ण
भक्त चकर (चकोर) रस तृष्ण
लोकनाथ गोपी प्रेमानद।

महाराज मारजीत (1813-19 ई) की प्रार्थना से भाषा का नमूना देखिए :

अलका आवृत मुख देखिया मनेर सुख
कृपा करि मोरे देखा दिल

महाराजा गभीरसिंह (1825-34 ई.) के द्वारा रचित पदों से एक उदाहरण :

निभृत निकुंज बने नित्य विलासिनी राधे
करुणा करु मुझ नव हेम गौरी राधे।

महाराजा नरसिंह (1844-50 ई) द्वारा रचित पद से एक उदाहरण प्रस्तुत है ·

दानहीन नरसिंह दिवा निशी युगल सेवा
एइ मने करि अभिलाष।

महाराजा चन्द्रकीर्ति सिंह (1850-86 ई.) की रचना से भी एक नमूना प्रस्तुत है।

श्री राधा वल्लभ नाथ ब्रजांगनागन साथ
मोर वाञ्छा करक पुरन
दीनहीन चन्द्रकीर्ति नाहि मोरे
आर गति भरसा करये श्री चरणे।

महाराजा चूड़ाचाँद सिंह (1891-1941 ई.) की रचना का उदाहरण देखिए—

जय राधे जय कृष्ण करि निवेदने
हा गोविन्द प्राणनाथ श्री राधिका जीवन

अंत में मणिपुर के अंतिम महाराजा बोधचन्द्र सिंह (1941-55 ई) की रचना का नमूना देखिए—

एइ आसा मने हइल
जन्मे-जन्मे निज दासी
प्रेम सेवा दिवे दान।

राजाओं के नाम के बाद कोष्ठक में उनके शासनकाल का समय दिया गया है। अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी के मध्य तक के कतिपय उदाहरण दिए गए हैं। विस्तार भय से कई राजाओं की रचनाओं के उदाहरण यहाँ छोड़ दिए गए हैं, किन्तु जो उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं उनसे यह तथ्य अवश्य ही स्पष्ट हो जाता है कि मणिपुर में हिन्दी अठारहवीं शताब्दी से समझी जाती थी।

ये साक्ष्य काव्य के हैं। साथ ही धर्म के साथ जुड़ी हुई तीर्थयात्राएं भी उपर्युक्त तथ्य पुष्टि के लिए साक्ष्य हैं। महाराज गरीबनिवाज की पुत्री मणिपुर की प्रथम महिला थी, जिसने वृंदावन की यात्रा की थी।[12] गरीब निवाज का राज्यकाल 1709 ई से 1748 ई है। यदि अठारहवीं शताब्दी

12 मणिपुर में राज भाषा की प्रगति

के पूर्वार्द्ध मे एक महिला तीर्थ यात्रा पर गई तो यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि पुरुष निश्चित रूप से उससे पूर्व तीर्थ यात्रा पर जाते रहे होगे। इतिहासकार राजा-महाराजाओ से सबधित घटनाओ का ही उल्लेख करते हैं, आम आदमी का नही। इसलिए आम आदमी की स्थिति का ऐतिहासिक सूत्रों से अनुमान ही लगाया जा सकता है। यहा भी अनुमान के सहारे निस्सकोच यह कहा जा सकता है कि तीर्थ स्थानो की यात्रा के लिए सामान्यजन भी जाते होंगे। यदि अपनी इच्छा से नहीं तो इन राज पुरुषो एव महिलाओं की सेवा-चाकरी और सुरक्षा के लिए तो उन्हे साथ लिया ही जाता होगा। यह बात भाग्यचद्र महाराज की गगा यात्रा से प्रमाणित भी है, जिसका आगे उल्लेख किया जा रहा है। बिना भाषा के मणिपुर से वृ दावन की यात्रा कैसे सम्भव हो सकती थी। निश्चय ही मणिपुरी लोगो को पश्चिमी प्रदेशों की भाषाओं का ज्ञान रहा होगा।

एक और ऐतिहासिक तीर्थ यात्रा का विवरण उपलब्ध है। चिङ. थाङ खोम्बा महाराज गगा चत्पा'[13] (चिङ. थाङ. खोम्बा या भाग्यचन्द्र महाराज की गगा यात्रा) नामक ग्रंथ मे भाग्यचन्द्र यात्रा पर रानियो, चार पुत्रो, तीन पुत्रियो और बडी सख्या मे सेवकों के साथ गए— वर्णन है। वास्तव म उस युग म एकाकी जाना सभव नही था और फिर राजा महाराजा तो पूरी शान के साथ चलते ही थे। यह यात्रा 20 जनवरी 1798 ई को आरभ हुई थी। पश्चिम बगाल होते हुए यह यात्रा वास्तव मे वृ दावन के राधाकु ड मे जाकर समाप्त होती है, जहाँ महाराज कुमारी बिम्बावती मजुरी, सिजा लैइरोबी (देवप्रिया) ने अपने प्राण त्यागे थे। स्पष्ट है कि इस यात्रा मे जाने वाले अवश्य ही पश्चिमी भारतीय प्रदेशो की भाषाओ से परिचित रहे होंगे। इन दो यात्राओं के अतिरिक्त भी समय-समय पर यात्राए होती रही होगी, यह निश्चित है। आज भी प्रतिवर्ष सैकडों लोग तीर्थ यात्रा पर जाते हैं। तीर्थ स्थानो पर बने मणिपुर के राजा-महाराजाओ तथा अन्य लोगो के द्वारा बनाए गए भवन इन यात्राओ के साक्ष्य हैं। वृ दावन एव राधा-कुण्ड मे आज भी मणिपुरी सन्यासी मिलते हैं। यहा से तीर्थ यात्रियो के दल प्रतिवर्ष जाते हैं, यह क्रम आज भी जारी है। श्री एम. समरेन्द्र के नाटक 'तीर्थयात्रा' (मणिपुर मे) के नायक की अभिलाषा तीर्थ-यात्रा की है, वास्तव मे नाटक का नायक मणिपुर की जनता की भावनाओ का प्रतिनिधित्व करता है और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की यही अभिलाषा होती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि तीर्थ स्थलों मे हिन्दी का प्रयोग होता है।

1890 में महाराज सूरचद्र सिंह की वृ दावन यात्रा का उल्लेख भी ऐतिहासिक घटना है।[14] पावना ब्रजवासी जो बाद मे 1891 ई. की मणि-

पुर, क्रांति के अमर शहीद हैं, का नाम ब्रजवासी इसीलिए रखा गया था कि उनका बाल्यकाल ब्रज मे व्यतीत हुआ था। वे भरतपुर एव जयपुर रियासतो मे भी सैनिक शिक्षा प्राप्त कर चुके थे।[15] इसी क्रांति के अमर शहीद टिकेन्द्रजीत सिंह एव जनरल थाडल को भी हिन्दी का ज्ञान था।[16] डॉ. देवराज ने तो यह भी लिखा है—आधुनिक युग मे भी मणिपुर के महान स्वतत्रता सेनानी टिकेन्द्रजीत ने सन् 1890 म अंग्रेजी अदालत मे अपना पक्ष हिन्दी म प्रस्तुत करके गौरवशाली कार्य किया।'[17] 1891 ई. तक हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत करने के लिए यहा ऐतिहासिक साक्ष्यो का उपयोग किया गया है। निश्चय ही इतिहास म भाषा के सम्बन्ध म विस्तार से कुछ नही लिखा जाता है, अत जहा भी सूत्र प्राप्त हो सके हैं, उन्ही के आधार पर मणिपुर मे हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का प्रस्तुत किया गया है।

बीसवी शताब्दी म हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा का वर्णन करने के लिए सामग्री का अभाव तो है, किन्तु पूववर्ती काल की तुलना म स्थिति काफी सुखद है। मैं यहाँ सभी सम्बद्ध लोगो को सावधान करने के लिए एक निवेदन अवश्य करना चाहूगा—राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार का इतिहास (जिसे आप चाहें तो आधुनिक हिन्दी भी कह सकते है) नियोजित रूप म 1925 ई म आरम्भ होता है, किन्तु इन 60-62 वर्षों के इतिहास की सामग्री भी दुर्लभ हो चुकी है। यथास्थान मैं इस पुस्तक मे अनुपलब्ध सामग्री की ओर सकेत करूगा। इसलिए मेरा निवेदन है कि मणिपुर मे हिन्दी के इतिहास की सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए अब तो कम से कम पूर्ण सावधानी बरती जाए और वार्षिक-प्रतिवेदनो के रूप म उसको सभी सस्थाए प्रकाशित करें तथा प्रति वर्ष एक सामूहिक प्रतिवेदन भी तैयार किया जाए जिससे भविष्य मे प्रामाणिक इतिहास लिखे जा सकें। आशा है सम्बद्ध जन इस ओर ध्यान देंगे।

1891 मे मणिपुर म सशस्त्र क्रांति हुई थी। अंग्रेजों ने प्रमुख क्रांतिकारी वीरों को फाँसी दे दी। उसके बाद उन्होंने मणिपुर के सिंहासन पर बालक चूडा चाँद सिंह को बैठाया और वास्तविक शासन पॉलिटिकल एजेंट ने अपने हाथ म ले लिया था। क्रांति के समय भी ब्रिटिश सैनिक टुकडियाँ यहाँ थी और क्रांति के बाद तो अंग्रेजो ने उनकी सख्या बढा दी। सेना की हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे सदा महत्वपूर्ण भूमिका रही है। श्रीमती ग्रिमवुड ने अपनी पुस्तक 'माई थ्री ईयर्स इन मणिपुर'' मे इस ओर सकेत किया है कि जहाँ सेना जाती है, उसके साथ बनिये इत्यादि भी पहुँच जाते हैं। इस महिला के कथन स स्पष्ट है कि सेना जहाँ जाती है, वहाँ अन्य लोग भी होते हैं। बनिये फौजो के साथ राजस्थानी रहे हैं, अत. जहाँ भी सेना,

ती है, हिन्दी भाषी लोग साथ होते हैं। और हिन्दी का प्रचार-प्रसार निकों के द्वारा ही होता है।

महाराज चूड़ाचाँद सिंह की शिक्षा अजमेर के मेयो कॉलेज में हुई हाँ हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप मे पढाई जाती थी। महाराज चूड़ाचाँद सिंह को हिन्दी का ज्ञान था। उनके पुत्र बोधचन्द्र को भी, यह तथ्य ऊपर प्रार्थनाओ के उदाहरणो से भी स्पष्ट है। दूसरी ओर महाराजा चंद्रकीर्ति के समय से ब्राह्मणों को वैष्णव धर्म ग्रथा के सग्रह के लिए भेजने का उल्लेख इतिहास म है।[18] बेनीमाधव शर्मा को 1850-56 के दौरान काशी भेजा गया था। साथ ही यह भी उल्लेख है कि बाहर से भी विद्वान आते थ और धार्मिक प्रवचन करते थे। डॉ एम. कीर्तिसिंह ने लिखा है—गौडीय वैष्णव समुदाय के राज्य धर्म बनने के पश्चात् बगाली, व्रजबोली तथा सस्कृत शब्द प्राचीन मणिपुरी म मिश्रित हो गए।[19] इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि मणिपुर के विद्वान निरन्तर हिन्दी प्रदेशा की यात्रा पर जाते थे और शिक्षा प्राप्त करने भी। यह क्रम टूटा नही। 1902 से राज्य सरकार से छात्रवृत्ति प्राप्त करके अनेक विद्यार्थी बनारस, गोहाटी, कलकत्ता आदि स्थानो पर गए। इसकी एक लम्बी शृ खला है—पडित हि द्विजमणि देवशर्मा, शिवदत्त शर्मा, बकविहारी, ललित माधव शर्मा, कु ज विहारी सिंह, राधा-मोहन शर्मा, आदि-आदि। इन सब म अतोम बापू शर्मा का नाम शीर्ष स्थान पर रखा जाता है और उन्हे आधुनिक ऋषि का नाम भी दिया जाता है। वे वृ दावन, काशी आदि तीर्थ स्थानो पर गए थे और उन्होने हिन्दी म 'मणिपुरिया सनातन धर्म' ग्र थ की रचना भी की थी। इन सभी विद्वानो ने हिन्दी सस्कृत का अध्ययन किया। गाँधी जी से सपर्क किया और हिन्दी प्रचार को स्वतत्रता सग्राम का अभिन्न अग मानकर मणिपुर म स्वतन्त्रता सग्राम के कार्य के साथ हिन्दी प्रचार का कार्य भी आरम्भ किया। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक पच्चीस वर्षों म इन विद्वानो द्वारा हिन्दी प्रदेशा म जाकर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने के प्रमाण है। इनम से कई जीवित भी है। उनके हिन्दी प्रेम का प्रमाण उनके कोश, पुस्तकें, समाचार पत्र एव पत्रि-काए हैं। इस शताब्दी के प्रारभिक वर्षों म हिन्दी प्रचार-प्रसार की एक ठोस भूमिका तैयार हुई। गाँधी जी और विनोबा जी के राष्ट्रभाषा सबधी विचारो का चमत्कारी प्रभाव इस काल मे अन्य प्रान्तों म गए विद्यार्थियो पर पडा। इस क्रम मे अनेक लोग है, जिनके नाम भी ज्ञात नही हो सके और कुछ के नाम मिल सके है किन्तु अन्य जानकारी नही। इतने कम समय म ही इन हिन्दी के सैनिको का परिचय लुप्त हो गया है। जो लोग जीवित हैं, उनके कार्यों का विवरण लिपिबद्ध किए जाने की आज भी आवश्यकता है।

हिन्दी प्रचार कार्य बीसवीं शती के द्वितीय दशक की समाप्ति के तुरन्त बाद शुरू हो गया था। प्रारम्भिक हिन्दी प्रचारकों के अथक प्रयत्नों के बाद *1927 ई* मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का परीक्षा केन्द्र वाचीपुर इम्फाल में खोला गया। अंग्रेज पॉलिटिकल एजेंट हिन्दी के मणिपुर में प्रचार प्रसार में बाधक था। पाठ्य पुस्तकें नही थी। कैशाम कु जबिहारी जी का कहना है कि जो एक-दो पुस्तकें उपलब्ध थीं, उनकी हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार की गई और हिन्दी अध्यापन आरभ हुआ। छात्रो को ये प्रचारक अपने घर में बुलाकर पढाते थे किन्तु छात्राओ को उनके घरो में जाकर पढाते थे। मिशन भावना से यह कार्य आरभ हुआ। राजनैतिक बाधा के साथ-साथ *पाठ्यपुस्तकों का अभाव, आर्थिक कठिनाई तो थी ही परन्तु इन कार्यकर्ताओं* में सूझ-बूझ और निष्ठा का अभाव नही था, इसलिए विषम परिस्थितियो में भी यह कार्य चल पडा। तत्कालीन अंग्रेज पॉलिटिकल एजेंट ने इन प्रचारकों को बुलाकर डराया-धमकाया किन्तु ललितमाधव शर्मा तथा वाकेबिहारी जी ने निर्भय होकर सारी कठिनाइयों का सामना करते हुए हिन्दी *प्रचार किया।*[20]

सन् 1927 से हिन्दी के मणिपुर में प्रचार-प्रसार का सक्षिप्त किन्तु *प्रामाणिक ब्यौरा उपलब्ध है। 'राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास' नामक* पुस्तक मे मणिपुर के सम्बन्ध मे एक महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख हुआ है: "मणिपुर के लोगो ने अपनी भाषा और लिपि के रहते हुए धार्मिक, सास्कृतिक तथा राजनैतिक क्षेत्र म देवनागरी और हिन्दी को अपनाया था। इसके साथ पुराने राजा महाराजाओ के समय मे कृपाण आदि चलाने की शिक्षा देने के लिए भी हिन्दी का उपयोग किया जाता था। राजा और महाराजाओ की ओर से कर्मचारियो, पदाधिकारियो को जो पद और उपाधियाँ दी जाती थीं, वे हिन्दी मे ही दी जाती थी।[21] सेनापति, सूबेदार आदि शब्द इसके उदाहरण हैं, जो इतिहास मे उपलब्ध हैं।

सभवत 1927 में खोला गया परीक्षा केन्द्र मणिपुर मे चलता रहा। विवरण उपलब्ध नहीं है। केवल दो बातें इस सम्बन्ध में उपलब्ध हैं-प्रथम "(1927 मे) सम्मेलन की तरफ से परीक्षा केन्द्र खोल दिया गया। 'राष्ट्रभाषा' नाम की परीक्षा ली गई। स्थानीय व्यक्ति प ललितमाधव शर्मा जी ने केन्द्र-व्यवस्थापक बनना स्वीकार किया और प बकबिहारी शर्मा जी को प्रचारक नियुक्त किया गया।"[22] इसी पुस्तिका मे आगे यह उल्लेख भी है कि 1938 मे श्री अतुलचन्द्र सिंह द्वारा युवा लाइब्रेरी, वाचोपुर में राष्ट्रभाषा परीक्षा केन्द्र खोल दिया गया और 1940 मे जनता की सुविधा को ध्यान मे रखकर राष्ट्रभाषा परीक्षा-केन्द्र इम्फाल मे खोला गया। श्री

थोक चोम मधुसिंह जी को इम्फाल केन्द्र का व्यवस्थापक नियुक्त किया गया। श्री जयेन्द्र शर्मा 'साहित्यरत्न' को केन्द्र व्यवस्थापक की मदद करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर स नियुक्त किया गया। उनकी सहायता से इम्फाल म कई स्थानों पर वर्ग खोले गए।

ऐसा प्रतीत होता है कि काबीपुर म पहले मात्र एक केन्द्र था किन्तु बाद मे 1940 मे कई स्थानों पर केन्द्र खोले गये। 1939 म यमुना प्रसाद जी श्रीवास्तव के वर्धा से इम्फाल आन का भी उल्लेख है। थोक चोम मधुसिंह ने उनका स्वागत किया था। उन्होंने स्थान-स्थान पर भाषण दिए। पुलिस व जासूस उनके पीछे लगे रहे परन्तु जनता के पूर्ण सहयोग के कारण उनको पकडा नही जा सका। इस विवरण से स्पष्ट है कि यमुना प्रसाद जी के भाषणो को जनता समझ सकती थी, लोगो को हिन्दी का ज्ञान था।

1940 ई म इसी पुस्तिका मे 'मणिपुर हिन्दी प्रचार सभा' की स्थापना का उल्लेख है जिसका कार्यालय थोक चोम मधुसिंह के घर पर खोला गया था। सभा के अध्यक्ष प राधा मोहन शर्मा, मत्री थो मधुसिंह और कोषाध्यक्ष थागजम रघुमणि सिंह थे। इसी वर्ष आचार्य काका साहब कालेलकर जी व राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के परीक्षा मत्री अमृतलाल नाणावटी भी राष्ट्रभाषा प्रचार हेतु इम्फाल पधारे। कालेलकर जी ने इम्फाल म बडी-बडी सभाओ म मणिपुर को भारत का अभिन्न अग बताते हुए राष्ट्रभाषा प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया।

यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यह है कि प ललित माधव शर्मा तथा बकविहारी शर्मा जी का नाम तत्कालीन निखिल मणिपुरी हिन्दू महासभा (1934 ई) तथा निखिल मणिपुर महासभा (1938) जो आगे चलकर मणिपुर स्टेट काग्रेस (1948) मे परिवर्तित हुई, के साथ जुडा है। इन सस्थाओ को मणिपुर की एकतत्र से मुक्ति का श्रेय इतिहासकार भी देते हैं। इन दोनो के अतिरिक्त हिन्दी प्रचारक स्वतत्रता सग्राम के सेनानी थे श्री कैशोम कुज विहारी जिनको तो कारावास की सजा भी दी गई। वास्तव मे हिन्दी प्रचार का इतिहास स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास से जुडा रहा है।

1942 म 10 मई के दिन जापानी वायुसेना ने द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण इम्फाल पर प्रथम बार बम वर्षा की। युद्ध के दौरान मणिपुर म सामान्य जीवन अस्तव्यस्त हो गया। 1944 म सामान्य स्थिति लौटने पर श्री कैशाम कुज बिहारी सिंह जी ने पुन हिन्दी प्रचार का कार्य आरम्भ किया। श्री कु ज बिहारी जी ने युद्ध के दौरान भी गाव-गाव मे हिन्दी-वर्ग चलाने का कार्य किया था। आपने 'मणिपुर पाओजेल' और 'डसि' नामक समाचार पत्रो के माध्यम से हिन्दी और देवनागरी का प्रचार-प्रसार भी किया।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के द्वारा भेजे गए लोगों की प्रेरणा मणिपुर में हिन्दी प्रचार के लिए वरदान रही है। समिति हिन्दी प्रचार-प्रसार के कार्यों में अग्रणी रही है और वर्षों से निष्ठा पूर्वक हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है।

द्वितीय युद्ध के दौरान हिन्दी भाषा ब्रिटिश सेना एवं आजाद हिन्द फौज की मणिपुर में उपस्थिति से और आगे बढ़ी। चारों ओर हिन्दी भाषियों का जमाव हो गया। ज्ञातव्य है कि आजाद हिन्द फौज ने हिन्दुस्तानी भाषा को अपने कामकाज का माध्यम बनाया था। सेना की उपस्थिति से घाटी ही नहीं मणिपुर के पर्वतीय भागों में भी हिन्दी बोली व समझी जाने लगी। सेना का हिन्दी के क्षेत्र में सदा महत्वपूर्ण अवदान रहा है और आज भी है। पर्वतीय क्षेत्रों में लोग सेना के माध्यम से ही हिन्दी बोलने और समझ लेते हैं।

1946 47 में श्री छत्रध्वज शर्मा ने राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के राष्ट्रभाषा प्रचारक शिक्षण शिविर में भाग लिया। तब से वे मणिपुर में 'समिति' के प्रामाणिक प्रचारक नियुक्त हुए। 1948 में प्रोफेसर रजन वर्धा से समिति की ओर से इम्फाल पधारे। आपने मणिपुर के कोने-कोने में जाकर हिन्दी भाषा के महत्व और प्रचार-प्रसार के लिए भाषण दिए। वे स्थानीय साहित्यकारों से और राजनैतिक नेताओं से भी मिले। आपकी मणिपुर यात्रा हिन्दी प्रसार-प्रचार के लिए वरदान सिद्ध हुई। 1954 में मणिपुर स्टेट कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित करके हिन्दी के प्रचार-प्रसार का समर्थन किया। 1955 में वर्धा से 'समिति' के प्रधानमंत्री मोहनलाल भट्ट ने मणिपुर का दौरा किया। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में ईसाई धर्म के प्रसार को देखकर राष्ट्रभाषा के माध्यम से जनजातीय लोगों के भारतीयकरण को रेखांकित किया था। 'समिति' की मणिपुर शाखा के लिए 1955 में श्री ढेबर भाई द्वारा एक भवन का शिलान्यास किया गया। 'समिति' के इतिहास का पूर्ण विवरण अन्यत्र दिया जाएगा। यहां इतना ही कहना पर्याप्त है कि आजतक इस शाखा ने हिन्दी प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही है और 52 परीक्षा केन्द्रों और इतने ही प्रचारकों के माध्यम से वह हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है। समिति की यह स्थानीय संस्था मणिपुर से वर्धा महाविद्यालय के लिए "मैतै" एवं जन-जातीय विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष वर्धा भेजती है। प्रत्येक विद्यार्थी को एक सौ रुपये प्रतिमास की छात्रवृत्ति दी जाती है। इस तरह वर्धा 'समिति' मणिपुर के लिए भावी प्रचारक तैयार कर रही है, जो राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाएंगे। मार्च 1987 में 'समिति' ने स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लेने

के लिए वर्धा मुख्यालय से महाविद्यालय के प्राचार्य श्री जमना प्रसाद केवलिया जी एवं प्रो० सुदर्शन कुमार (जैन) शाह को यहां मणिपुर की यात्रा पर भेजा। दोनों प्रचारक बंधुओं ने स्थानीय समिति के स्वर्ण जयंती समारोह के अतिरिक्त अखिल हिन्दी शिक्षण संघ द्वारा आयोजित शिक्षण शिविर तथा मैथिलीशरणगुप्त जन्म शताब्दी समारोह में भाग लिया तथा शिक्षकों एवं प्रचारकों को अपने ओजस्वी एवं सारगर्भित भाषणों से प्रेरित किया।

मणिपुर में हिन्दी प्रचार-प्रसार करने वाली अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं का जन्म हुआ है। इनमें से कुछ आज भी सक्रिय हैं तो कुछ अर्थाभाव के कारण निष्क्रिय हो गई हैं। इन संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं के उत्साह और सेवा भाव की जितनी सराहना की जाए कम होगी। सरकार से अत्यल्प आर्थिक सहायता मिलती है, किन्तु निष्ठा देखिए कि भूखे-पेट निहत्थे सैनिक के समान ये प्रचारक जूझ रहे हैं। अनुशासन इतना कठोर कि स्वैच्छिक संस्थाएं हैं, किन्तु समय पर कार्यालय, विद्यालय, वाचनालय या पुस्तकालय खुलते हैं। हिन्दी के प्रति लगन और निष्ठा का ही यह परिणाम है, वरना इन संस्थाओं में मिलता क्या है। जो वेतन या पारिश्रमिक दिया जाता है उसको देखकर आश्चर्य होता है। न यह वेतन है न पारिश्रमिक ही। जो भी अनुदान सरकार से प्राप्त होता है, वही आपस में वितरित किया जाता है। आज भी ऐसे अध्यापक एवं कार्यकर्त्ता हैं, जिन्हें दस रुपये से भी कम प्रतिदिन के हिसाब से मिलता है। किन्तु आर्थिक अभाव का इनके कार्य या निष्ठा पर किंचित प्रभाव भी नहीं दिखाई देता, आश्चर्य है। हिन्दी दिवस हो, जयंती हो या कोई हिन्दी का कार्यक्रम हो, यह हिन्दी सेना यहां तैनात मिलेगी। खींचतान कर अपने प्रभाव का प्रयोग करके हर सभा में मंत्री-नेता आदि को ये ले ही आएंगे। प्रत्येक संस्था का एक ही दिन कार्यक्रम होगा। सब संस्थाएं मिलकर अपने-अपने समारोह का अलग अलग समय रखेंगी और उस दिन प्रातः काल 6-30 बजे से शाम तक पूरे शहर में हिन्दी कार्यक्रमों की धूम रहती है। हिंदी दिवस के दिन जब भी मैं यहां रहा हूं 12 घंटे से पहले घर नहीं लौटा हूं। न नाश्ता और न भोजन, परन्तु यह बात मेरी ही नहीं प्रत्येक हिन्दी प्रेमी की है। इन पंक्तियों के पाठक भी इस निष्ठा के लिए यहां के हिन्दी प्रेमियों की सराहना अवश्य ही करेंगे।

मणिपुर हिंदी प्रचार सभा, अकामपात (कोवा रोड) इम्फाल की स्थापना 18-4-47 को हुई थी। 1965 से अकामपात में सभा ने अपना भवन बना लिया है। यह संस्था मणिपुर में मणिपुर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के बाद सबसे पुरानी संस्था है। इस संस्था की विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इसने पर्वतीय क्षेत्रों में हिंदी प्रचार की ओर अधिक ध्यान

दिया। 1957 से इसने अपनी परीक्षाएं भी चलाईं, जिनको मान्यता भी प्राप्त है। 1977 ई. तक के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 1947 से 77 तक 39, 706 विद्यार्थियों को सभा ने विभिन्न परीक्षाओं के लिए प्रवेश दिया और उस समय तक 200 विद्यालय-महाविद्यालय भी संस्था के द्वारा खोले गए थे। सभा ने 17 पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन भी किया, जो 1976 तक सभा द्वारा संचालित परीक्षाओं के साथ सरकारी स्कूलों में भी पढ़ाई जाती रहीं। इस सभा की विशेषता यह है कि यह भारत की अखिल भारतीय संस्थाओं में से कई संस्थाओं से जुड़ी रही। आज भी असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के साथ सभा के घनिष्ठ संबंध हैं।

मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल की 1953 ई. में स्थापना की गई। हिन्दी की स्वैच्छिक स्वतंत्र संस्थाओं में यह पहली स्थानीय संस्था है। 1954 से 'परिषद्', हिन्दी प्रारंभिक, प्रवेश, परिचय, प्रबोध एवं विशारद परीक्षाओं का आयोजन कर रही है। इन विभिन्न परीक्षाओं में 35, 563 परीक्षार्थी 1985 ई. तक सम्मिलित हो चुके हैं, जिनमें से 24207 ने विभिन्न परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। परिषद का अपना भवन है जिसमें पुस्तकालय, वाचनालय, महाविद्यालय, कार्यालय एवं परीक्षा विभाग के कक्ष हैं। पुस्तकें तथा एक पत्रिका भी परिषद् की ओर से प्रकाशित की गई है।

1958 ई. नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल की स्थापना हुई। इसके अध्यक्ष—श्री एस. तोम्बीसिंह (भूतपूर्व मंत्री), उपाध्यक्ष श्री भवरीलाल वाक्लीवाल, सचिव श्री के. एच. इम्बेतोम्बी सिंह, उपसचिव श्री सी. एच. रणजीतसिंह, साहित्य सचिव श्री सी. एच. निशानसिंह तथा कोषाध्यक्ष श्री एल. भुवन मोहन थे। श्री बी. नयन शर्मा, श्री सी. एच. ब्रजेन्द्रलाल शर्मा, श्री ब्रजमोहन शर्मा तथा श्री पी. इबेतोम्बी सदस्य थे। 'सभा' ने एक पाठशाला का संचालन किया जिसमें कन्याओं के लिए प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद की प्रवेशिका से विद्या विनोदिनी परीक्षाओं तक की छात्राओं को पढ़ाने की व्यवस्था की गई थी। 'सभा' का विद्यालय इन परीक्षाओं का केन्द्र भी था। 'सभा' की ओर से 'आधुनिक' नामक मासिक पत्रिका एवं पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया। संप्रति यह संस्था प्रायः निष्क्रिय है।

1970 में नागा हिन्दी विद्यापीठ, इम्फाल की स्थापना श्री फु. गोकुलानंद शर्मा ने की। विद्यापीठ की ओर से जन-जातीय क्षेत्रों में 10 विद्यालय खोले गए।

1982 में आचार्य राधा गोविन्द कविराज ने मणिपुर ट्राइबल हिन्दी सेवा समिति, इम्फाल की स्थापना की।

कल्याण आश्रम एव विद्याभारती नामक पाठशालाए भी स्वैच्छिक सस्थाए हैं, जिन्होंने मणिपुर मे तथा पडोसी राज्यो मे अपने केन्द्रों की स्थापना करके हिन्दी एव भारतीय सस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है और कर रही हैं।

यहाँ मैं विशेष रूप से एक व्यक्ति का उल्लेख करना चाहूगा—प हजारी मयुम गोकुलानद शर्मा। 1960 ई मे आपने राजकीय सेवा से त्याग-पत्र दिया। त्यागपत्र हिन्दी सेवा के निमित्त दिया तथा उसी समय से आखें राष्ट्रभाषा महाविद्यालय इम्फाल की घर मे ही स्थापना करके विद्यार्थियो को एकत्र करके पढा रहे हैं। आपका सपूर्ण परिवार ही हिन्दी की सेवा मे लगा हुआ है। शर्माजी की त्याग और निष्ठा सराहनीय है।

सितम्बर 1976 मे श्री एस० गोपेन्द्र शर्मा जी ने मणिपुर के हिंदी प्रचार-प्रसार मे 'राष्ट्रभाषा शीघ्र लिपि कॉलेज' की स्थापना करके एक नवीन अध्याय जोड दिया है। राष्ट्र शीघ्र लिपि की मणिपुर में अत्यत आवश्यकता भी थी। शीघ्रलिपि सिखाने के साथ कॉलेज मे हिन्दी टकण सिखाने की व्यवस्था भी की गई है। हिन्दी प्रचार-प्रसार के क्षेत्र मे शीघ्र लिपि एव टकण प्रशिक्षण का मणिपुर म अभाव इस महाविद्यालय द्वारा दूर हो सका है। 1987 तक 787 विद्यार्थी इस कॉलेज म शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

यहाँ तक उन सस्थाओ का उल्लेख किया गया है जो अपने सीमित वित्तीय साधनो के उपरान्त, अभावों में पलते हुए भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। इन सस्थाओ के कार्य का आकलन मेरा उद्देश्य नहीं है, किन्तु दो बातें कहना प्रासगिक होगा। इन सस्थाओ को कुछ लोगो ने व्यवसाय भी बना लिया है या इन्हे अपनी पैतृक सपत्ति मानकर इनका व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु उपयोग भी किया है। यदि इनके इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि जो व्यक्ति जिस सस्था की कुर्सी से चिपका, वह मरने पर हटा या कुछ सस्थाओ मे मारपीट तक हुई और न्यायालय के द्वार तक ये हिन्दी सेवी पहुँच गए जिससे व्यक्तियो और सस्थाओ के साथ हिन्दी की छवि धूमिल हुई और प्रचार-प्रसार को भी धक्का लगा है। हिन्दी वालों को ही दोष देना उचित नहीं, आज राष्ट्रीय चरित्र पतनोन्मुखी है। 'गेहूँ' के साथ घुन पिसता है' कहावत चरितार्थ होती है। वास्तव म कुछ हिन्दी सस्थाओ एव व्यक्तियो की सेवा तो सराहनीय है, किन्तु कुछ व्यक्तियो ने इन सस्थाओ को और हिन्दी सेवा को कवच बनाकर व्यक्तिगत स्वार्थ साधन किया है या हिन्दी सस्था का नामपट्ट लगाकर स्वार्थ साधन किया है तो कुछ लोग जो घोर हीन भावना से ग्रस्त थे, उन्होंने अवसर का लाभ उठाने तथा अपने अहम् की तुष्टि के

दिया। 1957 से इसने अपनी परीक्षाए भी चलाई, जिनको मान्यता भी प्राप्त है। 1977 ई. तक के उपलब्ध आंकडो के अनुसार 1947 से 77 तक 39, 706 विद्यार्थियों को सभा ने विभिन्न परीक्षाओ के लिए प्रवेश दिया और उस समय तक 200 विद्यालय-महाविद्यालय भी सस्था के द्वारा खोले गए थे। सभा ने 17 पाठ्यपुस्तको का प्रकाशन भी किया, जो 1976 तक सभा द्वारा सचालित परीक्षाओ के साथ सरकारी स्कूलो मे भी पढाई जाती रही। इस सभा की विशेषता यह है कि यह भारत की अखिल भारतीय सस्थाओं में से कई सस्थाओ से जुडी रही। आज भी असम राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के साथ सभा के घनिष्ठ सबध हैं।

मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल की 1953 ई मे स्थापना की गई। हिन्दी की स्वैच्छिक स्वतत्र सस्थाओ मे यह पहली स्थानीय सस्था है। 1954 से 'परिषद्', हिन्दी प्रारभिक, प्रवेश, परिचय, प्रबोध एव विशारद परीक्षाओं का आयोजन कर रही है। इन विभिन्न परीक्षाओ मे 35, 563 परीक्षार्थी 1985 ई तक सम्मिलित हो चुके हैं, जिनमे से 24207 ने विभिन्न परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। परिषद का अपना भवन है जिसमे पुस्तकालय, वाचनालय, महाविद्यालय, कार्यालय एव परीक्षा विभाग के कक्ष हैं। पुस्तकें तथा एक पत्रिका भी परिषद् की ओर से प्रकाशित की गई है।

1958 ई नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल की स्थापना हुई। इसके अध्यक्ष—श्री एस तोम्बीसिह (भूतपूर्व मत्री), उपाध्यक्ष श्री भवरीलाल बाक्लीवाल, सचिव श्री के एच इम्बेतोम्बी सिंह, उपसचिव श्री सी एच रणजीतसिंह, साहित्य सचिव श्री सी एच. निशानसिंह तथा कोषाध्यक्ष श्री एल भुवन मोहन थे। श्री बी नयन शर्मा, श्री सी एच ब्रजेन्द्रलाल शर्मा, श्री ब्रजमोहन शर्मा तथा श्री पी. इबेतोम्बी सदस्य थे। 'सभा' ने एक पाठशाला का सचालन किया जिसम कन्याओ के लिए प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद की प्रवेशिका से विद्या विनोदिनी परीक्षाओ तक की छात्राओं को पढाने की व्यवस्था की गई थी। 'सभा' का विद्यालय इन परीक्षाओं का केन्द्र भी था। 'सभा' की ओर से 'आधुनिक' नामक मासिक पत्रिका एव पुस्तको का प्रकाशन भी किया गया। सप्रति यह सस्था प्राय निष्क्रिय है।

1970 मे नागा हिन्दी विद्यापीठ, इम्फाल की स्थापना श्री फु गोकुलानद शर्मा ने की। विद्यापीठ की ओर से जन-जातीय क्षेत्रो मे 10 विद्यालय खोले गए।

1982 में आचार्य राधा गोविन्द कविराज ने मणिपुर ट्राइबल हिन्दी सेवा समिति, इम्फाल की स्थापना की।

कल्याण आश्रम एवं विद्याभारती आमक पाठशालाएं भी स्वैच्छिक संस्थाएं हैं, जिन्होंने मणिपुर में तथा पड़ोसी राज्यों में अपने केन्द्रों की स्थापना करके हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है और कर रही हैं।

यहाँ मैं विशेष रूप से एक व्यक्ति का उल्लेख करना चाहूँगा—पं. हुजारी मयुम गोकुलानंद शर्मा। 1960 ई में आपने राजकीय सेवा से त्याग-पत्र दिया। त्यागपत्र हिन्दी सेवा के निमित्त दिया तथा उसी समय से आंग्रे राष्ट्रभाषा महाविद्यालय, इम्फाल की घर में ही स्थापना करके विद्यार्थियों को एकत्र करके पढ़ा रहे हैं। आपका सम्पूर्ण परिवार ही हिन्दी की सेवा में लगा हुआ है। शर्माजी की त्याग और निष्ठा सराहनीय है।

सितम्बर 1976 में श्री एम० गोपन्द्र शर्मा जी ने मणिपुर के हिन्दी प्रचार-प्रसार में 'राष्ट्रभाषा शीघ्र लिपि कॉलेज' की स्थापना करके एक नवीन अध्याय जोड़ दिया है। राष्ट्र शीघ्र लिपि की मणिपुर में अत्यंत आवश्यकता भी थी। शीघ्रलिपि सिखाने के साथ कॉलेज में हिन्दी टंकण सिखाने की व्यवस्था भी की गई है। हिन्दी प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में शीघ्र लिपि एवं टंकण प्रशिक्षण का मणिपुर में अभाव इस महाविद्यालय द्वारा दूर हो सका है। 1987 तक 787 विद्यार्थी इस कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

यहाँ तक उन संस्थाओं का उल्लेख किया गया है जो अपने सीमित वित्तीय साधनों के उपरान्त, अभावों में पनते हुए भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। इन संस्थाओं के कार्य का आकलन मेरा उद्देश्य नहीं है, किन्तु दो बातें कहना प्रासंगिक होगा। इन संस्थाओं को कुछ लोगों ने व्यवसाय भी बना लिया है या इन्हें अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर इनका व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु उपयोग भी किया है। यदि इनके इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि जो व्यक्ति जिस संस्था की कुर्सी से चिपका, वह मरने पर हटा या कुछ संस्थाओं में मारपीट तक हुई और न्यायालय के द्वार तक ये हिन्दी सेवी पहुँच गए जिससे व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ हिन्दी की छवि धूमिल हुई और प्रचार-प्रसार को भी धक्का लगा है। हिन्दी वालों को ही दोष देना उचित नहीं, आज राष्ट्रीय चरित्र पतनोन्मुखी है। 'गेहूँ के साथ घुन पिसता है' कहावत चरितार्थ होती है। वास्तव में कुछ हिन्दी संस्थाओं एवं व्यक्तियों की सेवा तो सराहनीय है, किन्तु कुछ व्यक्तियों ने इन संस्थाओं को और हिन्दी सेवा को कवच बनाकर व्यक्तिगत स्वार्थ साधन किया है या हिन्दी संस्था का नामपट्ट लगाकर स्वार्थ साधन किया है तो कुछ लोग जो घोर हीन भावना से ग्रस्त थे, उन्होंने अवसर का लाभ उठाने तथा अपने अहम् की तुष्टि के

लिए भी हिन्दी को कवच बनाया है। व्यक्तिगत संस्थाओं की भीड़ कुकुरमुत्तों जैसी उग आती है और संस्थाएं व्यक्तिगत साधन सिद्धि का केन्द्र बन जाती हैं। जहाँ एक ओर हिन्दी प्रचार का कार्य हुआ है, वहाँ हिन्दी का अहित भी कम नहीं हुआ है। स्वैच्छिक संस्थाओं की मान्यता प्राप्त परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी कभी-कभी न हिन्दी बोल पाते हैं और न ही लिख पाते हैं ऐसी स्थिति में अहिन्दी प्रान्तों में इन संस्थाओं को हिन्दी की दुकानें तक कहा जाने लगा है। इसी अविश्वसनीयता के परिणाम स्वरूप हिन्दी शिक्षकों के वेतनमान समकक्ष योग्यता वाले लोगों से कम रखे गए। लम्बे संघर्ष के बाद ही ये वेतनमान या अन्य भत्ते हिन्दी अध्यापकों को मिल सके। यह है हिन्दी संस्थाओं की छवि। इस छवि को सुधारना आवश्यक है।

गृहमंत्रालय या गृहमंत्रालय एवं केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए हिन्दी शिक्षण योजना है। यह योजना 1952 में बनाई गई और 1955 से गृहमंत्रालय के अधीन है। केवल फाइलों में यह योजना दबी रही। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि 1985 तक मणिपुर में गृहमंत्रालय ने मणिपुर में हिन्दी शिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं की। जब की तो एक हिन्दी प्राध्यापक की नियुक्ति की गई है, जो डाकतार, महालेखाकार, आकाशवाणी, बैंकों आदि अनगिनत केन्द्रीय कार्यालयों में हिन्दी पढ़ाने या सिखाने के लिए उत्तरदायी है। सुधीजन स्वयं निर्णय करें कि (एक कार्यालय से दूसरे की दूरी तथा हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या को ध्यान में रखकर) इस अध्यापन में गुणात्मकता का प्रतिशत क्या होगा। साथ ही ध्यान देने की बात है कि अध्ययन-अध्यापन के स्तर आदि के नियमन के लिए कोई स्थानीय व्यवस्था नहीं है। ऐसी स्थिति में आंकड़ा से अधिक इस शिक्षण का महत्व क्या हो सकता है? वे भी लाख प्रयत्न करने के बाद भी उपलब्ध न हो सके, इससे दुर्भाग्य का विषय क्या हो सकता है? ऐसे काम के लिए नियुक्ति के समय भी योग्यता से अधिक ध्यान गृहमंत्रालय को व्यक्ति की भावनाओं को देना चाहिए। केवल मिशनरी भावना से युक्त लोग इन क्षेत्रों में हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत नियुक्त किए जाते तो कितना अच्छा होता? जो हो, जबसे गृहमंत्रालय की यह योजना केवल राजधानी इम्फाल में (ज्ञातव्य है कि केन्द्रीय सरकार के कार्यालय सभी जिला मुख्यालयों में भी हैं यह भी योजना बनने के पूरे तीस वर्ष पश्चात् शुरू हुई है, उसके पश्चात्) मणिपुर के केन्द्रीय कार्यालयों में कर्मचारी व अधिकारी हिन्दी पढ़ रहे हैं और हिन्दी परीक्षाओं में भी सम्मिलित हो रहे हैं, यही संतोष का विषय है।

इससे पूर्व कि अन्य संस्थाओं की चर्चा की जाए राज्य सरकार के कर्मचारियों के हिन्दी सीखने की अनिवार्यता का भी उल्लेख आवश्यक है।

मणिपुर सरकार के कुछ विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए हाईस्कूल स्तर का हिन्दी ज्ञान अनिवार्य है। प्रत्येक अधिकारी को यह परीक्षा उत्तीर्ण किये बिना वेतन वृद्धि मिलना सम्भव नहीं है। खेद का विषय है कि राजपत्रित व अराजपत्रित अधिकारियों को परीक्षा उत्तीर्ण करना तो आवश्यक है किन्तु शिक्षण व्यवस्था का पूर्णत: अभाव है। क्या ही अच्छा होता कि राज्य सरकार भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए शिक्षण व्यवस्था की ओर ध्यान देती।

हिन्दी अपने दम पर बढ़ रही है, न यह केन्द्रीय सरकार और न ही राज्य सरकार की दया पर निर्भर है। हिन्दी की यात्रा मणिपुर में शताब्दियों से जारी है, राजकीय संरक्षण और सहायता से सहज यात्रा विकास ग्रस्त ही हुई है। डा० एम० होरम का कथन इस संबंध में महत्वपूर्ण है कि हिन्दी फिल्मी गीतों की ध्वनि नागालैंड के खेतों में सुनी जा सकती है। उन्होंने हिन्दी फिल्मों को हिन्दी के संगठित प्रचार से कहीं अधिक महत्व पूर्ण माना है।[23]

आकाशवाणी के हिन्दी कार्यक्रम भी हिन्दी की इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, इसका पता हिन्दी के गानों की लोकप्रियता से स्पष्ट होता है। दूरदर्शन के कार्यक्रम भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योग दे रहे हैं।

राज्य सरकार की सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कक्षा तीन से आठ तक हिन्दी अनिवार्य विषय रहा है, किन्तु 1983 से राज्य सरकार के आदेशानुसार हिन्दी अध्यापन कक्षा तीन के स्थान पर कक्षा छः से किया जाने लगा। हिन्दी प्रचार प्रसार को निश्चित ही इस निर्णय से धक्का अवश्य लगा। प्रसन्नता का विषय यह है कि जनवरी 1988 से हिन्दी पुनः कक्षा तीन से पढ़ाए जाने का मणिपुर सरकार का निर्णय घोषित हो चुका है। निर्णय का चारों ओर स्वागत हुआ है। ये शिक्षण संस्थाएं भी हिन्दी प्रचार में सहायक हैं। यद्यपि स्तर की समस्या इस स्तर पर भी पर्याप्त विकट है। विद्यालयों के अध्यापकों के लिए दो प्रशिक्षण महाविद्यालय भी हैं। शिक्षा विभाग में हिन्दी के उप-निरीक्षक, निरीक्षक और उप निदेशक भी हैं।

गैर सरकारी तथाकथित अंग्रेजी पाठशालाओं में भी हिन्दी विषय सरकारी पाठशालाओं की भांति ही अनिवार्य है, किन्तु ये हिन्दी विरोधी संस्थाएं हिन्दी अध्यापकों की नियुक्ति नहीं करतीं या हिन्दी की उपेक्षा करती हैं। समय सारिणी में हिन्दी का समय दिखाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती हैं। संस्थाएं निराश हैं, सरकार से अनुदान आदि नहीं लेती और केवल मान्यता हेतु समय-सारिणी दिखाकर काम चला लेती हैं।

मणिपुर पब्लिक स्कूल, इम्फाल सैनिक स्कूल, इम्फाल तथा चार केन्द्रीय विद्यालय भी कक्षा दस तक हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप मे पढ़ाकर मणिपुर ही नहीं पूर्वांचल के विद्यार्थियो मे हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं। दिगम्बर जैन हाईस्कूल, गुरु नानक हाईस्कूल, भैरोदान हिन्दी हाईस्कूल तथा चतुर्थ असम राइफल्स हाईस्कूल हिन्दी को विषय के रूप में ही नहीं बल्कि शिक्षा के माध्यम के रूप मे भी प्रयुक्त करते हैं। काड्लापोड्बी, तथा कालापहाड़ के नेपाली बहुल क्षेत्र के हाईस्कूल मे भी यही स्थिति है। कुछ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे ग्यारहवीं व बारहवी कक्षाओं मे हिन्दी वैकल्पिक विषय के रूप में लेने की सुविधा उपलब्ध है। श्री हरेकृष्ण मिशन स्कूल में हिन्दी-संस्कृत शिक्षण की उचित व्यवस्था है।

पांच कॉलेजो मे हिन्दी स्नातक स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप मे पढ़ाई जा रही है। मणिपुर विश्वविद्यालय मे भी हिन्दी म ब्रिजकोर्स, एम० ए०, एम० फिल० तथा शोध की सुविधाए उपलब्ध है।

इन सभी शिक्षण-संस्थाओं द्वारा भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार विगत चार दशकों से किया जा रहा है और पर्याप्त संख्या मे विद्यार्थी हिन्दी की विभिन्न परीक्षाए उत्तीर्ण कर चुके हैं। मणिपुर से प्रतिवर्ष काफी संख्या मे विद्यार्थी हिन्दी प्रदेशो मे शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं। वहां से वे हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त करके लौटते हैं। दक्षिण भारत म पढने जाने वाले विद्यार्थी एक आधुनिक आर्यभाषा की अनिवार्यता के कारण वहा से हिन्दी पढकर लौटते हैं। इधर विभिन्न रोगों के उपचार हेतु भी लोग बाहर जाने लगे हैं, रोगी के साथ देखभाल करने वाले भी जाते हैं और वे मणिपुर से बाहर निकलते ही हिन्दी का प्रयोग करने को बाध्य होते हैं। व्यापार के सिलसिले मे भी बाहर जाने वाले लोगों को हिन्दी का प्रयोग करना होता है। इस प्रकार हिन्दी प्रचार-प्रसार सरकारी, गैर सरकारी, संगठित-असंगठित संस्थाओं के अतिरिक्त भी आवश्यकता की अनिवार्यता के कारण बहुत तेजी से हो रहा है। स्थानीय भाषाओं के साथ इस प्रकार हिन्दी की यात्रा का क्षेत्र जीवन के विभिन्न अंग, एन० सी० सी० ट्रेनिंग और आरक्षी बलो के द्वारा यहां हिन्दी भाषा का प्रचार हो रहा है। चारो ओर हिन्दी फिल्मो के बजते हुए रेकार्ड हिन्दी का वातावरण बनाने के सक्षम साधन हैं।

मणिपुर मे बीसवीं शताब्दी में हिन्दी के ऐतिहासिक यात्रा के पथ पर मील के पत्थर हैं—अनुवाद कार्य, पुस्तक प्रकाशन, हिन्दी पत्रकारिता, कवि सम्मेलन, कोश, शोधकार्य, मौलिक ग्रन्थ, तथा पाठ्य पुस्तक प्रकाशन। यथोपलब्ध जानकारी यहा प्रस्तुत है।

अनुवाद

प्रत्येक भाषा मे विभिन्न भाषाओ के ग्रन्थो का अनुवाद किया जाता है। मणिपुर भाषा-साहित्य मे अनुवाद परम्परा सस्कृत ग्रन्थो के अनुवाद से आरभ हुई। बाद मे मध्यकाल मे बागला भाषा के धार्मिक ग्रन्थो का अनुवाद भी धार्मिक कारणों से सस्कृत के समानान्तर चलता रहा। बीसवी शताब्दी मे हिन्दी से मणिपुरी और मणिपुरी से हिन्दी अनुवाद की परम्परा भी चल पडी है। इन दोनो परम्पराओ में अनूदित ग्रन्थों का विवरण प्रस्तुत है।

हिन्दी से मणिपुरी—

"बैताल" नामक हिन्दी पुस्तक का मणिपुरी अनुवाद श्री कैशाम कुज-विहारी सिंह ने किया। यह अनुवाद 1959-60 में प्रकाशित हुआ था और इस पुस्तक को प्रथम अनुवाद माना जा सकता है।

हिन्दी से मणिपुरी अनुवाद की परम्परा मे दूसरा अनुवाद भगवती चरण वर्मा के चित्रलेखा (उपन्यास) का 1963 ई म हुआ। श्री चिंगाखम निशान सिंह 'नितम' ने यह अनुवाद किया और इसको प्रकाशित भी स्वय ने ही किया था।

श्री 'नितम' ने प्रेमचन्द के गोदान का सन् 1971 व 1980 मे अनुवाद प्रकाशित किया। 1980 मे ही उन्होने प्रेमचन्द के गबन का अनुवाद भी प्रकाशित किया। इन्होंने प्रेमचन्द की पाँच कहानियो का 'शिडेल मडा' के नाम से मणिपुरी अनुवाद प्रस्तुत किया।

डा० एलाङ्बम दीनमणि सिंह ने जैनेन्द्र के त्यागपत्र का 'थादोक्चे' शीर्षक से 1971 ई. म तथा धर्मवीर भारती के अधा युग का अनुवाद 1985 ई मे किया। इन दो प्रकाशित कृतियो के अतिरिक्त डा० सिंह ने आषाढ का एक दिन (मोहन राकेश), हय वदन (गिरीश कर्नाड), सारे जहा से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा (डा० इकबाल), झडा ऊचा रहे हमारा आदि अनेक नाटको, गीतो, एकाकी एव रेडियो एकाकी के हिन्दी से मणिपुरी मे अनुवाद किए हैं। इनमे से कई गीत तो आकाशवाणी से मणिपुरी भाषा मे प्रसारित होते हैं तथा कुछ का मचन मणिपुरी रगमच पर होता रहता है।

श्री छत्रध्वज शर्मा ने प्रेमचन्द जी के कहानी सग्रह सप्त सरोज का अनुवाद 'थम्बाल तरत' शीर्षक से प्रकाशित किया।

श्री थ० कृष्ण मोहन शर्मा ने राजेन्द्रसिंह वेदी के उपन्यास एक चादर मैली सी का अनुवाद फिमन खुनबा' के नाम से प्रकाशित किया।

श्री अ० कुमार शर्मा ने प्रेमचन्द की कफन और सवा सेर गेहू तथा शतरज के खिलाडी, अज्ञय की शत्रु, प्रसाद की आकाशदीप, चद्रधर शर्मा

गुलेरी की उसने कहा था, यशपाल की परदा, अमृतलाल नागर की एटम बम, विश्वम्भरनाथ शर्मा की रक्षा बंधन, फणीश्वरनाथ रेणु की तीसरी कसम आदि कहानियों का मणिपुरी अनुवाद किया। ये अनुवाद मणिपुर की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित या आकाशवाणी से प्रसारित हुए हैं। मोहन राकेश के आधे अधूरे का अनुवाद भी आकाशवाणी से प्रसारित हो चुका है। प्रो० कुमार शर्मा द्वारा हिन्दी की विविध विधाओं का प्रकाशन, प्रसारण या मंचन हुआ है।

श्री अ० कृष्ण मोहन ने भी अनेक हिन्दी कहानियों, नाटकों, एकांकियों आदि का मणिपुरी अनुवाद आकाशवाणी, पत्रिकाओं तथा रंगमंच के लिए किया है।

श्री निशान सिंह ने प्रेमचंद के उपन्यास सेवा सदन का मणिपुरी भाषा में अनुवाद कर लिया है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

मणिपुरी से हिन्दी

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा श्री अ० छत्रध्वज शर्मा द्वारा डॉ० कमल की मणिपुरी कविताओं का अनुवाद कवि श्री माला के नाम से 1962 ई० में किया गया। इस अनुवाद के साथ श्री शर्मा ने मणिपुरी साहित्य के इतिहास का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है तथा मणिपुरी साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय भी दिया है। संभवतः मणिपुरी से हिन्दी अनुवाद का प्रारंभ इसी रचना से होता है।

श्री निशान सिंह ने डॉ० कमल के प्रसिद्ध मणिपुरी उपन्यास "माधवी" का अनुवाद 1977 में हिन्दी में प्रकाशित किया। इस अनुवाद पर श्री निशान को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली ने 1500 रु० का पुरस्कार प्रदान किया। इसका द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है।

डॉ० ए० दीनमणि सिंह ने श्री जी० सी० तोङ्ब्रा के मनि-ममौ (सास-बहू) तथा ताजमहल तथा श्री कन्हाइलाल के तम्नलाइ का हिन्दी अनुवाद रंगमंच के लिए किया। अभी तक इन नाटकों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित नहीं हो सका है। डॉ० सिंह ने मणिपुरी कहानी एवं कविताओं का हिन्दी अनुवाद भी किया है जो आकाशवाणी से प्रसारित हुआ है।

डॉ० एस० तोम्बा सिंह द्वारा श्री आर० के० एलाङ्‌बम की कहानी चिङ्गी इमो का हिन्दी अनुवाद पहाड़ी बहू शीर्षक से तथा श्री आर० के० शीतलजीत सिंह की कहानी इन्दोक्पा का हिन्दी अनुवाद बहिष्कार शीर्षक से राष्ट्रभाषा संदेश (प्रयाग) में 1981 में प्रकाशित हुआ है। आपके पास मणिपुरी भाषा की श्रेष्ठ कहानियों का हिन्दी अनुवाद पांडुलिपि के रूप में तैयार है।

श्री अङाहल सिंह के प्रसिद्ध मणिपुरी उपन्यास "जहेरा" का हिन्दी अनुवाद श्री निशान सिंह के पास पांडुलिपि के रूप में तैयार है, संभवत: शीघ्र प्रकाशित होगा।

पुस्तक-प्रकाशन

मणिपुर में आज भी हिन्दी प्रेस की विशेष सुविधा नहीं है और अच्छे कम्पोजिटरों का अभाव है। यातायात एवं परिवहन और डाक की भी असुविधा है, अत: हिन्दी पुस्तकों की उपलब्धि आज भी गंभीर समस्या है। पाठ्य-पुस्तकें विद्यार्थी-संख्या कम होने के कारण स्थानीय पुस्तक विक्रेता व्यावसायिक दृष्टिकोण से आज भी नहीं मंगाते हैं। जब हिन्दी का स्वतंत्रता-पूर्व अध्ययन-अध्यापन आरंभ किया गया तो हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों की स्थिति का हम अनुमान ही लगा सकते हैं। श्री ललितमाधव शर्मा, श्री कुंजबिहारी शर्मा, श्री थोकचोम मधुसिंह, श्री कैशाम कुंज बिहारी सिंह ने कई वर्षों तक अपने हाथों से अनेक हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों की अनेक प्रतियाँ तैयार की तथा उन्हीं के माध्यम से वे हिन्दी पढ़ाने लगे थे। हिन्दी प्रचार के इन आदि स्तंभों को जो अन्य कठिनाइयां उठानी पड़ी, वे तो थीं ही परन्तु पाठ्य-पुस्तकें भी उपलब्ध नहीं थी जिनकी इनको हस्तलिखित प्रतियां तैयार करनी पड़ी।

यह क्रम आज भी नहीं टूटा है। हिन्दी अध्यापक आज भी कॉलेज और विश्वविद्यालय में जो पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध नहीं होती, उनकी हस्तलिखित प्रति तैयार करते हैं। लेखक ने निराला की कविताओं के सभी संकलन उपलब्ध न होने पर मणिपुर से बाहर जाकर पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताओं की हस्तलिखित प्रति तैयार की थी। तुलसीदास (निराला) तथा डा. जगदीश गुप्त के रीतिकाव्य संग्रह के लिए भी ऐसा ही करना पड़ा। आज भी प्रिय-प्रवास या साकेत के किसी सर्ग विशेष या किसी नाटक की जो बाजार में नहीं रहा है, की जिरोक्स/टंकित प्रतियां विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों के हाथ में देखी जा सकती हैं। तो आज के 60 वर्ष पूर्व यदि इन प्रचारकों को यह श्रमसाध्य कार्य करना पड़ा तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

मणिपुर में हिन्दी प्रेस की सुविधा कब उपलब्ध हुई निश्चित कहना कठिन है। चित्रांगदा साहित्य प्रकाशन, इम्फाल द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकें डॉ देवराज को सर्वेक्षण में मिली हैं जिनमें लेखकों के नाम नहीं हैं किन्तु मुद्रक का नाम चित्रांगदा डेली दैनिक प्रेस, इम्फाल दिया गया है और एक पुस्तक पर 1949 ई. प्रकाशन वर्ष दिया गया है, पुस्तकों के नाम हैं—

1 राष्ट्रभाषा/प्रारंभिक बोधिनी परिचय (1949) तथा

2 हिन्दी मणिपुरी पहेली (हिन्दी मणिपुर कहानबा)। इन पुस्तकों के सहारे 1949 से मणिपुर में हिन्दी प्रेस एवं हिन्दी की पुस्तकों के प्रकाशन

के इतिहास का आरभ माना जा सकता है। किन्तु सभावना यह भी है कि इससे पूर्व की पुस्तकें या मुद्रणालय का पता भी चले। इस दिशा मे शोध की अपेक्षा है।

हिन्दी-पत्रकारिता

मणिपुर मे हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास प्रारभ करने से पूर्व यह सूचित करना आवश्यक है कि अनेक पत्र-पत्रिकाओ के सबध मे केवल मौखिक सूचनामात्र प्राप्त हो सकी है, अक या वर्ष के सदर्भ मे निश्चित कुछ कहना बहुत कठिन है। इस सबध मे कुछ बातो का पता डॉ देवराज (हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय) ने लगाया था। उन्होंने सकलित सूचना मुझे दी है। इस सहयोग के लिए मैं उनका आभारी हू।

हिन्दी-पत्रकारिता का जन्म एक हस्तलिखित पत्रिका से होता है। जिसका प्रकाशन वर्ष तथा सम्पादन किसने किया ज्ञात नही हो सका है, किन्तु इतना अवश्य ज्ञात हुआ है कि यह पत्रिका जिस सज्जन ने निकाली थी वे एक जैन थे। वे कहा के रहने वाले थे, पूरा नाम क्या था आदि बातो की किसी को जानकारी नही है। हां, डॉ. देवराज को सर्वेक्षण के दौरान यह ज्ञात हुआ कि प्रथम बार इस हस्तलिखित पत्रिका की 15 प्रतिया निकाली गई और दूसरी बार 25 प्रतियां। सभवत: मणिपुर मे हिन्दी पत्रकारिता का भी श्री गणेश इसी पत्रिका से हुआ।

छपी हुई पहली पत्रिका 'आधुनिक' (साप्ताहिक) सन् 1958 ई. मे प्रकाशित हुई थी। इस पत्रिका का प्रकाशन नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल ने किया था तथा तरुण प्रेस ने छापा था। सम्पादक मडल मे श्री सी. एच. निशानसिंह तथा श्री बी. मयन शर्मा भी थे। इस पत्रिका का कोई अक उपलब्ध नही है किन्तु डॉ. देवराज ने दिसम्बर 1985 मे त्रिदिवसीय लेखक शिविर मे इसकी एक प्रवेशाक की प्रति नजीबाबाद मे रखी थी। मणिपुर की पत्रिकासूची से यह सूचना ली गई है। श्री निशान ने बताया कि यह पत्रिका बाद मे मासिक एव त्रैमासिक बनी और अत मे बद कर दी गई। बद होने का कारण आर्थिक रहा। यह पत्रिका भी हिन्दी मणिपुरी भाषाओ मे निकलती थी किन्तु मणिपुरी भाषा नागरीलिपि मे छापी जाती थी।

'सम्मेलन गजट' सन् 1960 से 65 तक तथा 'नई शिक्षा' सन् 1965 से 71 तक हिन्दी मे दो मासिक पत्रिकाए निकलती रही हैं।

1972 से श्री के. ब्रजमोहन देव शर्मा 'नागरिक पथ' (दैनिक) निकाल रहे हैं। वास्तव मे यह द्विभाषिक पत्र है, जिसमे मणिपुरी के साथ हिन्दी के कुछ कॉलम रहते हैं। श्री कंशोम क ज बिहारीसिंहजी 'इ सी.' (आज)

नामक दैनिक भी निकालते थे जो हिन्दी भाषा में समाचार प्रकाशित करता था और चित्रांगदा ड सी दैनिक प्रेस, इम्फाल से प्रकाशित किया जाता था।

1972 ई. में डॉ. जगमलसिंह के प्रयत्नों से एक साहित्यिक संस्था का संगठन किया गया था जिसका नाम था 'चितना'। 1973 में इसी संस्था की 'चितना' वार्षिक पत्रिका प्रकाशित की गई किन्तु एक ही अंक निकलने के बाद यह पत्रिका कालकवलित हो गई।

1976 ई में आचार्य राधागोविन्द कविराज के सम्पादन में "हिन्दी शिक्षक दीप" (चतुर्मासी) पत्रिका का प्रकाशन किया गया। मई और सितम्बर 76 के दो अंकों के पश्चात यह पत्रिका कालकवलित हो गई। यह पत्रिका अखिल मणिपुर हिन्दी शिक्षक संघ के तत्वावधान में निकाली गई थी और 'संघ' की राजनीति के परिणामस्वरूप इसका प्रकाशन बन्द हो गया। इसकी योजना बनाने में डा जगमल सिंह एवं श्री राधा गोविन्द जी की महत्व-पूर्ण भूमिका रही थी।

1980 ई में "युमशकैश" (मासिक) पत्रिका मणिपुर हिन्दी शिक्षक संघ ब्रह्मपुर पैलेस रोड, इम्फाल के तत्वावधान में प्रकाशित होने लगी। इसके सम्पादक श्री फु० गोकुलानन्द शर्मा हैं। हर्ष का विषय है कि यह पत्रिका आजतक प्रकाशित हो रही है।

1983 ई म तुलसी जयन्ती के अवसर पर अखिल मणिपुर हिन्दी शिक्षक संघ, इम्फाल की ओर से "वृन्दो-परेंग" नामक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके प्रथम सम्पादक श्री एस० कुलचन्द्र शर्मा शास्त्री थे। किन्तु बाद में 1985 से श्री चिंगथाम नोदियाचंद सिंह इसके संपादक हैं। यह पत्रिका अनियतकालीन है। इसका प्रथम वर्ष का द्वितीय अंक "हिन्दी सेवक सम्मानित विशेषांक" के रूप में निकला और चतुर्थ वर्ष का संयुक्तांक 5-6 श्री मैथिलीशरण गुप्त विशेषांक' के रूप में निकला है जिसका विमोचन 29-03-1987 को किया गया था।

हिन्दी दिवस 1985 सितम्बर 14 तारीख को मणिपुर हिन्दी परिषद इम्फाल की ओर से "मणिपुर हिन्दी परिषद पत्रिका" (मासिक) का प्रकाशन आरम्भ किया गया है। सम्पादक हैं आचार्य राधागोविन्द थोडाम। वास्तव मे आचार्य राधागोविन्द थोडाम एकाधिक पत्रिकाओं में सहयोगी रहे हैं। 1976 ई. से वे मणिपुर की हिन्दी पत्रकारिता से किसी न किसी रूप से जुड़े हैं। वे हिन्दी प्रचार-प्रसार में गहरी रुचि लेते हैं। साथ ही हिन्दी पत्रकारिता में विशेष रुचि रखते हैं। डॉ० काइजम इबोहल सिंह, डॉ० देवराज, डॉ० एस. तोम्बा सिंह एवं डॉ० दीनमणि इस पत्रिका के जन्म से

1971 को आयोजित किया था। यह कवि-सम्मेलन बहु भाषी था। हिन्दी के साथ मणिपुरी, बगला, उर्दू, पजाबी आदि भाषाओ के कवियो ने इसमे उत्साह से भाग लिया था। कवि-सम्मेलन के आयोजन का दायित्व श्री जगनमल जैन (मैसर्स जगनमल अजितकुमार, थाडल बाजार, इम्फाल) ने वहन किया था। कवि सम्मेलन बगला देश की मुक्ति के अवसर पर आयोजित किया था और प्रथम कवि-सम्मेलन होने के कारण पर्याप्त श्रोताओ ने अपनी उपस्थिति से इसको सफल बनाया था।

किन्तु इस प्रथम सार्वजनिक कवि सम्मेलन के पश्चात् कवि-सम्मेलन परम्परा केवल आकाशवाणी तक सीमित रह गई। डॉ० देवराज जो स्वय कवि हैं और तेवरी नामक नई कविताधारा के जनक हैं, ने आते ही कवि-सम्मेलनों की मणिपुर मे धूम मचा दी। वास्तव मे हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए यह आवश्यक था ही। तरुणकवि ने 2 अक्टबर 1985 को कवि-सम्मेलन परम्परा को पुनर्जीवन देने के लिए मणिपुर विश्वविद्यालय के हॉल मे कवि सम्मेलन का आयोजन किया। नगर से पर्याप्त दूरी होते हुए भी श्रोताओ एव कवियो की बहुत बडी उपस्थिति रही। कवि-सम्मेलन का सचालन इस पक्तियो के लेखक ने किया।

इस दूसरे कवि-सम्मेलन के पश्चात् मणिपुर मे कवि-सम्मेलन परम्परा ही आरभ हो गई। डॉ० देवराज के भाव भरे गीतो को उनकी सुरीली कठ ध्वनि से सुनने के लिए लोग उत्सुक रहते हैं और अब कवि-सम्मेलन लोकप्रिय हो गए हैं। इसका श्रेय डॉ० देवराज को जाता है। हिन्दी के माध्यम से मणिपुरी मे भी कवि-सम्मेलन परम्परा स्थापित हो सकेगी। अभी जो कवि-सम्मेलन होते हैं वे बहु भाषी ही होते हैं।

डॉ० देवराज ने ही इस दिशा म एक अभिनव प्रयोग 26 जनवरी 1987 को किया। मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल के प्रागण मे हिन्दीतर भाषी हिन्दी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। सयोजन-सचालन डा० देवराज ने ही किया था। यह प्रयोग बहुत सफल रहा तथा बाद के कवि-सम्मेलनो मे अहिन्दी भाषी कवियो ने हिन्दी मे रचनाए आरभ कर दी। इस प्रकार के कवियो की सख्या तीस हो गई है। हिन्दी और मणिपुरी भाषा के बीच आदान-प्रदान का यह उत्तम साधन है।

कोश

"मणिपुरी-हिन्दी शब्द माला" नामक एक छोटी सी पुस्तक (77 पृष्ठ) के प्रकाशन से मणिपुरी-हिन्दी कोश प्रकाशन का प्रारभ माना जा सकता है जो नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल की ओर से सन् 1959 ई मे

प्रकाशित की गई। इसका सम्पादन श्री चिंगाबम रणजितसिंह एव श्री चिंगाबम निशानसिंह 'नितम' ने किया। इस शब्दमाला मे मणिपुरी भाषा के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया गया था। मुद्रक : श्री थौना ओजम तोम्बसिंह तरुण प्रिन्टिंग वर्क्स, इम्फाल

सन् 1958 में प राधामोहन शर्मा एव श्री एल नारायण शर्मा का "हिन्दी मणिपुरी शब्द कोश" प्रकाशित हुआ। कोश की दृष्टि से यह प्रथम शब्द कोश है। इसका प्रथम सस्करण शकाब्द 1880 मे विजयादशमी के दिन निकला तथा तीन प्रेसो मे इसका मुद्रण हुआ—माओ प्रेस, वीना प्रेस तथा जी एम प्रेस, इम्फाल। प्रकाशक दोनो सम्पादक स्वय थे। इस कोश का द्वितीय सस्करण शकाब्द 1883 मे निकला और जी एम. प्रेस, इम्फाल मे इसका मुद्रण हुआ था। इसमें हिन्दी शब्द, शब्द भेद, मणिपुरी शब्दार्थ देवनागरी लिपि मे दिये गये हैं।

सन् 1962 मे प्रथम बार त्रिभाषा कोश का सम्पादन श्री द्विजमणि देव शर्मा जी ने "दा हिन्दी-मणिपुरी इगलिश डिक्शनरी" के नाम से किया। प्रकाशक मेसर्स पी शेखर ब्रदर्स, रवाई ब्रह्मपुर, इम्फाल। इसमें हिन्दी शब्द देवनागरी मे, उसका मणिपुरी पर्याय बगला लिपि मे और अत मे अग्रेजी शब्दार्थ रोमन लिपि मे दिया गया है। प्रत्येक हिन्दी शब्द के बाद उसका शब्द भेद अग्रेजी मे दिया गया है।

1963 ई मे श्री एल नारायण शर्मा ने "मणिपुरी हिन्दी शब्द कोश" का सम्पादन एव प्रकाशन किया। मुद्रण सरस्वती प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल मे हुआ। इस कोश मे मणिपुरी शब्द, शब्द भेद अग्रेजी के अनुसार रोमन वर्णमाला मे दिया गया है, फिर मणिपुरी शब्दार्थ और अन्त मे हिन्दी शब्दार्थ दिए गए हैं। मणिपुरी शब्द एव शब्दार्थ बगला लिपि मे और हिन्दी शब्दार्थ देवनागरी मे हैं।

1970 मे श्री एल. नारायण शर्मा जी ने एग्लो मणिपुरी-हिन्दी स्टैण्डर्ड पॉकेट डिक्शनरी का भी स्वय ने प्रकाशन एव सम्पादन किया। मुद्रक : नारायण प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल।

हिन्दी-मणिपुरी कोश (Hindi Manipuri Dictionary) का प्रकाशन फरवरी 1977 मे हुआ। इसका प्रकाशन प्रो ब्रज बिहारी कुमार, मत्री, नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा ने किया। इसके सपादक हैं प्रो ब्रज बिहारी शर्मा एव प्रो एस यदुमनि सिंह। मुद्रक शिवशकर प्रसाद, दीपक प्रेस, एस 17/272 नदेसर, वाराणसी कैण्ट।

ये चार कोश अब तक प्रकाशित हुए हैं जिनमे एक त्रिभाषी है और अन्य द्विभाषी।

अभी-अभी श्री एल. नारायण शर्मा जी का एक कोश और छप रहा है जिसका नाम है—"स्टैण्डर्ड पॉकेट डिक्शनरी हिन्दी-मणिपुरी।"

श्री द्विजमणि देव शर्मा भी अपने कोश का दूसरा सस्करण प्रकाशित करने जा रहे हैं।

मणिपुर में हिन्दी शोध कार्य

मणिपुर विश्वविद्यालय के शोध कार्य के सबध म अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है। किन्तु कुछ शोधार्थियों ने अन्य विश्वविद्यालयो से हिन्दी मे पी-एच डी उपाधि प्राप्त की है, उनका विवरण इस प्रकार है

डॉ एस तोम्बा सिंह ने केन्द्रीय हिन्दी सस्थान आगरा मे रहकर "व्याकरणिक कोटियो का अध्ययन : हिन्दी और मणिपुरी के सदर्भ म" विषय पर शोध कार्य करके आगरा विश्वविद्यालय स पी-एच डी की उपाधि प्राप्त की।

डॉ० के० इबोहल सिंह ने "हिन्दी और मणिपुरी की क्रिया-रचनाओ का व्यतिरेकी अध्ययन" विषय पर आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच. डी की उपाधि प्राप्त की।

डॉ० टी० कुजकिशोर सिंह ने मणिपुर मे हिन्दी अध्ययन मे विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके आगरा विश्वविद्यालय से पीएच डी. की उपाधि प्राप्त की।

डॉ० एलाङबम दीनमणि सिंह ने "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी और मणिपुरी कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन सामाजिक चेतना के सदर्भ में" विषय पर (1981 मे) इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त।

डॉ० ह० कुमार सिंह ने रांची विश्वविद्यालय से 1984 मे हिन्दी और मणिपुरी कृष्ण भक्ति काव्य का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर पीएच डी की उपाधि प्राप्त की।

कुमारी हजारीमयुम सुवदनी देवी आगरा विश्वविद्यालय से "हिन्दी और मणिपुरी विधेय पदबधो का व्यतिरेकी अध्ययन" विषय पर अपना शोध प्रबध प्रस्तुत कर रही हैं।

मौलिक पुस्तक प्रकाशन

क्र स	नाम पुस्तक	लेखक	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक	मुद्रक
1.	मणिपुर का सनातन धर्म (सस्कृति)	प.,अतोम बापू शर्मा	1951	स्वय	स्वयं
2.	मणिपुर मे राष्ट्रभाषा प्रचार का सक्षिप्त इतिहास (हिन्दी प्रचार का इतिहास)	श्री श्री छत्रध्वज शर्मा	1958	मणिपुर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, इम्फाल	राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा
3.	कवि थीमाला : मणिपुरी : (काव्य)	मूल—डॉ. कमल अनुवादक : श्री छत्रध्वज शर्मा व श्री के. इबोमचासिंह	1962	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा
4	खम्बा-थोइबी (नाटक)	श्री सीएच. निशानसिंह	1963	नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल	आजाद प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल
5.	मणिपुरी सस्कृति एक झांकी	श्री एस. गोपेन्द्र शर्मा	1972	खा. कुमारसिंह	विजय प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल
6	हिन्दी और मणिपुरी पर सर्गों का तुलनात्मक अध्ययन	श्री अरिवम कृष्ण मोहन शर्मा	1972	केन्द्रीय हिन्दी सस्थान, आगरा	दी एजुकेशनल प्रेस, आगरा
7.	क्षितिज-सा ध्येय काव्य	आचार्य राधा गोविन्द कविराज	1976	आनद कृष्ण साहित्य कला सगम, उरिपोक	आलोक मुद्रणालय, गोहाटी

क्र स	नाम पुस्तक	लेखक	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक	मुद्रक
8	माधवी (उपन्यास)	मूल—डा कमल, अनु श्री मोएव निशानसिंह	1977	स्वय	—
9	खम्ब-थोइबी (कथा)	श्री लोइतोबम कालाचांदसिंह	1978	स्वय	वाणी प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल
10	व्याकरणिक कोटियो का अध्ययन हिन्दी और मणिपुरी के सदर्भ म (शोध ग्रथ)	डॉ एस तोम्बा सिंह	1984	ज्ञानभारती, 4/14 रूपनगर दिल्ली	चोपड़ा प्रिंटर्स, दिल्ली
11	श्रेष्ठ मणिपुरी लोक कथाए (लोक साहित्य)	डॉ एस तोम्बा सिंह	1984	मणिपुरी हिन्दी एकादमी इम्फाल	आर के प्रिंटर्स, इम्फाल
12.	मणिपुर के वीर नर-नारियो की जीवन गाथाए (जीवनी)	स श्री पु गोकुलानन्द शर्मा	1985	मणिपुर हिन्दी शिक्षक सघ इम्फाल	राष्ट्रलिपि हिन्दी प्रेस, ब्रह्मपुर, इम्फाल
13.	मणिपुर की लोक कथाए (लोक साहित्य)	श्री हीरालाल गुप्त	1986	लोक मगल इम्फाल	मनोहर प्रस वाराणसी
14	वीर टिकेन्द्रजीत (नाटक)	श्री के बाय शर्मा	1987	शर्मा बुक एजेंसी, इम्फाल	लोक उ प्रि प्रेस, इम्फाल
15	मणिपुरी साहित्य म कवि भाउबा की देन (आलोचना)	श्री हीरालाल गुप्त	1987	लोक मगल, इम्फाल	मार्डन प्रेस, इम्फाल
16	मणिपुर की लोक कथाए	सी सी एच निशानसिंह एव डॉ जगमल सिंह	1987	प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली	एस एन प्रिंटर्स, दिल्ली

क्र सं.	नाम पुस्तक	लेखक	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशक	मुद्रक
17.	मणिपुर	डॉ जगमल सिंह	1987	अखिल भारती हिन्दी सस्था मच, नई दिल्ली-2	—
18	मीतै धनु	स देवराज व ध्वोहूलसिह काङ्जय	1987	पूर्वा साहित्यिक सास्कृ मच, इम्फाल	मार्डन प्रेम, इम्फाल (मणिपुरी भाषी कवियो की हिन्दी कविताओ का मणिपुरी भाषा मे अनुवाद सहित सकलन)
19.	मणिपुरी सस्कृति	डॉ. जगमल सिंह	1988	मनीषा प्रकाशन	मार्डन प्रेस, इम्फाल

टिप्पणी :—हिन्दी भाषी लेखको मे डा. जवाहर प्रसाद सिह के एक दर्जन उपन्यास एव कहानी सग्रह प्रकाशित हो चुके है तथा आचलिक उपन्यासो की शिल्प-विधा शोधप्रवन्ध भी। श्री ध्रुव मिश्र का "बिरवा के पास" कविता सग्रह है। डा कृष्ण नारायण प्रसाद मागध की पुस्तक असम प्रांतीय राम साहित्य आपके मणिपुर पधारने के बाद की रचना है। डा. जगमलसिह की लोक साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें इधर प्रकाशित हुई है। डा देवराज की "नई कविता" काव्य पर आलोचनात्मक पुस्तक एव तेवरी काव्य सकलन भी प्रकाशित हुई हैं। डा. रमाशकर नागर ने मणिपुर की सास्कृतिक झलक पुस्तक लिखी है।

प्रारम्भिक पाठ्य-पुस्तक

प्रारम मे जब 1925 के लगभग हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू किया गया तो थोक्चोम मधुचन्द्र सिंह जी व कैशाम कु ज बिहारी सिंह ने पाठ्य पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार कीं। बाद मे इनका प्रकाशन भी आरम्भ हुआ। श्री कैशाम कु ज बिहारी सिंह ने नागरी-बगला-असमी लिपि म प्रथम पुस्तक लिखी, जिसका नाम था "हिन्दी अहानबा"। आपकी दूसरी दो पुस्तकें हैं —'साहित्यपरें अहानबा' और 'साहित्य परें अनिशुबा'। श्री कैशोम ही—हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के प्रथम रचयिता माने जा सकते हैं।

श्री कैशोम की निम्न पुस्तकें भी उपलब्ध है .—

—राष्ट्र लिपि-भाग 1 से तीन
प्र चित्रागदा प्रेस, इम्फाल
भाषा मणिपुरी किन्तु देवनागरी लिपि

—राष्ट्रभाषा प्रारम्भिक बोधिनी परिचय (1949)
प्र चित्रागदा प्रेस, इम्फाल

—हिन्दी मणिपुरी पहली (हिन्दी मणिपुरी अहानबा) प्र चित्रांगदा प्रेस, इम्फाल

निम्न दो पुस्तकें मुझे देखने को मिली हैं जिन पर केवल लेखक एव पुस्तक का नाम है, न प्रकाशन वर्ष दिया गया है और न ही प्रकाशक या मुद्रक का नाम।

1 पाठ्य पुस्तक प्राथमिक – ले अ निपामचा सिंह तथा

2 पाठ्य पुस्तक प्राथमिक तथा अनुवाद ले पी कौरटाइ सिंह

एक सूचना डॉ देवराज ने और दी कि स्व हिजम् विजयसिंह ने *एक व्याकरण तथा एक पाठ्य पुस्तक लिखी थी।* पुस्तकें हिन्दी शिक्षण हेतु थीं, किन्तु उनमे मणिपुरी भाषा एव बगला-असमी लिपि का भी देवनागरी के साथ प्रयोग किया गया था। उन्ही की सूचना के आधार पर स्व इबु नितार्इ सिंह ने आधुनिक हिन्दी व्याकरण नामक पुस्तक लिखी थी।

श्री हि विजोय सिंह की निम्न लिखित पुस्तको का विवरण भी प्राप्त हुआ है ·

1. प्रेक्टिकल हिन्दी ट्रासलेशन एण्ड कम्पोजिशन (प्रथम सस्करण 1958) प्र स्टूडेंट स्टार
2. प्रत्यक्ष पद्धति हिन्दी पहली पुस्तक (छठा सस्करण 1980) प्र श्याम सुन्दर सिंह इम्फाल
3. *सुबोध हिन्दी व्याकरण (आठवा सस्करण 1981) प्र देवव्रत सिंह*

श्री छत्रध्वज शर्मा

आपने हिन्दी मणिपुरी मे कई पुस्तकें लिखीं जो पाठ्य पुस्तकें थी और दोनो भाषाओ को सीखने मे सहायक थी। पुस्तको मे देवनागरी एव बंगला-असमी दोनो लिपियो का प्रयोग करके सुगम बनाया गया था। यथोपलब्ध पुस्तक सूची :

1. हिन्दी ट्रासलेशन एण्ड कम्पोजिशन भाग 1 से 3
2. राष्ट्रभाषा मित्र
3. जातीय बाल साहित्य
4. गिनती और अर्जी
5. हिन्दी अहानवा
6. राजभाषा प्रवोधिनी
7. मणिपुरी हिन्दी ट्रासलेशन कम्पोजिशन
8. कवि श्री माला : डा. कमल की कविताओ का अनुवाद
9. हिन्दी व्याकरण अहानबा (1952)

शर्मा जी ने अनेक पाठ्य पुस्तकें हिन्दी प्रचारार्थ लिखी किन्तु आज उनकी प्रतियाँ प्रकाशन वर्ष आदि के सम्बन्ध मे सूचना उपलब्ध नहीं है।

श्री एल. नारायण शर्मा

1. हिन्दी व्याकरण प्रदीप भाग 1 से 3 (1964)
2. खुलोइवा (सुगम) मणिपुरी हिन्दी अनुवाद (1968)
3. हिन्दी मणिपुरी अंग्रेजी का स्वयं शिक्षक भाग 1 व 2 (1966)

इनके अतिरिक्त अनेक मणिपुरी पुस्तकें और चार द्विभाषी तथा त्रिभाषी कोशो का सम्पादन किया है। सभी पुस्तकें स्वंय ने प्रकाशित की हैं।

मुद्रक : नारायण प्रिंटिंग वर्क्स, इम्फाल

श्री एल नारायण शर्मा की पुस्तकें भी मणिपुरी एव हिन्दी भाषी लोगो के लिए दोनो भाषाओ का ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से उपयोगी हैं।

संप्रति कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें :

1. हिन्दी शिक्षण माला (भाग 1) कक्षा छः
   लेखक : डॉ. टी कुंजकिशोर सिंह,
   श्री एच. गौरचन्द्र शर्मा,
   डॉ. एस. तोम्बासिंह तथा
   डॉ. वाङजम इबोहल सिंह
   प्र पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली (मार्च 1981)
2. राष्ट्रभारती—कक्षा सात
   लेखक : डॉ ए. दीनमणि सिंह
   श्री प्रभाकर द्विवेदी
   प्र. सरस्वती सदन, नई दिल्ली

3 हिन्दी शिक्षणमाला : कक्षा 8
लेखक : डॉ टी कु ज किशोरसिंह
डॉ नाउजम इबोहलसिंह

सम्प्रति कक्षा दस की पाठ्य पुस्तक :

हिन्दी एलिमेंटरी एव एडिशनल हेतु) हिन्दी चयनिका (1981)
सम्पादन डॉ लाल जी शुक्ल
डॉ. जगमलसिंह
श्री अ कृष्ण मोहन शर्मा
प्र बोर्ड ऑफ सेकण्डरी एज्युकेशन मणिपुर, इम्फाल के लिए नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित

(श्री के. वाय शर्मा 'मणिपुरी' जन्म : 1 सितम्बर 1936)

आपने हिन्दी की बहुत सेवा की है। इनके द्वारा रचित पाठ्य-पुस्तकें निम्नलिखित हैं :—

1 बाल हिन्दी प्रबोधिनी-भाग एक से तीन
2 बाल हिन्दी व्याकरण-भाग एक से तीन

वीर टिकेन्द्रजीत नाटक के अतिरिक्त देशभक्त पावना ब्रजवासी आपका दूसरा ऐतिहासिक नाटक है, जो प्रेस में है। आपका कहानी सग्रह "बुढ़ कही का" भी शीघ्र प्रकाश्य है। आप 1968 से राजकीय शिक्षण प्रशिक्षण सस्थान, इम्फाल में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। उरिपोक हिन्दी विद्यालय के सचालन का भार आप अवैतनिक सचालक के रूप मे निभा रहे हैं। मणिपुर हिन्दी परिषद और मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रचार कार्य में भी आप सक्रिय सहयोग देते है। सभी हिन्दी कार्यक्रमों में आपकी उल्लेखनीय भूमिका रहती है।

शर्मा जी ने 'माडर्न मेथड हिन्दी मणिपुरी ट्रासलेशन भाग एक से तीन", तीन भाषाओं का (हिन्दी, इगलिश व मणिपुरी) का प्रयोग करते हुए लिखी हैं। ये तीनो पुस्तकें मणिपुरी भाषी तथा हिन्दी भाषी लोगों के हिन्दी-मणिपुरी सीखने के लिए बहुत ही उपयोगी हैं।

*श्री हिमाचार्य शर्मा जी द्वारा हिन्दी प्रचार सभा से प्रकाशित पाठ्य-*पुस्तक सूची तथा मणिपुर हिन्दी परिषद से प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों की सूची सस्थाओं के परिचय के साथ दी जा चुकी है। मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की दो पुस्तकों का भी अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है।

मणिपुर हिन्दी एकादमी, इम्फाल से 'निबध कौमुदी' भाग 1 का प्रकाशन किया गया। एकादमी एक सहकारी सस्थान है। कॉलेज एवं महाविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन की योजना है।

डॉ चन्द्रेश्वर दुबे तथा डॉ. एस. तोम्बा सिंह ने पद्य सौरभ नामक पाठ्य पुस्तक का संपादन किया। यह कॉलेज के छात्रों की दृष्टि से तैयार की गई पुस्तक है। डॉ. चन्द्रेश्वर दुबे ने अभिनव हिन्दी व्याकरण भाग एक से तीन (माध्यमिक स्तर) तथा हिन्दी व्याकरण ज्योति भाग एक से चार (विश्वविद्यालय स्तर) पुस्तकों की रचना की।

श्री नीलवीर शास्त्री जी ने सरल हिन्दी व्याकरण भाग एक व दो की 1960 में रचना की तथा ओ. के. स्टोर ने इन्हे प्रकाशित किया।

संदर्भ :

1. डब्लु युमजाओ सिंह: 1966: एन एरली हिस्ट्री ऑफ मणिपुर, प्र.- इम्फाल, डब्लु लालमणि सिंह एण्ड अदर ब्रदर्स, मोइराङ मयुम लैकाइ, सगोलबंद
2. (क) ग्रियर्सन, सरजॉर्ज ए.— लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, तृतीय भाग, पृ. 20
   (ख) चटर्जी, एस. के.:— "मणिपुरी लिटरेचर" आदिवासी दिल्ली, पृ 18 से 27
3. ओ. के. सिंह 1982: इथ्नो ग्राप्स इन मणिपुर. प्र. मुतुवा म्यूज़ियम, बुलेटिन न. दो, पृ. 1-2
4. (क) डाल्टन, इ. टी.: 1978 : ट्राइबल हिस्ट्री ऑफ इस्टर्न इण्डिया, पृ. 49
   (ख) एम. कोबा व डब्लु गुलामजात : 1962 : बामोन खुनतोक
5. (क) सिंह एल. इबूङोहल एवं एन. खेलचंद्र : 1967 : चैथरोल कुम्बाबा, इम्फाल
   (ख) राय ज्योतिर्मय : 1958 : प्र. कलकत्ता, ईस्टलाइट बुक हाउस, 20 स्ट्राड रोड
6. एल. इबुङोहलसिंह . 1963 : इंट्रोडक्शन टु मणिपुर : प्र. इम्फाल, स्टुडेंट्स स्टोर, पावना बाजार
7. जे राय-उपरिवत्
8. राजकुमार झलजीत सिंह : 1985 : पीपुल्स इनटू मणिपुर : इम्फाल राजकुमार पब्लिकेशन्स, मू.
9. डॉ. देवराज : सितम्बर 1985 : सर्वप्रिय : मणिपुर में हिन्दी, नई दिल्ली
10 पी गुणिन्द्र सिंह : 1983 : मणिपुरी न्युमिसमेटिक्स : प्र -इम्फाल, मुतुआ म्यूजियम
11. आर. के. सनाहलसिंह : 1980 : मणिपुरगी निथौशिंगी रचना : इम्फाल

12 एल इबूडोहन सिंह। उपरिवत, पृ 208

13 राजकुमार सनाहल सिंह (सपादक) 1963 चिठ्याइखोम्बा महाराज गंगा चस्वा : इम्फाल

14. जे राय-उपरिवत्

15. आचार्य राधागोविन्द थोडाम अक्टूबर 1985 वीर शिरोमणि पाओना ब्रजवासी मणिपुर हिन्दी परिषद् पत्रिका, पृ 7 इम्फाल मणिपुर हिन्दी परिषद्

16 (क) सर जेम्स जानस्टोन 1971 मणिपुर एण्ड नागा हिल्स प्र विवेक पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ 71 तथा 237 (मूल 1896 ई मे लदन से)

(ख) श्रीमती इथेल एटी सी ग्रिमवुड 1891 ई माई थ्री इयस इन मणिपुर, लदन, पृ 27

17 डॉ देवराज-उपरिवत

18 एल इबूडोहन सिंह एव खेलचद्र सिंह 1967 'चैथरोल कुम्बाबा ' पृ 56

19 डा एम कीर्ति सिंह 1980 रिलिजियस डेवलपमेंटस इन मणिपुर इन दा एटिथ एण्ड नाइनटिंथ सेंचुरीज प्र इम्फाल, मणिपुर स्टेट कला अकादमी, पृ 185

20. श्रीगंगाशरण सिंह (सम्पादक) : 1982 राष्ट्र भाषा प्रचार का इतिहास प्र नई दिल्ली हिन्दी सस्था सघ पृ 218

21. उपरिवत

22 मणिपुर मे राष्ट्रभाषा प्रचार का सक्षिप्त इतिहास (सभवत) 1960 प्रकाशक : मणिपुर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति इम्फाल, पृ 2

23. डॉ एम होरम 1977 सोशियल एण्ड कल्चरल लाइफ आफ नागाज प्र बी आर पब्लिशिंग कारपोरेशन दिल्ली पृ 105 □

2. राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से मणिपुर में हिन्दी की भूमिका

मणिपुर मे हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा के विवेचन से यह सिद्ध हो जाता है कि हिन्दी ही नही हिन्दी से पूर्व सस्कृत तथा विभिन्न बोलियो और उपभाषाओं ने मणिपुर को भारत की सस्कृति से जोडने की भूमिका निभाई है। मणिपुर, जहा की भाषा आर्य-परिवार की नही है और जहा पहुँचना बीसवी शताब्दी के अत मे भी कठिन कार्य है, का सम्पर्क देश के अन्य भागो से स्थापित करने के लिए भाषा एक अनिवार्य माध्यम रही है। चारो ओर से ऊची-ऊची पर्वत शृ खलाओ से घिरा यह प्रदेश प्रकृति की गोद मे एकाकी रह जाता किन्तु महाभारत काल से सस्कृत भाषा ने इसको भारत से जोडा है।

राष्ट्रीय एकता स्थापित करने मे हिन्दी ने पन्द्रहवी शताब्दी से महत्व-पूर्ण भूमिका निभाई है। निस्सदेह उस समय हिन्दी या हिन्दुस्तानी शब्दो का प्रचलन नही था, किन्तु मैथिली, ब्रज आदि के माध्यम से मणिपुर का जन-जीवन भारत के अन्य भागो से जुडा। ब्राह्मण प्रव्रजन के कारण इन भाषाओं के माध्यम से मणिपुर का भारत से सपर्क हुआ। ब्रज व अन्य तीर्थ स्थानो की यात्रा के लिए इन भाषाओ के अतिरिक्त मणिपुर से जाने वाले तीर्थ यात्रियो के लिए विकल्प ही क्या हो सकता था? महाराजा गरीब निवाज (सन् 1709-48) की पुत्री प्रथम मणिपुरी महिला थी जिसने वृन्दावन की यात्रा की थी।[1] सभव है कि इस महाराजकुमारी की यात्रा से पूर्व भी मणि-के पुरुषो ने भी तीर्थ-यात्राएं की हो, किन्तु इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उनके पश्चात् मणिपुर के लोग निरतर गगा-यात्रा पर जाने लगे। इन तीर्थ-यात्राओ मे निश्चय ही हिन्दी की पूर्व भाषाओ का प्रयोग किया गया होगा और मणिपुर व भारत के अन्य भागो को जोडने का कार्य इन भाषाओ के माध्यम से सभव हुआ। मणिपुर के अनेक राजा-महाराजाओ के द्वारा जीवन के अतिमकाल मे तीर्थ स्थानो पर जाकर रहने के ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है, जो मणिपुर और भारत ऐक्य के साक्ष्य हैं। वृदावन मे तथा राधाकु ड मे मणिपुरी लोगो की बस्ती और स्थायी निवास इस बात के प्रमाण है कि वे कई पीढियो से इन धार्मिक स्थलो से जुडे हुए हैं तथा 'ब्रजबुली' के माध्यम से ये देश के अन्य भागो से जुडे हैं। आज भी वृदावन

तथा राधाकु ड की यात्राए की जाती हैं तथा यहाँ के निवासी अपने स्थायी निवास स्थानो की देखभाल के लिए अवसर वहा जाते है। निश्चय ही व्रज-बुली मे पद, भजन आदि के द्वारा ही यह भावात्मक एकता सभव हो सकी है। मणिपुर के बाहर (बगाल एव वृदावन मे) अनेक मणिपुरी स्त्री-पुरुष गए। उन्होंने वहां वैष्णव भक्ति के प्रचार-प्रसार, पुनरुत्थान मे महत्वपूर्ण योग दिया। हिंदी भाषा धर्मप्रचार की यात्राओं की ओर पूजा-पाठ की भाषा रही। आज भी मदिरो मे तथा विभिन्न उत्सव-पर्वों के अवसर पर विद्यापति के पद गाए जाते हैं और व्रजबोली के पद भी।

महाराज गरीब निवाज पामहैबा के पिता चराइरौंगबा (1697-1706) द्वारा यज्ञोपवीत धारण करने के ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं।[2] निश्चय ही यज्ञोपवीत के साथ पूजा-पाठ एव अनुष्ठान हुए होंगे, जिनकी भाषा व्रज, अवधी या मैथिली के साथ सस्कृत रही होगी। परिणाम स्वरूप मणिपुरी मे इन भाषाओ के शब्द तत्सम एव तदभव रूप मे उपलब्ध है। सन् 1717 से 37 ई. तक महाभारत और रामायण के अनेक सर्गो-अध्यायो का मणिपुरी मे अनुवाद किया गया। इन अनुवादो से मणिपुरी भाषा मे सस्कृत तत्सम शब्दो की भरमार है। महाराज गरीब निवाज (1704-48) ने स्वय "लक्ष्मी चरित" का मणिपुरी म अनुवाद किया था। सस्कृत सीखने के लिए निश्चय ही ये विद्वान या तो स्वय हिन्दी प्रदेशों में गए होंगे या सस्कृत जानने वाले पण्डित हिन्दी प्रदेशो से मणिपुर मे आए होगे, जिनकी भाषा अवधी, व्रज आदि रही होगी। इस प्रकार मणिपुरी भाषा और सस्कृति को भारत के अन्य भागो से जोडने का कार्य भी भाषा के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। रामानन्दो व निम्बार्क सम्प्रदायो के प्रचारक भी मणिपुर म अठारहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे धर्म प्रचार हेतु गए थे।[3] इन धर्म प्रचारको ने भी धर्म के साथ हिन्दी की बोलियो के साथ ही मणिपुर को भारत की सभ्यता एव सस्कृति से जोडा।

गरीब निवाज के शासनकाल मे गोपालदास नामक महन्त ने मणिपुर मे धर्म प्रचार किया था। परिणाम स्वरूप सिक्को पर सस्कृत भाषा के शब्द देवनागरी भाषा म उपलब्ध होते हैं। ये शब्द और लिपि मणिपुर को भारत से जोडने का सशक्त माध्यम बनी। महाराजाओ की प्रार्थनाओ और मणिपुर के भक्ति साहित्य पर व्रजबोली का प्रभाव स्पष्ट है। महाराज भाग्यचन्द्र के शासनकाल मे प्रचलित रासनृत्य, सगीत, व गान व्रज सस्कृति एवं भाषा की देन हैं।

हिन्दी अर्थात् तत्कालीन भारतीय भाषाओ ने वस्तुत पन्द्रहवी शताब्दी से ही मणिपुर को मुख्य राष्ट्रीयधारा से जोडने मे मुख्य भूमिका निभाई।

परम्परा मध्यकाल में प्रवाहित होते हुए आधुनिक काल तक अक्षुण
। हिन्दी और व्रजबोली व्रजप्रदेश के गोस्वामियों, धर्म-गुरुओं से पत्राचार
भी माध्यम रही तथा उन गोस्वामियों ने इन्ही भाषाओं के पदों, भजनों
र उपदेशों द्वारा मणिपुर के लोगों को कृष्ण भक्ति परम्परा की शिक्षा-
क्षा दी। आज भी मणिपुर से जो भक्त व्रज जाते हैं, हिन्दी भाषा का
न उनके लिए सिद्ध होता है। व्रज ही क्यों विभिन्न तीर्थ स्थानों पर
णिपुरी तीर्थ यात्री देखे जाते हैं, जिनको हिंदी धर्म संस्कृति से जोड़ने का
र्य करती है।

इस सम्बन्ध मे डॉ देवराज का मत देखिये—"मणिपुर के राजा वैष्णव-
त में दीक्षित हो गए। इससे राधाकृष्ण और उनके माध्यम से भारत की
ल सांस्कृतिक धारा इस राज्य म बहने लगी।

"इस धार्मिक सांस्कृतिक जागरण का एक विशेष पहलू है—तीर्थ यात्राओं
ा आयोजन। श्री राधा और कृष्ण को अपना आराध्य मानने वाले लोग
थुरा-वृंदावन के उन क्षेत्रों के दर्शन करना अपना परम सौभाग्य मानते थे,
हां राधा कृष्ण ने अपनी लीलाएं संपन्न की थी। जो साधन सम्पन्न थे, वे
भी-कभी प्रतिवर्ष इस यात्रा मे भाग लेते थे। इसके अतिरिक्त यथासमय
रिद्वार, काशी, प्रयाग, गया, नवद्वीप आदि की यात्राओं का क्रम भी चलता
हता था। मणिपुर के राजाओं द्वारा इनमें से कुछ तीर्थ-स्थानों पर बनवाए
ए मंदिरों और रास-मंडलों को आज भी देखा जा सकता है। इस प्रकार
ीर्थ-यात्राओं का यह आयोजन मणिपुर निवासियों को भारत की वैविध्य-
र्ण संस्कृति और व्रज तथा अवधी आदि भाषाओं के निकट संपर्क में लाता
ा। वे लोग जब अपने घरों को लौटते थे, तब उन्हें हिन्दी के इन रूपों का
रिचय प्राप्त हो चुका होता था और उनके मन म वृहत्तर भारत का चित्र
स्थापित हो चुका होता था।"[4]

वास्तव मे केवल यात्रियों के ही नहीं अन्य मणिपुर के निवासियों के मन
मे भी, क्योंकि य जब लौटकर आते थे तो अपने अनुभव उन लोगों को भी
सुनाते थे जो तीर्थाटन के लिए नही जा सकते थे। ये तीर्थ-यात्री हिन्दी एवं
भारतीय भाषाओं के विभिन्न शब्दों के साथ मणिपुर लौटते थे और वे शब्द
मणिपुरी भाषा मे तत्सम या तद्भव रूप मे आज भी सुरक्षित हैं। मणिपुर
पर्वतों से घिरा है तथा देश के अन्य भागों से पृथक है। यहां बहुत से ऐसे
व्यक्ति हैं, जिन्होंने रेल नही देखी है और बहुत से ऐसे हुए हैं, जो मणिपुर की
सीमा पार किए बिना और बिना रेल देखे ही संसार से विदा हो गए। ऐसे
लोगों के लिए तीर्थयात्रियों द्वारा लाई जाने वाली सूचनाएं राष्ट्रीय एकता
की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण थी, और हैं, इसका सहज ही अनुमान लगाया

जा सकता है। राष्ट्रीयता का एक देश का विराट चित्र भाषा के अभाव में मणिपुर के चारों ओर के ऊंचे पर्वतों को पार करके मणिपुर पहुँच जाता, यह संदिग्ध है।

बीसवीं शताब्दी में धर्म के साथ-साथ हिन्दी की दूसरी लहर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ मणिपुर में आई। इस लहर ने मणिपुर को भारत के साथ जोड़ने का अपूर्व कार्य किया था। 1927 ई. में श्री ललित माधव शर्मा तथा श्री बाँकेबिहारी शर्मा ने भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी के प्रयोग को देखते हुए मणिपुर में हिन्दी प्रचार का कार्यारंभ किया। उन लोगों ने हिन्दी को भारत से तथा स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ने की एक कड़ी मानकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार आरंभ किया। 1939 में श्री यमुना प्रसाद श्रीवास्तव जब हिन्दी प्रचार के उद्देश्य से मणिपुर पधारे तो थोक्चोम मधुसिंह ने उनका स्वागत किया। यमुना प्रसादजी केवल हिन्दी प्रचार के लिए मणिपुर नहीं आए थे। वास्तव में हिन्दी के माध्यम से वे मणिपुर को स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन से जोड़ने आए थे। इसीलिए उनके पीछे पुलिस लगा दी गई थी और मणिपुर में हिन्दी के प्रचार को देश-द्रोह का कार्य घोषित कर दिया गया था।[5] सन् 1940 ई में श्री अमृतलाल नानावटी व काका साहब कालेलकर इम्फाल पधारे थे। हिन्दी प्रचार के साथ ही इस तरह मणिपुर की जनता का स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बन्ध स्थापित हुआ। 1944 में केशाम कुंजबिहारीसिंह ने जिस समय मणिपुर में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य आरंभ किया तो हिन्दी के माध्यम से ही मणिपुर में भारत राष्ट्र की कल्पना जागी थी। 14 अप्रैल 1944 के दिन जब प्रथम बार मोइराङ में अंग्रेजी सेना को हटाकर आजाद हिन्द फौज ने तिरंगा लहराया तो मणिपुर में हिन्दी के प्रति लगाव बढ़ गया, क्योंकि आजाद हिन्द फौज की भाषा भी हिन्दुस्तानी थी। श्री कोइराङसिंह जो मणिपुर के कांग्रेसी नेता हैं और मुख्य मंत्री भी रहे, उनका संबंध उस समय आजाद हिन्द फौज से था। इनके अतिरिक्त भी तत्कालीन नेताओं ने हिन्दी के माध्यम से ही स्वतंत्रता संग्राम से मणिपुर को भारत से जोड़ा था तथा वे अपने भाषणों में हिन्दी सीखने के लिए लोगों को प्रेरणा दे रहे थे। उन दिनों मणिपुर में हिन्दी बहुत ही लोकप्रिय थी और जनता में हिन्दी सीखने का अपार उत्साह था। उस समय सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना से संपन्न लोग न केवल हिन्दी के पक्ष में वातावरण बना रहे थे बल्कि वे उसे स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में भी देख रहे थे। सन् 1930 के बाद मणिपुर में हिन्दी के राष्ट्र-भाषा रूप को लेकर व्यापक वाद-विवाद होने लगा था। 'डिबेटिंग क्लब" के माध्यम से श्री थोक्चोम मधुसिंह ने अनेक बार भारत में हिन्दी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए थे। वे सदा

इस बात पर जोर देते थे कि यदि राष्ट्रीय एकता और विकास के क्षेत्र में प्रगति करनी है तो हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में अपनाना होगा। इसी के परिणाम स्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारंभिक वर्षों में इस प्रान्त में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तेजी से हुआ तथा हिन्दी सीखने वालों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई। बाद के वर्षों में जब भारत सरकार का हिन्दी को राष्ट्र-भाषा एवं राजभाषा के रूप में स्थापित करने में शैथिल्य दिखाई दिया तब हिन्दी अध्ययन के प्रति लोगों ने उदासीनता अपनाई।

श्री द्विजमणिदेव शर्मा जो मणिपुर में कांग्रेस के संस्थापक हैं, उन्होंने मुझे बताया कि मैंने भारत को आजादी मिलते ही यह समझा कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है और मणिपुर के लोगों को हिन्दी सीखनी जरूरी है अतः तुरन्त मणिपुर-हिन्दी-अंग्रेजी शब्द कोश की रचना आरंभ कर दी और उनका शब्द कोश बाद में प्रकाशित भी हुआ। उस समय के नेताओं ने हिन्दी के माध्यम से ही राष्ट्रीय भावना ग्रहण की तथा राष्ट्रीय नेताओं से संपर्क स्थापित किए। पं. शिवदत्त शर्मा ने गांधीजी व विनोबाजी से मिलकर तथा उनके हिन्दी विषयक विचार जानकर ही मणिपुर में हिन्दी-संस्कृत के प्रचार का कार्य किया। संक्षेप में इतना ही कहना काफी होगा कि हिन्दी भाषा के माध्यम से न केवल स्वतंत्रता संग्राम की भावना मणिपुर में जन्मी बल्कि साथ ही राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय एकता की भावना भी पनपी।

जब 1980 के आस-पास मणिपुर में राष्ट्र विरोधी विद्रोही गतिविधियाँ अपनी चरमसीमा पर थीं, उस समय भूमिगत विद्रोही नेताओं ने कई बार आकाशवाणी के मणिपुर समाचार बुलेटिन के उद्घोषकों को पत्र लिखकर मणिपुरी भाषा समाचार बुलेटिन में हिन्दी-संस्कृत शब्दों का प्रयोग नहीं करने के लिए कहा और इस आज्ञा का पालन न करने पर इसके परिणाम भुगतने की बात भी कही थी। विघटनकारी शक्तियों ने भाषा को राष्ट्रीय एकता का प्रबल माध्यम मानकर ही ये पत्र लिखे थे। उनके ये पत्र हिन्दी भाषा के शब्दों को भी अलगाववादी प्रवृत्ति के लिए घातक सिद्ध करते हैं। इससे हम सहज ही यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस अहिन्दी भाषी प्रान्त में जहाँ विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय हैं, राष्ट्रीय एकता में हिन्दी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। मणिपुर में हिन्दी प्रचारक संस्थाओं एवं व्यक्तियों का एक ही उद्देश्य है कि मणिपुर जहाँ भारत विरोधी भावना प्रचारित की जा रही है और विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय हैं, उनका प्रतिरोध करते हुए एक हृदय हो भारत जननी के मंत्र का प्रचार-प्रसार किया जाए।

डॉ. एम होरम के कथन जिसका अन्यत्र उल्लेख किया जा चुका है,[6] से स्पष्ट है कि मणिपुर व नागालैंड के पर्वतीय लोगों के भारतीयकरण में

हिन्दी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने इसका सारा श्रेय हिन्दी फिल्मों को दिया है। जो भी हो, हिन्दी भाषा ही यहाँ भारतीयकरण की प्रक्रिया का सशक्त माध्यम है।

आज सारे देश में राष्ट्रीय एकता सकट ग्रस्त दिखाई दे रही है। हमें उसके अन्य अनेक कारणों की शोध के क्रम में भाषा पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि भारतीयकरण या राष्ट्रीय एकता की भावना का यह एक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दीतर प्रदेशों में भारत की मूलधारा से अलगाव की भावना एवं प्रवृत्ति मूलत एक राष्ट्रभाषा के प्रश्न को हल न कर पाने की हमारी असफलता का परिणाम है। मुझे यह कहने में कोई सकोच नहीं है कि यदि स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही हिन्दी को इन प्रदेशों के निवासियों की भाषा के साथ जोड दिया जाता, पढ़ाया जाता और राजभाषा के रूप में प्रयोग किया जाता तथा इनकी भाषाओं के लिए रोमन लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि का प्रयोग आरभ कर दिया जाता तो भारत की मूल चिन्तनधारा से अलगाव उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं था। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होता कि सारे देश के नागरिकों के बीच सवाद का एक माध्यम विकसित हो जाता और जनता में ही राष्ट्रविरोधी तथा विघटनकारी शक्तियों से जूझने की शक्ति विकसित हो जाती। आज स्थिति यह है कि हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी के प्रति साम्प्रदायिक-दृष्टि पनपा दी गई है। आज जबकि कुछ शक्तियाँ हिन्दी विरोधी प्रचार में इन क्षेत्रों में सलग्न है, आवश्यकता इस बात की है कि उनको बेनकाब किया जाए तथा राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार को गति दी जाए तथा रोमनलिपि के स्थान पर जन जातीय भाषाओं के लिए देवनागरी को अपनाया जाए। मणिपुर ही नहीं समूचे हिन्दीतर प्रदेशों को हिन्दी भाषा के माध्यम से ही भारत को एकता के सूत्र में बाधा जा सकता है। अभी भी समय है कि भाषा रूपी अस्त्र का प्रयोग एकता स्थापित करने के लिए किया जाए।

सदर्भ .

1. एल. इबूडोहलसिंह (द्वितीय सस्करण 1963, प्र. एस बाबूधानसिंह, सगोलबद, इम्फाल) *इट्रोडक्शन टू मणिपुर, पृ. 216,*
2. मणिपुरी लैंग्वेज, लिटरेचर एण्ड कल्चर (1970) मणिपुर साहित्य *परिषद, इम्फाल, पृ 34.*
3. (क) डॉ के बी सिंह (1963) मणिपुरी वैष्णविज्म : ए सोशियोलॉ-*जिकल इण्टरप्रिटेशन—*

   सोशियोलोजिकल बुलेटिन 12 (2) पृ 66-73.

(ख) डॉ सरोज नलिनी पैराट (1980)—दी रिलीजन ऑफ मणिपुर, पृ. 135

4 डॉ देवराज—(सितम्बर 1985) सर्वप्रिय, पृ 7

5. राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास—(1982) अखिल भारतीय हिन्दी सस्था सघ, नई दिल्ली, पृ. 218

6 डॉ. एम होरम—(1977) सोशियल एण्ड कल्चरल लाइफ ऑफ नागाज, पृ 105

3 मणिपुर में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

मणिपुर मे हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रूप मे कब से प्रयोग किया जाता है ? इस प्रश्न का उत्तर खोजने हेतु कुछ ऐतिहासिक तथ्यो का सहारा लेने के अतिरिक्त कोई विकल्प नही है। मणिपुरी इतिहास और भाषा साहित्य के इतिहास के प्राचीनकाल के सम्बन्ध मे भी विशेष जानकारी नही है, इस स्थिति मे हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयोग कब से हुआ, कहना कठिन है। उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यो के आलोक मे यहाँ हिन्दी के सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयोग को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जाएगा।

मणिपुर की भाषा मणिपुरी है जिसको 'मैतैलोन'' कहा जाता है। भाषा-वैज्ञानिको मे मणिपुरी भाषा को चीनी-तिब्बती भाषा परिवार के उप-कुल तिब्बती-बर्मी के अन्तर्गत रखा है। इसको तिब्बती-बर्मी भाषाओ के बीच की कड़ी के रूप मे भी स्वीकार किया गया।[1] डॉ. एस. के चटर्जी ने मणिपुरी या मैतैलोन को तिब्बत-बर्मी भाषा परिवार की भाषा ही माना है।[2] डॉ. ग्रियर्सन की भी यही मान्यता है, किन्तु उन्होने इसको कुकी-चिन उप-कुल की भाषा मानने मे सन्देह प्रकट किया है।[3] यद्यपि इसके उप-कुल के निर्णय के सम्बन्ध मे अभी शोध की आवश्यकता है तथापि इतना स्पष्ट है कि मणिपुरी भाषा का आर्य भाषा परिवार से विशेष सम्बन्ध नही है। जबकि हिन्दी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। मणिपुरी भाषा और हिन्दी दो भिन्न भाषा परिवारो की भाषाए हैं।

मणिपुरी भाषा मे हिन्दी एवं सस्कृत शब्दों के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर इनके सम्पर्क का अन्वेषण किया जाए।

हिन्दी भाषा अर्वाचीन है जबकि सस्कृत प्राचीन अत सस्कृत भाषा का मणिपुर से सर्वप्रथम सम्पर्क होना स्वाभाविक है। मणिपुर के शासक अपने आपको अर्जुन का वशज मानते हैं। महाभारत के आदिपर्व एव अश्वमेध पर्व में मणिपुर का उल्लेख है। कुछ पश्चिमी इतिहासकारो ने तथा उनका अनुकरण करते हुए भारतीय इतिहासकारो ने भी महाभारत मे

वर्णित मणिपुर को वर्तमान मणिपुर से भिन्न माना है। इस ऐतिहासिक विवाद के उपरान्त भी डब्लु युमजाओ सिंह ने मणिपुर को ही महाभारत-कालीन मणिपुर सिद्ध किया है।[4] अतएव हम भी इस तथ्य को स्वीकार करना होगा। इस तथ्य के आधार पर मणिपुर का सम्बन्ध संस्कृत से सिद्ध होता है। महाभारत काल से यहाँ के निवासी संस्कृत बोलने वाले लोगों के सम्पर्क में आए। यहाँ के महाराजा चित्रवाहन गंधर्व जाति के थे। उनकी पुत्री का नाम चित्रांगदा था। अर्जुन एवं पाण्डवों के मणिपुर आने के पूर्व ही ये दोनों नाम संस्कृत प्रभाव को स्पष्ट करते हैं। मणिपुर का नाम मणिपुर भी इसी तथ्य को पुष्ट करता है। मणिपुर का मणिपुर नाम दिये जाने का कारण यह बताया जाता है कि जब गुरू सिदबा एवं देवी लैमारेन ने सृष्टि के समय मणिपुर की धरती पर देवी-देवताओं के साथ नृत्य किया तो रंगभूमि को प्रकाशित करने शेषनाग मणियाँ लेकर आया और उसने रंगभूमि को मणियों से आलोकित किया। इसी से इस प्रदेश का नाम मणिपुर रखा गया था। मणि शब्द भी संस्कृत का है और मणिपुर पर संस्कृत प्रभाव की प्राचीनता का द्योतक है।

मणिपुर का प्राचीन इतिहास काल-कवलित हो चुका है, अतः विस्तार से प्राचीनकाल में मणिपुर पर संस्कृत प्रभाव की चर्चा सम्भव नहीं है। जो साक्ष्य उपलब्ध हैं, उनके आधार पर सम्बन्ध एवं प्रभाव का अनुमान मात्र सम्भव है। 'फयें ताम्रपत्र' (आठवीं शताब्दी) भी इस प्रभाव की ओर संकेत करते हैं।[5] फयें ताम्रपत्र की भाषा और लिपि "मैतै" (मणिपुरी) है किन्तु इसमें विष्णु, हरि, गणेश आदि देवी-देवताओं के नामों का उल्लेख हुआ है। प्राचीनकाल के सम्बन्ध में इससे अधिक कुछ कहना सम्भव नहीं है।

पौरंतोन नामक व्यक्ति के मणिपुर में आने का उल्लेख मणिपुर के पुराणों में मिलता है। यह व्यक्ति कौनयोउबा (शासनकाल 568-658 ई॰ किन्तु प्रो॰ जे राय 700 ई॰ मानते हैं) के समय मणिपुर आया था। इम्फाल के पूर्व में 12 किलोमीटर की दूरी पर आन्द्रो नामक स्थान पर उसने अग्नि प्रज्वलित की थी। इतिहासकारों का अनुमान है कि पौरंतोन, पुरोहित शब्द का विकृत रूप है और यह कोई आग्रज रहा होगा। वह पश्चिम से आया था। उस समय वे अपने साथ अपनी भाषा व संस्कृति लेकर आए होंगे तथा उनके द्वारा बोले जाने वाली भाषा संस्कृत के शब्द आज मणिपुरी भाषा में इस प्रकार घुलमिल गए हैं कि उनकी पहचान खोज लेना अत्यंत कठिन कार्य है किन्तु मणिपुर के विद्वानों ने इस दिशा में कुछ कार्य अवश्य किया है। इनमें प्रमुख हैं डब्लु. युमजाओ सिंह तथा पं॰ अतोमबापू शर्मा।

एक अन्य प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक 'चिगुरम्बी खोङलुप' मे लिखा है कि मणिपुर का राजा नौथिखोङ जो सन् 663 ई. मे मणिपुर के राज सिंहासन पर आसीन हुआ था, ने पश्चिम देश की राजकुमारी से विवाह किया था । इस राजकुमारी का नाम चिगुरेम्बी दिया गया है, सभवत उसका मूल नाम बदल कर विवाह के पश्चात् यह मणिपुरी नाम दिया गया हो । चिगुरेम्बी खोङलुप का अर्थ है चिगुरेम्बी के साथी । इस पुस्तक मे उसके साथियो के नाम दिए गए हैं जो उसके साथ मणिपुर मे आए थे । ये नाम मूलरूप से सस्कृत के हैं, किन्तु इनका परिवर्तित रूप पुस्तक म दिया गया है। दस नामा की सूची श्री आर. के झलजीतसिंह ने प्रस्तुत की है लखी नाराल (लक्ष्मी नारायण)-सेवक, राम नाराल (राम नारायण) व लोखोनदास (लक्ष्मणदास)-सेवक, तुलसीराम-महावत, तुलसी-राम-रगरेज, हरि सुनार, हरि नाराल (हरि नारायण)-सईस, तापा-सेवक, अखुल ताओ-ग्वाला और काथो–मछली पकडने वाला ।[6]

इस सूची के अतिम तीन नामो की व्युत्पत्ति के सबध मे कुछ कहा नहीं जा सकता, किन्तु प्रथम सात नाम सस्कृत शब्दो के परिवर्तित रूप हैं जो सातवी शताब्दी म मणिपुर का भारतीय भाषाओ से सम्बन्ध सिद्ध करते हैं । निश्चय ही उस समय मणिपुर म पश्चिमी प्रदेशो की भाषा जानने वाले लाग रहे होगे, इसीलिए यह विवाह सभव हुआ होगा । सवाद के अभाव म विवाह सबध की कल्पना नही की जा सकती । विवाह के उपरान्त कम से कम य ग्यारह लोग जो मणिपुर म आए होंगे, उन्हे मणिपुरी का ज्ञान नही रहा होगा । निश्चय ही तत्कालीन पश्चिमी भाषा ही सपर्क भाषा के रूप मे प्रयुक्त हुई होगी । इन दो एतिहासिक साक्ष्या के आधार पर हिन्दी पूर्व की बोलियो का सातवी शताब्दी म सम्पर्क भाषा होना प्रमाणित होता है ।

फयेङ ताम्रपत्र (महाराजा खोङतेकचा 763-773 ई के) म श्री हरि, पुराण, पूजा, अवतार, गणेश, शिव, दुर्गा, ॐ, स्वाहा जैसे सस्कृत तत्सम शब्द मिलते हैं जिनसे सस्कृत और परवर्ती भाषाओं से मणिपुर का सबध प्रमाणित होता है । किन्तु आठवी से पन्द्रहवी शताब्दी तक का इतिहास अधकार पूर्ण है । अभी तक इस काल के इतिहास के सबध मे सामग्री उपलब्ध नही है

श्री आर के झलजीतसिंह ने उत्तरी बर्मा के पोग नामक राज्य के राजा द्वारा कियाम्बा नामक मणिपुरी राजा को (जो सन् 1467 म राजगद्दी पर बैठा था) विष्णु विग्रह भट करने का उल्लेख किया है । कियाम्बा द्वारा लामङदोङ नामक स्थान पर ईटो से विष्णु मदिर बनवाकर उसमे भानु-

नारायण नामक ब्राह्मण से तुलसीदल व क्षीर द्वारा पूजा कराए जाने का उल्लेख किया है।[7] स्पष्ट है कि उस समय मणिपुर में पश्चिमी बोलियां जिनसे हिन्दी का विकास हुआ, बोली तथा समझी जाती थी। यहाँ यह संकेत करना भी आवश्यक है कि कियाम्बा से पूर्व ही प्रव्रजकों के दल के दल मणिपुर आ रहे थे और प्रमुखरूप से ब्राह्मण। यह प्रव्रजन पन्द्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक निरन्तर हुआ है। ये आव्रजक उत्तरी भारत के कोने-कोने से आए। मणिपुरी भाषा मणिपुरी लोगों के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है, तो उस समय मणिपुरी भाषा का आव्रजकों को ज्ञान होना असंभव बात थी। वे अपनी-अपनी भाषाएं साथ लेकर आते थे, और आते ही वे मणिपुरी सीख लेते हों, यह संभव नहीं था। अतः संपर्क भाषा के रूप में उस समय भी हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग किया जाता होगा, यह निश्चित है। राजा कयाम्बा (कियाम्बा) के पूर्व भी मणिपुर में ब्राह्मण आते रहे होंगे, यह अनुमान श्री आर. के झलजीत सिंह का भी है,[8] क्योंकि भानुनारायण नामक ब्राह्मण खोजने पर मिल गया, इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मणों का आव्रजन उनके शासनकाल से पूर्व ही हुआ होगा।

आव्रजक ब्राह्मण मणिपुर में अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से संपर्क स्थापित करते होंगे। इनका प्रमुख कार्य पौरोहित्य रहा, किन्तु साथ ही ये लोग मणिपुर के विभिन्न भागों में स्थायी निवासी बनकर रहने लगे और विभिन्न प्रशासकीय कार्यों पर भी इनकी नियुक्ति की गई।[9] मणिपुर की प्रथानुसार इनके गोत्रों के नाम संस्कृत-हिन्दी भाषा के हैं और आज भी इनके वंशज उन्हीं नामों को अपने नाम से पूर्व लगाते हैं। नाम हिन्दी भाषा के संपर्क भाषा होने के साक्ष्य हैं। श्री झलजीत सिंह का विचार है कि कियाम्बा के बहुत पूर्व ही वैष्णव साहित्य का प्रचलन मणिपुर में हो गया था।[10] वैष्णव साहित्य का प्रचलन संपर्क भाषा के अभाव में कैसे संभव हो सकता था? उन्होंने आगे लिखा है कि कियाम्बा के समय वैष्णव साहित्य को बहुत महत्व दिया गया। उनके शासनकाल में विष्णु पुराण, गीता और भागवत की कहानियों का प्रचार हुआ और संस्कृत की शिक्षा आरंभ हो गई थी। 1598 ई के बाद तो रामायण, महाभारत, लक्ष्मण दिग्विजय तथा बलदेव तीर्थयात्रा का पाठ किया जाता था और श्रोताओं के सम्मुख उनका अनुवाद भी किया जाता था। 1709 ई के पश्चात् रामायण का अध्ययन बहुत गंभीरता से होने लगा और बहुत प्रचार हुआ। निश्चय ही संपर्क भाषा के अभाव में ये कार्य संभव नहीं थे।

सन् 1467 से 1697 ई तक मणिपुर के जितने राजा हुए, वे सब विष्णु भक्त थे। इनके शासन काल में भी भारत के विभिन्न भागों से

ब्राह्मण आव्रजन जारी रहा और मणिपुरी भाषा और संस्कृति का सश्लिष्ट रूप विकसित होता गया और यह सश्लेषण बिना सम्पर्क भाषा के सभव नही था। आव्रजक ब्राह्मण गुजरात, कानपुर, असम, सिलहट, नन्दग्राम, शातिपुर, बगाल बनारस, वृंदावन, तुलसी चौरा मठ, गगापुरी, प्रयाग, मथुरा, कृष्णनगर, उत्कल, त्रिपुरा, कन्नौज, लाहौर, ढाका, राधाकुण्ड, रायबरेली आदि स्थानो से आए थे। बिना सम्पर्क भाषा के आना व धर्म ग्रन्थो की व्याख्या करना एव सपर्क भाषा के अभाव मे असभव बात थी।

मणिपुर के राजा मयाइबा उर्फ खङेम्बा (सन् 1557-1652 ई.) ने अपने राज्यकाल मे अपने भाई सनातन व कछार के राजा को पराजित किया था। उनको पराजित करके उसने बहुत से मुसलमान और निम्न जाति के हिन्दुओ को बदी बनाया था। उन बदियो को खङेम्बा ने मणिपुर में बसने दिया था। "निश्चय ही ये बन्दी सैनिक भी अपने साथ पश्चिमी प्रदेशो की भाषा लेकर आए होगे। इन ऐतिहासिक तथ्यो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पन्द्रहवी से सत्रहवी शताब्दी के मध्य *हिन्दी की बोलियो का प्रचलन मणिपुर मे हुआ था तथा उस समय से ही* हिन्दी इन प्रव्रजित लोगों के लिए सपर्क-भाषा के रूप मे काम आने लगी थी। बिना सपर्क-भाषा के इन प्रव्रजित लोगो एव स्थानीय लोगों के बीच विचार-विनिमय की सभावना ही नहीं थी और विचार विनिमय की भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही रही होगी।"[11]

अठारहवी शताब्दी के ऐतिहासिक साक्ष्य तो हिन्दी पूर्व की बोलियो के सम्पर्क भाषा होने के तथ्य को प्रमाणित करते हैं। महाराजा गरीब निवाज (1709-48 ई) की पुत्री ने वृंदावन की यात्रा की थी।[12] 'चैथरोल कुम्बाबा' (मणिपुर का हस्तलिखित इतिहास) मे मणिपुरी लोगो द्वारा गगा यात्रा का उल्लेख हुआ है।[13] डॉ सरोज नलिनी पैराट ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है।[14] इन यात्राओ के अतिरिक्त महाराजा गरीबनिवाज चित्तशाही (1748-52 ई.), गौरश्याम (1753-59 तथा 1762-63 ई.), जयसिंह उर्फ भाग्यचद्र (1759-62 तथा 1763-98 ई) तथा लावण्यचद्र उर्फ हर्षचन्द्र (1798-1801 ई) की मुद्राओ (सिक्को की इबारत) पर लिखे लेखो की भाषा सस्कृत है और लिपि देवनागरी है। ये मुद्राए हिन्दी के मणिपुर में सम्पर्क भाषा होने की कथा को मूक साक्षी हैं। बिना हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि के ज्ञान के मुद्राओ पर अकन सभव नही था। मणिपुर *से वृंदावन तक की लम्बी यात्रा मे हिन्दी ज्ञान के अभाव मे उत्पन्न होने* वाली कठिनाई का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। यह निश्चित है कि मणिपुर ही नहीं, मणिपुर से वृंदावन तक के प्रदेशो मे भी हिन्दी भाषा सपर्क

भाषा रही होगी। उस समय यातायात के साधन भी नहीं थे, ऐसी स्थिति में प्रत्येक प्रदेश से दिनभर चलने के पश्चात् विश्राम करना होता होगा, वहा खाने-पीने आदि की वस्तुओ तथा मार्ग के सम्बन्ध मे आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए एक समान (Common) भाषा का प्रयोग अनिवार्य रहा होगा और वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

महाराजा भाग्यचन्द्र के शासनकाल मे (हिन्दी पूव रूप) व्रज भाषा (जिसे यहा व्रजबुली कहा जाता था) तथा मैथिली समझी व बोली जाती थी। यदि ऐसा न होता तो प्रथम रास मे इन भाषाओ के गीतो का प्रयोग करना सभव ही नहीं था। तीर्थ स्थानो की यात्रा क्रम मे तो निरन्तर वृद्धि हुई ही। यात्राओ की वृद्धि सम्पर्क-भाषा के प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई है। अपने जीवन के अतिमकाल मे महाराजा भाग्यचन्द्र, उनके पुत्र व पुत्रियाँ भी गगा एव वृदावन यात्रा पर गए जो सपर्क-भाषा के ज्ञान के अभाव मे असभव बात है। महाराजा भाग्यचद्र व बिम्बावती मजुरी के भक्तिभाव पूर्ण पद भी इस बात के प्रमाण हैं कि हिन्दुस्तानी भाषा का इन्हें ज्ञान था।

18वीं शताब्दी में ही मणिपुर मे बिहार से भोजपुरी भाषा भाषी तेली मणिपुर मे आए थे। आज भी ये इम्फाल मे तेली पट्टी तथा मस्री पुखरीवस्ती मे बड़ी सख्या मे रहते हैं। मणिपुर के अन्य भागो म भी ये लोग बसे हुए हैं। इनकी मातृभाषा आज भी भोजपुरी है। इस विवेचन से अठारहवीं शताब्दी के मणिपुर मे अन्य प्रान्तो से सम्पर्क भाषा हिन्दी होने की बात सिद्ध हो जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी मे हिन्दी की सपर्क-भाषा के रूप मे भूमिका और अधिक बढ गई। सन् 1891 ई मे खोजोम युद्ध के सेनापति प्रसिद्ध वीर शहीद पावना व्रजवासी को बाल्यकाल मे ही व्रज भेज दिया गया था तथा वहीं उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी।[16] कहा जाता है कि वहीं से वे भरतपुर के महाराजा सूरजमल के यहाँ गए जहाँ उनको सैनिक शिक्षा दी गई। उनको बाद में सैनिक शिक्षा के लिए जयपुर भी भेजा गया।[17]

मणिपुर के अमर वीर शहीद टिकेन्द्रजीत सिह भी हिन्दी लिखना व पढना जानते थे। इसके ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध हैं। उन्नीसवीं शताब्दी मे ये दोनो महाराजकुमार भली-भाँति हिन्दी लिखना पढना जानते थे। युवराज टिकेन्द्रजीत सिह का व्रज के गोस्वामियो के साथ पत्र-व्यवहार हिन्दी मे होता था। उनके दो पत्र देवनागरी मे मय हस्ताक्षर, हिन्दी पते सहित दो लिफाफे मैंने श्री आर. के. सनाहल सिह (बी कॉम) के पास देखे हैं। 1891 ई मे 13 अगस्त को उन्हे फाँसी दी गई थी, उससे पूर्व उन्होंने अग्रेज सरकार को हिन्दी मे पत्र लिखे थे। इन्ही के समकालीन व 1891 ई के

स्वतंत्रता संग्राम में फाँसी पर चढ़ाए जाने वाले जनरल थांगल भी हिन्दी जानते थे तथा महाराज चन्द्रकीर्ति, शूरजचन्द्र व कुलचंद्र भी। इसके प्रमाण भी उपलब्ध हैं। ये प्रमाण तत्कालीन अंग्रेजों की पुस्तकों में देखे जा सकते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा लिखित पुस्तकों में यत्र-तत्र हिन्दी के सम्पर्क भाषा होने के प्रमाण उपलब्ध हैं। यद्यपि अंग्रेजों ने हिन्दी के बजाय हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग किया है। सर जेम्स जॉनस्टन जो मणिपुर नागालैंड में सन् 1877-1886 में पॉलिटिकल ऑफिसर रहे थे, ने अपनी पुस्तक "मणिपुर एण्ड नागा हिल्स" में अनुभवों का वर्णन किया है। इस पुस्तक में प्रसंगवश हिन्दी के सम्पर्क भाषा होने का उल्लेख हुआ है।

"वह (युवराज) अपने पिता की भाँति हिन्दुस्तानी बोल सकता था; किन्तु वे दोनों अंग्रेजी से अनभिज्ञ थे।"[18]

उन दिनों मणिपुर के सेनापति थाङल जनरल के विषय में सर जॉनस्टॉन ने लिखा है कि "थाङल के दुर्व्यवहार की सबसे बुरी बात यह थी कि वह वर्मी सदैसवाहकों के सम्मुख मणिपुरी में बोला जिसको वे समझते थे। बजाय इसके कि वह हिन्दुस्तानी में बोलता जिसको मेरे अतिरिक्त कोई नहीं समझ पाता।"[19]

उन्होंने (सर जॉनस्टॉन ने) अपनी विदाई के अवसर पर "कर्नल साहब बहादुर की जय" (पृ 269) नारे का भी उल्लेख किया है, जो हिन्दी का वाक्य है।

यद्यपि जॉनस्टॉन साहब ने हिन्दी भाषा के प्रयोग के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं कहा है, किन्तु इन तीनों उदाहरणों से आज के लगभग एक सौ वर्ष पूर्व मणिपुर में हिन्दी बोलने की बात प्रमाणित होती है।

श्रीमती इथेल सी क्लेर ग्रिमवुड ने अपनी पुस्तक "माई थ्री इयर्स इन मणिपुर" में भी हिन्दी के सम्बन्ध में प्रसंगानुकूल कुछ बातें लिखी हैं, जिनसे उस समय (1891 ई) मणिपुर में हिन्दी समझे जाने की बात प्रमाणित होती है।

श्रीमती ग्रिमवुड ने लिखा है कि जब वह अपने पति मिस्टर ग्रिमवुड (पॉलिटिकल एजेंट सन् 1888-91) के साथ मणिपुर पहुँची तो मणिपुर के राजकुमार उनके स्वागतार्थ आए। उन राजकुमारों में से सेनापति (वीर टिकेन्द्रजीत सिंह) ही हिन्दुस्तानी बोल सकते थे। अत. मेरे पति उनसे ही बात कर रहे थे।[20]

श्रीमती ग्रिमवुड ने अपनी इसी पुस्तक में शिलाँग से इम्फाल यात्रा के प्रसंग में लिखा है कि वहाँ मुझे दो खासी (जनजाति) लोग मिले। उनमें से एक तो बहुत ही अच्छी हिन्दुस्तानी बोल सकता था। (पृ. 108) इससे स्पष्ट है कि दोनों खासी हिन्दुस्तानी बोल सकते थे किन्तु एक बहुत अच्छी तरह से। स्पष्ट है कि उस जमाने में (1890 ई.) हिन्दुस्तानी स्थानीय लोगों से संवाद का साधन था।

इन तीन स्पष्ट उल्लेखों के अतिरिक्त भी श्रीमती ग्रिमवुड ने इम्फाल बाजार के महिला बाजार को 'बूढ़ी बाजार' कहा है जो हिन्दी शब्द है तथा उस समय भी (पृ. 234) प्रचलित था। और आज भी है। दूसरी बात उन्होंने यह भी लिखी है कि वे इस महिला बाजार की स्त्रियों से मिलती थीं। आते ही आते श्रीमती ग्रिमवुड मणिपुरी भाषा नहीं सीख पाई होंगी और निश्चय ही उनसे वह हिन्दुस्तानी के माध्यम से ही वार्तालाप करती होंगी। (पृ. 33)। इस बात से महिला बाजार की स्त्रियों का हिन्दी समझना-बोलना प्रकट होता है।

महाराजा शूरचन्द्र का उसी समय (1890) वृन्दावन यात्रा का निर्णय तथा अपने भाइयों व पर्याप्त सैनिकों के साथ वृन्दावन यात्रा करना सिद्ध करता है कि वे हिन्दुस्तानी जानते थे।

श्रीमती ग्रिमवुड ने अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए लिखा है कि जब हम रेजिडेंसी से निकल कर भागे तो भागने वालों में नौकर, बनिये तथा अन्य कुछ लोग थे, जो जहाँ भी रेजिमेंट जाती है, वहीं आकर एकत्र हो जाते हैं। (पृ. 238) यहाँ बनिये का उल्लेख महत्वपूर्ण है। बनिया शब्द राजस्थान के मारवाड़ी व्यापारी के अर्थ में रूढ़ हो गया है। आज भी प्रत्येक सेना के साथ जो खाने-पीने की वस्तुएं बनाने वाला कैंटीन होता है, उसके मालिक को बनिया कहा जाता है। ये अभी भी अक्सर राजस्थान के होते हैं और प्रथम विश्वयुद्ध से ही ये लोग सेना के साथ विदेशों तक में अपने कैंटीन लेकर गए थे। ग्रिमवुड के इस कथन से प्रयोजन इतना ही है कि कम से कम उस समय तो राजस्थान के लोग यहाँ अवश्य ही थे। मुझे 1969 ई. में एक मारवाड़ी बूढ़ी महिला मिली। मैं मणिपुर में हिन्दी सर्वेक्षण कर रहा था। बुढ़िया की आयु लगभग सौ वर्ष की थी उसका कहना था कि उसने 1891 ई. में वीर टिकेन्द्रजीत व थाङल जनरल को फाँसी पर चढ़ाए जाते देखा था। मैंने उससे पूछा कि जब इम्फाल आई थी तो आप मणिपुरी तो जानती नहीं होंगी फिर स्थानीय लोगों से वार्तालाप कैसे होता था। उत्तर में उन्होंने बताया कि हिन्दी बोलने पर लोग समझ भी जाते थे और टूटी-फूटी हिन्दी में उत्तर भी देते थे। तात्पर्य इतना ही है

कि सेना व व्यापार के माध्यम से भी यहाँ हिन्दी सम्पर्क भाषा की भूमिका निभाती रही है।

मणिपुर मे व्यापार के लिए हिन्दी भाषी प्रान्तो से 19 वीं शताब्दी मे पर्याप्त सख्या मे व्यापारी आए। राजस्थान व पजाब के व्यापारियो की प्रमुखता है, ये लोग हिन्दी भाषा के द्वारा ही प्रारम्भ मे सम्पर्क करते हैं, बाद मे धीरे-धीरे स्थानीय भाषा मणिपुरी भी सीख लेते हैं। सभी प्रांतो के व्यापारी मणिपुर मे हैं। स्थानीय लोगो को भी वाणिज्य और व्यापार के सिलसिले में 19 वीं शताब्दी से पूर्व भी मणिपुर के बाहर जाना आवश्यक था, अत वे भी हिन्दी का सपर्क-भाषा के रूप में प्रयोग करते रहे हैं और कर रहे हैं।

19 वी शताब्दी मे अग्रेजो की सेना मे अनेक हिन्दी भाषी सैनिक मणिपुर आए थे, जिन्हें 1891 ई के बाद अग्रजो ने यहाँ पुरस्कार स्वरूप भूमि दी थी। वे भी यहाँ के स्थायी निवासी बन गए।

20 वीं शताब्दी मे सपर्क भाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका और अधिक बढ़ गई। धर्म प्रशासन, वाणिज्य, आवागमन, तीर्थयात्रा, सेना, भक्ति-परक रचनाओ, राजनीति, सविधान, शिक्षा आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा मणिपुरी व उसके बोलने वालों के सपर्क मे आई और इसने सदैव सपर्क-भाषा का कार्य किया। 1902 ई से मणिपुरी छात्र बहुत बडी सख्या मे शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से निरन्तर हिन्दी प्रदेशो मे जा रहे हैं। वहाँ से वे हिन्दी पढकर लौटते रहे हैं। यहाँ विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि जो मणिपुरी विद्यार्थी दक्षिण भारत के हिन्दी स्कूल-कॉलेजो मे जाते हैं, उन्हें भी वहाँ विवश होकर हिन्दी पढनी पडती है क्योंकि दक्षिण की भाषाओ की उन्हें पूर्व जानकारी नहीं होती है और उन्हें एक आधुनिक भारतीय भाषा पढना अनिवार्य होता है। अत वहाँ हिन्दी भाषा को ही वे लोग विकल्प के रूप मे स्वीकारते हैं, क्योंकि मणिपुरी पढाने की वहाँ कोई व्यवस्था नहीं होती है। इसके साथ मणिपुर की सरकारी सेवा में जो उच्च पदो पर कार्य करते हैं, उन्हे भी हाईस्कूल स्तर की हिन्दी परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है, वरना उनको वार्षिक वेतन की वृद्धि नहीं दी जाती। इस प्रकार प्रशासनिक एव पुलिस आदि सेवाओ के लोगो को भी हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य है। फिर प्रशासनिक व पुलिस सेवा अधिकारियों आदि को प्रशिक्षण प्राप्त करने मणिपुर के बाहर हिन्दी प्रदेशो मे जाना होता है, जहाँ से वे हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त करके लौटते हैं।

सेना के कारण भी मणिपुर में सम्पर्क-भाषा हिन्दी रही है। 19 वीं शताब्दी से ब्रिटिश सेना की टुकडियाँ यहा रहती थी। उसके बाद 20 वी

शताब्दी में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान तो मणिपुर युद्ध क्षेत्र बना। उस समय मणिपुर मे भारी सख्या मे भारतीय सैनिक उपस्थित थे और वे मणिपुर की घाटी व पर्वतीय भागो मे फैले हुए थे। उसी समय बर्मा की ओर से आजाद हिन्द फौज यहा पहुँची थी और किंचित काल के लिए ही सही किन्तु मणिपुर को अपने अधिकार मे कर लिया था। आज भी आजाद हिन्द फौज के बचे हुए सैनिक यहा बसे हुए हैं और उनका कहना है कि जब 1944 ई. मे वे मणिपुर आए थे तो केवल हिन्दी ही जानते थे और उसी के माध्यम से उन्होंने स्थानीय लोगो से सम्पर्क स्थापित किया था। ब्रिटिश सेना के द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लेने वाले भारतीय सैनिकों का भी यही कहना है, जो उस समय इस मोर्चे पर लडे थे। विश्वयुद्ध के पश्चात् सेना के अतिरिक्त विभिन्न आरक्षीबल मणिपुर मे आते रहे हैं। बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश एव पजाब के आरक्षीबल यहाँ भूमिगत विद्रोही गतिविधियो के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए आते रहे हैं और आज भी कई दल यहाँ हैं जो स्थानीय जनता से दैनिक जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु हिन्दी भाषा के माध्यम से ही सम्पर्क करते हैं। भारतीय सेना तथा सीमा सुरक्षा बल भी इस सीमान्त क्षेत्र म सदा बडी सख्या मे रहता है। सेना तथा अन्य सुरक्षा बलों के बीच सवाद हिन्दी के माध्यम से ही सभव है। यहा से जल, स्थल एव वायुसेना मे तथा अन्य सुरक्षाबलो मे काफी लोग नौकरी करने जाते हैं, वहाँ स्थानीय भाषा का प्रयोग सभव नही। उनके बच्चे व परिवार के लोग वहा से हिन्दी बोलना, लिखना-पढ़ना भी सीख आते हैं। मणिपुर से पर्वतीयजन प्रथम विश्वयुद्ध मे "लेबर कोर" मे भरती होकर गए थे। इन्हें भरती करने का कार्य विलियम पैट्रिग्यु नामक स्काट ईसाई मिशनरी ने किया था।[21] इस तरह बीसवीं शताब्दी से ही पर्वतीय लोगो को सेना के माध्यम से हिन्दी भाषा की जानकारी मिली थी।

आज भी भारत के विभिन्न प्रदेशों से आने वाले नवागन्तुक स्थानीय लोगों से हिन्दी भाषा में ही सम्पर्क स्थापित करते हैं, चाहे वे अहिन्दी भाषी ही क्यो न हो। मणिपुर में बोझ ढोने वाले मजदूर या रिक्शा चालक हिन्दी भाषी क्षेत्रो से आते हैं, वे यहां दो चार वर्ष से अधिक नहीं टिकते हैं। हर बार नए मजदूर आते रहते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा भाषाओ का तनिक परिचय भी नहीं रहता है, फिर भी उन्हें जीविकोपार्जन मे कोई कठिनाई नही होती है जबकि उनका सीधा सम्पर्क स्थानीय लोगो से होता है। यही स्थिति यहा की बडी-बडी परियोजनाओ (लोकत्ताक प्रोजेक्ट, सिंदाह सिंचाई परियोजना आदि) में उड़िया एव दाक्षिणात्य मजदूरों की है जो स्थानीय लोगो से हिन्दी भाषा में सम्पर्क स्थापित करते

हैं। दक्षिण से मणिपुर में ईसाई धर्म प्रचारक, अध्यापक एवं नर्से भी मणिपुर मे आती हैं। ये लोग किसी हिन्दी भाषी के मिलने पर केवल अग्रेजी मे वार्तालाप करते हैं किन्तु स्थानीय लोगो से हिन्दी म। उल्लेखनीय है कि इन मिशनरियो की इम्फाल शहर के लगभग प्रत्येक गाव मे स्कूलें हैं, जिनमे लाखो बच्चे पढते हैं। हजारो अध्यापक दाक्षिणात्य हैं और कक्षा तीन से इन स्कूलो मे हिन्दी अध्यापन किया जाता है। अपने क्षेत्र मे चाहे ये लोग हिन्दी विरोधी हो परन्तु यहा ये लोग व्यावसायिक कारणों से हिन्दी का सपर्क भाषा के रूप मे प्रयोग करते हैं और पढाते भी हैं।

स्थानीय लोग जो शिक्षित हैं वे पहले कक्षा तीन मे आठ तक हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप में पढते थे और अब कक्षा छ से आठ तक। अत स्कूल मे पढने वाले बच्चो को हिन्दी भाषा का प्राथमिक ज्ञान तो हो ही जाता है। इसके साथ सेना, हिन्दी क्षेत्रो से आने वाले मजदूरो तथा सरकारी तथा गैर सरकारी प्रतिष्ठानो म काम करने वाले अधिकारियो से दैनिक जीवन मे सपर्क करना होता है और अशिक्षित स्थानीय लोग भी हिन्दी बोलने व समझने लगते हैं। यहा के कुशल बस, कार व ट्रक चालक मणिपुर से देश के विभिन्न भागो मे गाडियाँ लेकर जाते हैं तथा कुछ हिन्दी प्रदेशो म भी कुछ दिन नौकरी करते हैं, वे भी हिन्दी बोल व समझ लेते हैं। बाजार मे महिला व पुरुष दूकानदार, स्थानीय रिक्शा तथा टैक्सी चालक, घरो में काम करने वाली स्त्रियाँ व नौकर भी स्थानीय होते हुए भी व्यावसायिक कारणो से हिन्दी बोलते हैं। इधर कुछ वर्षों से हिन्दी प्रदेशो से मुसलमान धर्म प्रचारक दल भी समय-समय पर मणिपुर मे आते हैं जो हिन्दी-उर्दू भाषाओ के माध्यम से धर्म प्रचार करते हैं।

पाँच हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल, मणिपुर पब्लिक स्कूल, सैनिक स्कूल तथा केन्द्रीय विद्यालयो मे पढने वाले छात्रो को हिन्दी पढ़ना अनिवार्य है और वे दसवीं कक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप मे हिन्दी पढते हैं। 1927 ई से साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तथा मणिपुर हिन्दी परिषद् आदि स्वय सेवी सस्थाए भी मणिपुर के गाव गाव व नगर-नगर मे हिन्दी पाठशालाए या महाविद्यालय चलाती हैं जिनमें लाखो विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया है तथा हिन्दी की विभिन्न परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। मणिपुर मे हिन्दी के सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयोग मे इन लोगों का विशेष हाथ है। यहाँ हिन्दी अध्यापको के लिए दो प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं। पांच कॉलेजों मे बी ए तक हिन्दी शिक्षा का प्रबध है तथा एक कॉलेज में हिन्दी आनर्स की पढ़ाई भी कई वर्षों से होती रही है।

1980 ई से हिन्दी एम. ए की कक्षाए चलाई जा रही हैं। ब्रिज कोर्स मे भी हिन्दी पढाई जाती है। पी एच. डी उपाधि हेतु भी मणिपुर विश्व-विद्यालय मे शोध कार्य की व्यवस्था है। इन सब शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी की स्थिति स्थिर एव सबल होती जा रही है। यहाँ के हिन्दी अध्यापको को प्रशिक्षण क्रम मे केंद्रीय हिन्दी सस्थान, आगरा जाकर एक महीने के लिए रहना अनिवार्य है।

मणिपुर मे अनेक शिक्षण सस्थाए हैं, जो प्रतिवर्ष अपने विद्यालय को भारत भ्रमण पर भेजती हैं। ये विद्यार्थी जब मणिपुर व नागालैंड की सीमा पर स्थित माओ गौत्र पार कर लेते हैं तो उसके पश्चात् हिन्दी ही इनकी सपर्क भाषा बन जाती है। भ्रमणार्थ जाने वाले विद्यार्थी, उपचार के लिए जानेवाले रोगी या पर्यटन हेतु जाने वाले लोगो को माओ के बाद हिन्दी मे ही बातचीत करनी होती है।

आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी इन क्षेत्रो मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे अभूतपूर्व योग दिया है। इनके कार्यक्रमो के माध्यम से हिन्दी की लोक-प्रियता म निरन्तर वृद्धि हो रही है। दूरदर्शन के धारावाहिक तथा चित्रहार कार्यक्रम लोगो मे बहुत ही लोकप्रिय हैं। सब काम छोडकर लोग इन्हे नियमित रूप से देखते हैं। प्रतिदिन दूरदर्शन पर प्रयुक्त शब्दो म से स्थानीय लोगो को अरबी उर्दू शब्दो को समझने मे काफी कठिनाई होती है और सुबह बस मे या विश्वविद्यालय म तथा पडोसियो द्वारा खानदान, वफा जैसे शब्दो के मुझसे अर्थ पूछे जाते हैं। स्पष्ट है कि लोगो मे दूरदर्शन कार्यक्रम हिन्दी को लोकप्रिय बना रहे हैं।

दूरदर्शन तो हाल ही में आया है। वास्तव मे आकाशवाणी और हिन्दी फिल्मो ने हिन्दी की इस क्षेत्र मे लोकप्रियता मे वृद्धि की है। मणिपुर की राजधानी मे दस छविगृह हैं और कुछ कस्बों मे भी। इनमे से अधिकाश छविगृहो मे हिन्दी फिल्म दिखाई जाती हैं। हिन्दी फिल्मे और उनके गाने बहुत ही लोकप्रिय हैं। सडको पर बच्चों व किशोरों के मुह से हिन्दी फिल्मो के गाने और सवाद सुनने को मिलते हैं। जन्म, विवाह और श्राद्ध सस्कारों के अवसरो पर लाउडस्पीकर पर हिन्दी गीत दिन रात बजाए जाते हैं। प्रत्येक गली म रोज कहीं न कहीं आप हिन्दी फिल्मी गीत का बजता हुआ रेकार्ड सुन सकते हैं। आकाशवाणी के इम्फाल केन्द्र से सैनिक भाइयो के लिए प्रतिदिन तीस मिनट का फरमाइशी हिन्दी फिल्मी गीतो का कार्यक्रम दिया जाता है तथा अन्य लोगो के लिए केवल तीन दिन। प्रत्यक घर म जिसमे रेडियो है, ये दोनों कार्यक्रम अवश्य सुने जाते हैं। साथ ही फौजी भाइयों के अतिरिक्त फरमाइशी कार्यक्रम मे फरमाइश करने

हैं। दक्षिण से मणिपुर मे ईसाई धर्म प्रचारक, अध्यापक एव नर्से भी मणिपुर मे आती हैं। ये लोग किसी हिन्दी भाषी के मिलने पर केवल अग्रेजी मे वार्तालाप करते हैं किन्तु स्थानीय लोगो से हिन्दी मे। उल्लेखनीय है कि इन मिशनरियो की इम्फाल शहर के लगभग प्रत्येक गाव मे स्कूलें हैं, जिनमे लाखो बच्चे पढते हैं। हजारो अध्यापक दाक्षिणात्य हैं और कक्षा तीन से इन स्कूलो मे हिन्दी अध्यापन किया जाता है। अपने क्षेत्र मे चाहे ये लोग हिन्दी विरोधी हो परन्तु यहा ये लोग व्यावसायिक कारणो से हिन्दी का सपर्क भाषा के रूप मे प्रयोग करते हैं और पढाते भी हैं।

स्थानीय लोग जो शिक्षित हैं वे पहले कक्षा तीन से आठ तक हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप मे पढते थे और अब कक्षा छ से आठ तक। इन स्कूल मे पढने वाले बच्चो को हिन्दी भाषा का प्राथमिक ज्ञान तो हो ही जाता है। इसके साथ सेना, हिन्दी क्षेत्रो से आने वाले मजदूरो तथा सरकारी तथा गैर सरकारी प्रतिष्ठानो मे काम करने वाले अधिकारियो से दैनिक जीवन मे सपर्क करना होता है और अशिक्षित स्थानीय लोग भी हिन्दी बोलने व समझने लगते हैं। यहा के कुशल बस, कार व ट्रक चालक मणिपुर से देश के विभिन्न भागो मे गाडियाँ लेकर जाते हैं तथा कुछ हिन्दी प्रदेशो मे भी कुछ दिन नौकरी करते हैं, वे भी हिन्दी बोल व समझ लेते हैं। बाजार मे महिला व पुरुष दूकानदार, स्थानीय रिक्शा तथा टैक्सी चालक, घरो में काम करने वाली स्त्रियाँ व नौकर भी स्थानीय होते हुए भी व्यावसायिक कारणो से हिन्दी बोलते हैं। इधर कुछ वर्षों से हिन्दी प्रदेशो से मुसलमान धर्म प्रचारक दल भी समय-समय पर मणिपुर में आते हैं जो हिन्दी-उर्दू भाषाओ के माध्यम से धर्म प्रचार करते हैं।

पाँच हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल, मणिपुर पब्लिक स्कूल, सैनिक स्कूल तथा केन्द्रीय विद्यालयो मे पढने वाले छात्रो को हिन्दी पढना अनिवार्य है और वे दसवीं कक्षा तक अनिवार्य विषय के रूप मे हिन्दी पढते हैं। 1927 ई से साहित्य सम्मेलन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तथा मणिपुर हिन्दी परिषद् आदि स्वय सेवी सस्थाए भी मणिपुर के गाव गाँव व नगर-नगर मे हिन्दी पाठशालाए या महाविद्यालय चलाती हैं जिनमें लाखो विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया है तथा हिन्दी की विभिन्न परीक्षाए उत्तीर्ण की हैं। मणिपुर मे हिन्दी के सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयोग मे इन लोगों का विशेष हाथ है। यहाँ हिन्दी अध्यापको के लिए दो प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं। पाँच कॉलिजो में बी ए तक हिन्दी शिक्षा का प्रबध है तथा एक कॉलिज में हिन्दी आनर्स की पढाई भी कई वर्षों से होती रही है।

1980 ई से हिन्दी एम. ए. की कक्षाएं चलाई जा रही हैं। ब्रिज कोर्स मे भी हिन्दी पढाई जाती है। पी एच. डी उपाधि हेतु भी मणिपुर विश्वविद्यालय मे शोध कार्य की व्यवस्था है। इन सब शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी की स्थिति स्थिर एव सबल होती जा रही है। यहाँ के हिन्दी अध्यापकों को प्रशिक्षण क्रम मे केन्द्रीय हिन्दी सस्थान, आगरा जाकर एक महीने के लिए रहना अनिवार्य है।

मणिपुर मे अनेक शिक्षण सस्थाए हैं, जो प्रतिवर्ष अपने विद्यालय को भारत भ्रमण पर भेजती हैं। ये विद्यार्थी जब मणिपुर व नागालैंड की सीमा पर स्थित माओ गाँव पार कर लेते हैं तो उसके पश्चात् हिन्दी ही इनकी सपर्क भाषा बन जाती है। भ्रमणार्थ जाने वाले विद्यार्थी, उपचार के लिए जानेवाले रोगी या पर्यटन हेतु जाने वाले लोगो को माओ के बाद हिन्दी मे ही बातचीत करनी होती है।

आकाशवाणी और दूरदर्शन ने भी इन क्षेत्रो मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे अभूतपूर्व योग दिया है। इनके कार्यक्रमो के माध्यम से हिन्दी की लोकप्रियता मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। दूरदर्शन के धारावाहिक तथा चित्रहार कार्यक्रम लोगों मे बहुत ही लोकप्रिय हैं। सब काम छोडकर लोग इन्हे नियमित रूप से देखते हैं। प्रतिदिन दूरदर्शन पर प्रयुक्त शब्दों म से स्थानीय लोगो को अरबी उर्दू शब्दो को समझने मे काफी कठिनाई होती है और सुबह बस मे या विश्वविद्यालय म तथा पडोसियों द्वारा खानदान, वफा जैसे शब्दो के मुखसे अर्थ पूछे जाते हैं। स्पष्ट है कि लोगो मे दूरदर्शन कार्यक्रम हिन्दी को लोकप्रिय बना रहे हैं।

दूरदर्शन तो हाल ही में आया है। वास्तव मे आकाशवाणी और हिन्दी फिल्मो ने हिन्दी की इस क्षेत्र मे लोकप्रियता मे वृद्धि की है। मणिपुर की राजधानी मे दस छविगृह हैं और कुछ कस्बों मे भी। इनमे से अधिकाश छविगृहो म हिन्दी फिल्मे दिखाई जाती हैं। हिन्दी फिल्मे और उनके गाने बहुत ही लोकप्रिय हैं। सडको पर बच्चों व किशोरों के मुह से हिन्दी फिल्मों के गाने और सवाद सुनने को मिलते हैं। जन्म, विवाह और श्राद्ध सस्कारो के अवसरों पर लाउडस्पीकर पर हिन्दी गीत दिन रात बजाए जाते हैं। प्रत्यक गली मे रोज कहीं न कहीं आप हिन्दी फिल्मी गीत का बजता हुआ रेकार्ड सुन सकते हैं। आकाशवाणी के इम्फाल केन्द्र से सैनिक भाइयों के लिए प्रतिदिन तीस मिनट का फरमाइशी हिन्दी फिल्मी गीतों का कार्यक्रम दिया जाता है तथा अन्य लोगों के लिए केवल तीन दिन। प्रथम पर मे जिगम रेडियो है, ये दोनो कार्यक्रम अवश्य सुने जाते हैं। साथ ही फौजी भाइयों के अतिरिक्त फरमाइशी कार्यक्रम मे फरमाइश करने

वालो के नामो की सूची से हिन्दी गानो की लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है और इससे हिन्दी की सपर्क भाषा के रूप मे भूमिका भी स्पष्ट हो जाती है।

डॉ एम होरम एक विद्वान लेखक और राजनीति शास्त्र के आचार्य हैं। उन्होने 'सोशियल एण्ड कल्चरल लाइफ ऑफ नागाज' नामक पुस्तक मे नागा जाति के भारतीयकरण और पूर्वांचल मे हिन्दी भाषा के प्रसार का श्रेय भारतीय सिनेमा उद्योग को देते हुए लिखा है •

"सभवत भारतीय सिनेमा उद्योग वह एक मात्र प्रमुख साधन है, जिसको भारत के अन्य भागो की प्रयाओ से इन पर्वतीय जनों को परिचित कराने तथा उनमे हिन्दी प्रसार का निश्चित रूप से प्रमुख स्रोत होने का श्रेय दिया जा सकता है। वास्तव म ताखुल नागा ही नही, वे सभी उत्तर-पूर्वी भारतीय जनजातियाँ सगीत-गान मे श्रेष्ठ एव विशिष्ट हैं और सगीत की लय को पकडने की उनमे अद्भुत क्षमता है, परिणामस्वरुप नागालैंड के धान के खेतो से हवा मे तैरती हुई हिन्दी फिल्मी धुनें सुनाई देना कोई आश्चर्य का विषय नही है।' उन्होंने इसको और स्पष्ट करत हुए आगे लिखा है कि 'गाने वाले का हिन्दी ज्ञान विशेष न होने पर तथा गाने का पूरा अर्थ नही समझने पर भी गाने की लय और धुन एकदम सही होती है, इसके लिए रेडियो से बार-बार बजते फिल्मी गीतो के पाठों को धन्यवाद। हिन्दी की औपचारिक शिक्षा से जो उपलब्धि कभी सभव नही थी, वह रेडियो पर बजने वाले गीतो और फिल्मो के माध्यम से सहज ही प्राप्त हो गई है। शायद भारतीयकरण का यह श्रेष्ठ साधन नही है, किन्तु फिर भी वास्तव मे यही प्रमुख साधन है।" (पृष्ठ 105)

सपर्क भाषा का कार्य उत्तरी-पूर्वांचल म हिन्दी कर रही है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह प्रमाणित है कि विगत अनेक शताब्दियो से हिन्दी भाषा ने मणिपुर तथा आस-पास के क्षेत्रों मे सपर्क भाषा की भूमिका निभाई है। इस सबध मे यहाँ कुछ व्यक्तिगत अनुभवो का उल्लेख करना अप्रासगिक नहीं होगा। सन् 1970 ई मे मैं दीमापुर (नागालैंड का स्टेशन) से इम्फाल एक ट्रक से यात्रा कर रहा था। रास्ते मे ट्रक खराब हो गया। चालक ने मुझ से कहा कि हम इसको ठीक करके आ रहे हैं, कुछ ही दूर एक होटल है, आप चलिए और वहाँ चाय-नाश्ता लीजिए। मैं चल पडा। होटल मे पहुँचा तो देखा कि वहाँ एक नागा महिला होटल की मालिक है। मुझे इस क्षेत्र में आए अभी एक डेढ वर्ष ही हुआ था। मैं असमजस मे था कि इस महिला से किस भाषा मे बात करू। नागा भाषा मुझे नही आती और अग्रेजी या हिन्दी के ज्ञान की उससे मैं अपेक्षा कैसे कर सकता था। मैं चिताग्रस्त खडा

था कि महिला ने मुझसे कहा, 'बैठिए। क्या लेंगे ?' शुद्ध हिन्दी के इस वाक्य को सुनकर मुझे आश्चर्य एव हर्ष हुआ। इतना ही नही, चाय-नाश्ते के समय उस महिला से हिन्दी मे बहुत बातें हुई। बातो मे मुझे ज्ञात हुआ कि वही नहीं, नागालैंड मे अधिकतर लोग हिन्दी बोल व समझ लेते हैं।

बाद के वर्षों मे मैं उत्तर-पूर्वी राज्यो तथा मणिपुर के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रो गावो और बस्तियों मे भ्रमणार्थ गया और मैंने यह अनुभव किया कि सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है और यदि कोई व्यक्ति स्थानीय भाषाओं से अनभिज्ञ है, तो भी हिन्दी के माध्यम से सवाद सभव है। मैंने दक्षिण भारतीय ईसाई धर्म प्रचारको एव अध्यापको को इस क्षेत्र में लोगों से हिन्दी मे वार्तालाप करते हुए भी सुना है। मैंने जब भी पर्वतीय जन से हिन्दी मे बात की, मैं उनके हिन्दी ज्ञान से प्रभावित हुआ हूं और मैंने उनसे पूछा कि आपको हिन्दी का इतना अच्छा ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ तो वे उत्तर मे बताते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध के समय से ही सेना के लोगों के साथ उनका सपर्क रहा है और उनसे हिन्दी मे वार्तालाप करने से उन्हें हिन्दी का ज्ञान हुआ।

मणिपुर देश के अन्य भागो से पृथक रहा है आज भी रेलमार्ग से नहीं जुड पाया अत यहाँ के लोग बहुत ही कम सख्या मे बाहर जा सकते हैं। यदि रेल सुविधाए उपलब्ध होती तो हिन्दी की सपर्क-भाषा की स्थिति मे और भी सुधार की सभावनाए थी। सातवीं पच-वर्षीय योजना मे मणिपुर मे रेल आने की सभावना के साथ हिन्दी प्रयोग बढ़ने की सभावना है।

अत मे इतना कहना पर्याप्त होगा कि मणिपुर राज्य के भीतर स्थानीय लोगो के बीच मणिपुरी भाषा सम्पर्क-भाषा है किन्तु मणिपुर मे बाहर से आने वाले लोगो और मणिपुर लोगो के बाहर जाने पर हिन्दी ही सम्पर्क भाषा के रूप मे प्रयुक्त होती है। हिन्दी मणिपुर के निवासियो को भारत के अन्य भागो से जोडने वाली महत्वपूर्ण कडी है।

सदर्भ :

1. मणिपुर लैंग्वेज, लिटरेचर एण्ड कल्चर (1970) मणिपुर साहित्य परिषद्, इम्फाल, पृ. 34
2 डॉ एस. के. चटर्जी—मणिपुरी लिटरेचर, आदिवासी लिटरेचर ऑफ इंडिया, इडियन लिटरेचर, अग्रेजी जनरल, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, पृ 18-27
3 सर जॉर्ज ए ग्रियर्सन—लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, वॉल्यूम III, पृ. 20
4. डब्लु युमजाओ सिंह—(1966 इम्फाल) एन अरली हिस्ट्री ऑफ मणिपुर, पृ. 5 स 16.

5. डब्लु. युमजाओ सिंह—(1935) रिपोर्ट ऑन आरक्योलोजिकल स्टडीज इन मणिपुर, बुलेटिन, न. 1, प्रकाशक—मणिपुर स्टेट लाइब्रेरी, इम्फाल
6. आर. के. झलजीत सिंह (1965 इम्फाल) ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ मणिपुर, पृ. 50।
7. राजकुमार सनाहलसिंह बी. कॉम. (1985)—पीप्स इन टू मणिपुर, पृ. 148—149
8. उपरिवत पृ. 150
9. एल. इबुङोहल सिंह (1963)—इन्ट्रोडक्शन टू मणिपुर, पृ. 207 से 211
10. राजकुमार सनाहल सिंह, बी. कॉम. (1985)—पीप्स इन टू मणिपुर, पृ. 15।
11. डॉ भोलानाथ तिवारी व डॉ. कमल सिंह—(1987) सम्पर्क भाषा, प्र. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 134
12. डॉ. एम. कीर्ति सिंह (1980)—रिलिजियस डवलपमेंट इन मणिपुर इन एटीन्थ एण्ड नाइनटीन्थ सेंचुरीज, प्र. मणिपुर स्टेट कला अकादमी, इम्फाल, पृ. 125
13 एल. इबुङोहल सिंह व फु. अतोम बापू शर्मा—(1967) चैथरोल कुम्बाबा, इम्फाल, पृ. 83 व 98।
14 डॉ सरोज नलिनी पैराट—(1980) दा रिलिजन ऑफ मणिपुर, प्र. फर्मा के. एल. एम. (प्रा) लि., कलकत्ता, पृ. 151
15. श्री पी गुणिन्द्र सिंह—(1983) मणिपुरी न्युमिसमेटिक्स, प्र. मुतुवा म्युजियम, इम्फाल, पृ.
16. श्री फु गोकुलानंद शर्मा—(1985) मणिपुर के वीर नर-नारियों की जीवन गाथाए, प्र. मणिपुर हिन्दी शिक्षक संघ, इम्फाल, पृ. 6
17. आचार्य राधा गोविन्द थोङाम (अक्टूबर 1985)—मणिपुर हिन्दी परिषद पत्रिका वर्ष 1 अंक 2, वीर शिरोमणि पाओना ब्रजबासी पृ. 7
18. सर जेम्स जॉनस्टॉन (1971)—मणिपुर एण्ड नागाहिल्स, प्र—विवेक पब्लिशिंग हाउस, 18—D, कमला नगर, दिल्ली, पृ. 71। (मूल 1896 ई)
19. उपरिवत्, पृ 237
20. (श्रीमती) इथेल एटी सी ग्रिमवुड (1891 ई.) माई थ्री इयर्स इन मणिपुर, लंदन, पृ 27
21. आर. कॉन्स्टेनटाइन—(1981)—मणिपुर मेड ऑफ माउटेन्स—प्र. लैंसर्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 248।

4 मणिपुर में देवनागरी लिपि की प्राचीनता तथा महत्व

मणिपुर की प्राचीन लिपि

मणिपुर के कुछ विद्वानों का विचार है कि प्राचीन मैतै लिपि का ज्ञान प्राचीन मणिपुर जन-जीवन की पहचान के लिए अनिवार्य है। यद्यपि प्राचीन मणिपुरी या मैतै लिपि का प्रयोग लगभग विगत दो सौ वर्षों से स्थगित हो गया है तथा सम्प्रति बंगला असमी लिपि का ही प्रयोग हो रहा है। शैक्षणिक एवं अन्य कार्यों में बंगला-असमी लिपि ही सन् 1709 ई. से व्यवहार में लाई जा रही है किन्तु मैतै या मणिपुरी वर्णमाला 'अहोम' (असमी) लिपि के समान मृत प्राय: नहीं हो सकी है। मणिपुर के राज दरबार के पंडित आज भी प्राचीन मैतै लिपि में ही इतिहास को लिपिबद्ध करते हैं। इस प्राचीन लिपि के जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, यद्यपि प्रतिशत नगण्य है।

वास्तविकता यह है कि भावुकता के कारण अनेक मणिपुरी भाषा-साहित्य के विद्वान मणिपुर की प्राचीन लिपि को अपनाने का आग्रह कर रहे हैं, जबकि इसको जानने वालों की संख्या नगण्य है तथा इसका विशेष प्रचार नहीं हो सका है। निश्चय ही उत्साही लोग प्रतिवर्ष प्राचीन मणिपुरी वर्णमाला के केलैंडर छपवाकर बंटवाते हैं। साथ ही कुछ दुकानों या संस्थाओं के नाम अंग्रेजी के साथ मैतै लिपि में लिखे गए हैं किन्तु साथ ही बंगला लिपि में भी। स्पष्ट है कि प्राचीन मैतै लिपि का परिचय बहुत ही कम लोगों को है।

"मैतै मयेक" की प्राचीनता को प्रमाणित करने के लिए श्री एल. खेलचन्द्रसिंह ने अरिबा मणिपुरी साहित्यगी इतिहास, इम्फाल (प्रथम संस्करण) पृ. 35 पर लिखा है कि प्राचीनकाल में मणिपुर में तरेत-मयी-नाइबा नामक सिक्कों का प्रचलन था, ऐसा उल्लेख नुमित काप्पा नामक प्रथम या तृतीय शताब्दी में लिखे गए ग्रंथ में हुआ है। इस कथन से मणिपुर में प्रथम या तृतीय शताब्दी से सिक्कों के प्रचलन के साथ मणिपुरी लिपि या मैतै मयेक के प्रचलन का प्रमाण मिलता है। किन्तु इस मत की प्रामाणिकता की परीक्षा अपेक्षित है। सच्चाई यह है कि मणिपुरी लिपि पर अभी शोध की आव-

श्यकता है। ऐसे शोधार्थी जो लिपि के अध्ययन में रुचि रखते हों, उन्हें चाहिए कि वे मैतै लिपि के उद्भव विकास पर कार्य करें, इसके संबंध में प्रचलित मतों की विभिन्न प्राचीन लिपियों से तुलना करें और इसके उद्गम का पता लगावें।

मैतै लिपि की उत्पत्ति

मैतै (मणिपुरी) मयेक (लिपि) की उत्पत्ति के संबंध में दो मत प्रचलित हैं। एक विचार यह है कि मैतै मयेक की वर्णमाला का आविष्कार बाहरी लोगों (अमणिपुरी) ने किया जबकि दूसरा विचार है कि मैतैमयेक की वर्णमाला का आविष्कार स्थानीय लोगों ने किया है। डॉ. जी. ए. ग्रियर्सन का मत है कि मणिपुरी लिपि का आविष्कार ब्राह्मणों ने किया था।[1] किंतु डॉ ग्रियर्सन अपने मत की पुष्टि हेतु कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। टी सी. हडसन के मतानुसार लिखने की कला चीनी लोगों से सीखी गई जो 1540 ई में करीब मणिपुर में आए थे।[2] प्रो नन्दलाल शर्मा डॉ ग्रियर्सन के मत का समर्थन करते हैं और साथ ही डॉ आर ब्राउन को उद्धृत करते हुए यह भी कहते हैं कि मणिपुरी वर्णमाला नागरी लिपि का संशोधित रूप है और यह भी स्वीकार करते हैं कि मणीपुरी वर्णमाला ब्राह्मी लिपि के दूसरे वर्ग में रखी जा सकती है जिसको कुटिल लिपि कहा जाता है।[3]

उपर्युक्त मतों का खंडन करते हुए आधुनिक विद्वानों का मत है कि मणिपुरी लिपि अति प्राचीन है।[4] प्रो तोमचौसिंह जी ने अपने मत को प्रमाणित करने के लिए निङ थौरोल लम्पुपा एवं चैथरोल कुम्बाबा नामक इतिहास ग्रंथों तथा महाराजा क्याम्बा (1467-1508 ई) के शिलालेखों द्वारा मणिपुरी लिपि की प्राचीनता सिद्ध कर दी है। साथ ही उन्होंने कुटिल लिपि से भी मैतै मयेक को प्राचीन सिद्ध कर दिया है। ब्राह्मीलिपि से मणिपुरी लिपि की उन्होंने केवल एक समानता का उल्लेख किया है कि वे बाए से दाए लिखी जाती हैं। श्री हडसन के मत का खंडन करते हुए उनका कहना है कि चीनी लिपि और मैतै मयक में कोई समानता नहीं है। उनकी स्थापना है कि मैतै मयेक की वर्णमाला स्थानीय आविष्कार है। यद्यपि मैतै मयेक स्थानीय आविष्कार है तथापि इसकी वर्णमाला देवनागरी की ही है। प्रो. तोमचौ देवनागरी की भांति बाए से दाहिने लिखने की एक मात्र समानता स्वीकार करते हैं किन्तु वणमाला के अद्भुत साम्य का उल्लेख करना भूल गए हैं। वर्णमाला की दृष्टि से देवनागरी व मैतैमयेक में काफी साम्य है।

मैतै मयेक की वर्णमाला में कुछ लोग केवल 18 वर्ण मानते हैं तो कुछ 35। श्री टी सी हडसन की पुस्तक 'दा मैतैईज़' में 'नुमित काप्पा' नामक ग्रंथ के एक पृष्ठ की फोटो स्टेट कॉपी दी गई है जिसमें मैतै मयेक में 18

वर्ण होना प्रमाणित होता है। यह माना जाता है कि 18 वर्ण के स्थान पर महाराजा पामहैजा (गरीब निवाज 1709-1748) के शासनकाल मे 35 वर्ण बना दिए थे।

प्रो. इब्लु तोमचो, जो प्राचीन मैतै मयेक के प्रमुख समर्थक माने जाते हैं, का कहना है कि वर्तमान 35 वर्णो मे से छ, ज, ट, ठ, ड, ढ, ण, ष, श तथा क्ष हटा दिए जाने चाहिए क्योकि स्थानीय भाषा मे इनकी ध्वनि का प्रयोग नही होता है। जो आगत शब्द हैं उनको प्राचीन मणिपुरी लिपि मे ठीक उसी तरह लिखा जाना चाहिए जिस तरह वे स्थानीय लोगो के द्वारा उच्चारित किए जाते है। इन 10 वर्णों को निकालने के बाद बचे हुए 25 वर्णों मे से भी द तथा ध के रूप भी बदल दिए जाने चाहिए। साथ ही उन्होंने स्वर सकेत को स्वीकार करने की सस्तुति की है।

प्रो. तोमचो तथा अन्य विद्वानों का मत लगभग समान ही है और वे प्राचीन मणिपुर लिपि को पुनः प्रचलित करने के पक्ष मे हैं। अनेक ऐसी शोध सस्थाए है जो बगला असमी लिपि के स्थान पर मैतै मयेक का समर्थन कर रही हैं। बगला असमी लिपि के विरुद्ध वातावरण बन रहा है।

मणिपुरी लिपि एवं भाषा समस्या

वास्तव मे मैतै मयेक के सम्बन्ध मे सभी लोग एकमत नही है। व्यावहारिक कठिनाई भी है कि प्राचीन लिपि को जानने वालो की सख्या बहुत कम है। प्राचीन लिपि मे मणिपुर के "पुया" (पुराण) लिखे गए है तथा शिलालेख भी। आधुनिक काल मे साहित्य एवं ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी अनेक पुस्तको का केवल बगला असमी लिपि मे प्रकाशन हुआ है। उन सबको पुन॰ प्राचीन लिपि मे प्रकाशन करना बहुत बडी समस्या है। विद्यार्थियों की दृष्टि से समस्या यह है कि वे बगला असमी रोमन एवं देवनागरी लिपियाँ तो सीखते ही हैं और इसके साथ उनको प्राचीन मणिपुरी लिपि भी सीखनी होगी। बगला असमी लिपि को प्राचीन मणिपुरी लिपि अपनाने के बाद भी जानना आधुनिक काल मे प्रकाशित पुस्तकों को पढने के लिए आवश्यक हो जाएगा। इस प्रकार प्राचीन लिपि अपनाने के मार्ग मे अनेक कठिनाइयाँ हैं। इन कठिनाइयो का निराकरण असम्भव नहीं है, किन्तु कठिन अवश्य है।

'दा मणिपुरी कल्चरल रिसर्च एसोसियेशन, लिमिटेड, इम्फाल, जिसके अध्यक्ष श्री एन. मनोबी थे, ने 18 8 62 के दिन इस सस्था की स्थापना की। इसके पूर्व भी 13.3.1958 को मणिपुरी लिपि के शुद्ध रूप की शोध हेतु श्री एल इबुडोहलसिंह की अध्यक्षता मे "मयेक मुरुप्टिन" नामक सस्था की स्थापना की गई थी, जिसमें इस दिशा मे शोध करने वाली

आठ सस्थाओ को सम्मिलित किया गया था। मयैक लुपटिन नामक सस्था ने 15-2-1959 को अपनी खोज का प्रतिवेदन प्रकाशित किया था। दा मणिपुरी कल्चरल रिसर्च एसोसिएशन लि. के मुख पत्र में यह प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। प्राचीन मणिपुरी सस्कृति, धर्म, लिपि भाषा आदि की पुन प्रतिष्ठा की दिशा मे विभिन्न सस्थाओ के प्रयत्न सराहनीय हैं। किन्तु लिपि के स दर्भ मे जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उनको क्रियान्वित करने की समस्याओ का उल्लेख ऊपर किया गया है। श्री एल. मनोवी जो 'फ्रेन्ड्स टॉकीज' इम्फाल के स्वामी हैं। आप मणिपुर के जाने-माने राज-नीतिज्ञ हैं। तथा मणिपुर पीपल्स पार्टी के सस्थापक भी हैं। राज्य विधान सभा के कई बार सदस्य रह चुके हैं और मत्री पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। इस दिशा मे उनके प्रयत्न प्रशसनीय हैं।

जहाँ एक ओर विभिन्न सस्थाए जिनमें पान मणिपुरी यूथ लीग प्रमुख है, बगला लिपि को हटाकर मैतै लिपि का प्रचलन चाहती हैं। "मैतै मरुप" सस्था दूसरी महत्वपूर्ण सस्था है जो बगला लिपि ही नही, वैष्णव धर्म के विरुद्ध भी है तथा प्राचीन लिपि के साथ प्राचीन धर्म और परम्पराओ को पुन स्थापित करना चाहती है। 1967 ई. म "मैतै स्टेट कमेटी" नामक सस्था की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य स्वतन्त्र मणिपुर की स्थापना थी। ये सभी सस्थाए प्राचीन लिपि को पुन प्रचलित करना चाहती हैं। यह माँग दिन प्रतिदिन जोर पकडती जा रही है। मणिपुर की भाषा समस्या के उग्र और गभीर रूप के कारण लिपि की माँग दब गई है। जब भी मणिपुरी को मणिपुर राज्य की राजभाषा बनाए जाने का प्रयत्न किया गया तो उसका विरोध हुआ। अज्ञात काल से मणिपुरी भाषा मणिपुर की राजभाषा रही है। जुलाई 1978 मे राज्य विधानसभा ने पुन भाषा विधेयक पारित किया किन्तु क्रियान्वयन सम्भव नही हो सका। भाषा विधेयक 1971 मे तैयार किया गया था किन्तु 'हिल यूनियन' नामक सस्था के विरोध के कारण ही यह 1978 मे पारित हो सका। लेकिन क्रियान्वयन आज तक भी सम्भव नही हो सका है। इधर जब त्रिभाषा पाठ्यक्रम के अनुसार मणिपुर मे हिन्दी को कक्षा 3 के स्थान पर कक्षा 6 से पढाया जाने लगा (1983), तो मणिपुरी भाषा को जनजातीय विद्यार्थियो के लिए मातृभाषा व अग्रेजी के साथ कक्षा तीन से अनिवार्य भाषा के रूप मे पाठ्यक्रम मे रखा गया, किन्तु इन का भी 'हिल यूनियन' तथा 'ट्राइबल स्टूडेंट्स यूनियन ने विरोध किया और कक्षा तीन से मणिपुरी भाषा शिक्षण सम्भव नही हो सका।

स क्षेप मे इतना कहना ही पर्याप्त है कि मणिपुर की भाषा और लिपि की समस्या एक जटिल समस्या है, जिसका हल भविष्य के गर्भ मे छिपा है।

भावना का प्रश्न :

मणिपुरी भाषा एव लिपि के मार्ग मे चाहे कितनी ही बाधाए हो और चाहे समस्या कितनी ही जटिल क्यो न हो, किन्तु प्रश्न स्थानीय लोगो की भावना का है। वास्तविकता यह है कि महाराज गरीबनिवाज के शासन-काल मे मैतै भाषा एव लिपि पर प्रतिबध लगा दिया गया था तथा बगला असमी लिपि को थोपा गया था, इस बात को सभी इतिहासकार स्वीकार करते हैं। मणिपुरी भाषा मे गाने पर भी प्रतिबध लगाया गया था, साथ ही प्राचीन मणिपुरी ग्र थो को जला दिया गया तथा 'सनामही' धर्म को प्रति-बधित करके वैष्णव धर्म थोपा गया। इस ऐतिहासिक भूल को सुधारने के लिए आधुनिक युवा पीढी कटिबद्ध दिखाई देती है। महाराज गरीबनिवाज के तथा शातिदास अधिकारी गोसाई के पुतले जलाने तथा गीता-महाभारत आदि ग्रथों को जलाने की घटनाए युवा आक्रोश की प्रतीक हैं। गरीब निवाज महाराज ने भी राजाज्ञा ही प्रचलित नही की और न केवल स्थानीय देवी-देवताओ के मदिर ही तुडवाए किन्तु साथ मे एक शाप भी दिया कि यदि कोई दिन मे मणिपुरी भाषा मे गाएगा तो कौआ और रात मे गाएगा तो उल्लू बनकर दूसरा जन्म लेगा। पेना (स्थानीय वाद्य यत्र) बजाने पर सीधा नरक में जाएगा। इन प्रतिबधो से मणिपुरी भाषा साहित्य की ईस्वी शताब्दी पूर्व की प्राचीन साहित्यिक परम्परा को गहरा आघात लगा। 200 वर्ष तक उस भाषा मे रचनाए नहीं की गई और लिपि का प्रयोग तो पडितो या चैथरोल कुम्बाबा लिखने वाले लोगो तक ही सीमित रह गया। इसलिए वैष्णव धर्म, उसके ग्र थ, प्रथाए एव परम्पराए आज जनाक्रोश की शिकार बन गई हैं। बलात् मणिपुरी लिपि का प्रयोग बन्द किया था इसलिए उसके पुन प्रचलन का प्रश्न भावना से जुडा है। कोई तर्क, सुविधा-असुविधा इसकी पुन प्रतिष्ठा मे बाधा नही हो सकती।

मणिपुरी भाषा और सविधान की आठवीं सूची

मणिपुरी भाषा (मैतैलोन) को सविधान की आठवी सूची मे सम्मिलित किये जाने की माँग सभवत. छठे दशक मे उठाई गई, किन्तु आज भी मणि-पुरी भाषा सविधान की सूची मे प्रवेश पाने की प्रतीक्षा कर रही है। सिंधी भाषा को जब आठवी सूची मे सम्मिलित किया गया था, तो मणिपुर मे तीव्र प्रतिक्रिया और आक्रोश देखा गया था। जो इस देश की भाषा नही शरणार्थियो की भाषा थी, उसको सविधान मे स्थान दिया गया और मणि-पुरी जो देश मे स्थायी निवासियो की भाषा है, उनकी माँग को स्वीकार नहीं किया जा रहा है। आज भी यह माँग बार-बार विभिन्न मचो से उठाई जा रही है। मणिपुरी आधुनिक भारतीय भाषाओं मे प्राचीनतम भाषा है

[9 वही	श्री जयसिंह/श्री गोविन्ददेव	,,
10. वही	ज/मणिपुरेश्वर	,,
11. लावण्यचन्द्र (*1798-1801 ई*)	श्रीमान मणिपुरेश्वर श्री हर्षचन्द्र नृपवरस्य शक 1721/ श्रीमद राधा गोविन्द पदारविन्द मकरन्द मधुकरस्य	वृत्ताकार
12. मधुचन्द्र (1801-03ई.)	म म म म म	अष्टाकार
13. वही	म	वृत्ताकार
14 चौरजीत (1803-13 ई)	श्री मणिपुरेश्वर श्री चौरजीतसिंह नृपवरस्य शक 1731/ श्री मद राधा गोविन्द पदारविन्द मकरद मनोमधुकरस्य	वर्गाकार
15. वही	श्री मणिपुरेश्वर श्री चौरजीतसिंह नृपवरस्य शक 1734/ श्री श्री राधा गोविन्द पद सेवक	,,
16 मारजीत (1813-19ई)	हेडम्बाजीत श्री मणिपुरेश्वर श्री मारजीत सिंह नृपवरस्य शक 1741/ श्री श्री राधा गोविन्द पदारविद मनोमधुकरस्य	वृत्ताकार
17. गंभीर सिंह (*1825-34 ई*)	ग	,,
18. नरसिंह (1844-50 ई)	श्रीमान मणिपुरेश्वर श्री नरसिंह नृपवरस्य शक 1763/ श्री राधा गोविन्द का त्रिभंगी मुद्रा मे चित्र	,,
19. कुलचन्द्र (1890-91 ई)	क	,,

इनके अतिरिक्त भी कुछ सिक्के हैं जिनको चलाने वाले राजा का नाम व समय तय नही है किन्तु उन पर नागरी लिपि में श्री कृष्ण, श्री कृष्ण चरण तथा श्री अंकित है।

सिक्कों की जबानी नागरी लिपि के प्रयोग एवं प्रचलन का इतिहास स्पष्ट हो जाता है।

संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद

सन् 410 ई मे रामायण की कथाओ को रगमच पर सगीत के साथ प्रस्तुत करने के प्रमाण उपलब्ध हैं। राजा कयाम्बा के शासन काल 1467 ई मे भक्त प्रह्लाद तथा चन्द्ररजनी नाटको के अभिनय का उल्लेख भी मिलता है।[5] इससे स्पष्ट है कि 5 वीं शताब्दी से मणिपुर म सस्कृत ग्रन्थो के अनुवाद या प्रभाव की परम्परा आरभ हुई होगी। अनुवाद का इतिहास भी मणिपुर क प्राचीन इतिहास क विलुप्त हाने के साथ लुप्त हो गया हैं, किन्तु वास्तव मे सस्कृत ग्रथो के अनुवाद की परम्परा का इतिहास अत्यत प्राचीन है।

डॉ एम कीर्तिसिह ने 1717 ई और 1737 ई मे महाभारत तथा रामायण के कुछ पर्वो/सर्गो के अनुवाद का उल्लेख किया है।[6] रामायण के सर्गों के अनुवादक का नाम अङोम गोपी दिया गया है। श्री एन खेलचद्रसिह तथा श्री एल इबुङोहल्सिह ने अठारहवी शताब्दी म मणिपुरी पडितो क द्वारा मणिपुरी पुस्तकें लिखने म सस्कृत शब्दो के प्रयोग का उल्लेख किया है। इस सबध म डॉ कीर्तिसिह ने लिखा है कि महाभारत के कतिपय पर्वों तथा रामायण क सर्गों का अनुवाद आज भी उपलब्ध है। (पृ: 58-59)। वास्तव म रामायण के अनुवाद म वाल्मीकि रामायण के राम से मणिपुरी राम कथा के राम का चरित्र भिन्न है।
मणिपुरी मे रूपान्तरित कथा के राम भी तुलसी के राम की भाँति ही अलौकिक पुरुष एव अवतार हैं।

डॉ एम कीर्तिसिह के अनुसार थराइरोङबा खुनकुम (1741 ई) मे दो पडितो की रचना है जिसका आधार पचतत्र एव चाणक्य श्लोक हैं (पृ 133)।

18 वी शताब्दी मे अनुवाद परम्परा के सबध मे श्री आर के सनाहल सिह न मणिपुर इतिहास' नामक पुस्तक म लिखा है—इस काल मे महाकाव्यो का मणिपुरी भाषा म अनुवाद जन सामान्य म बहुत ही लोकप्रिय हो गया (पृ 56)।

महाराजा भाग्यचद्र के राज्यकाल म यह अनुवाद परम्परा और विकसित हुई। महाराजकुमार नवानद ने 1780 ई मे महाभारत का मणिपुरी अनुवाद किया। मयेम्बा वृन्दावन, थाहेडबाम माधोराम तथा लोडजा परशुराम आदि ने अश्वमेध यज्ञ, अर्जुन एव बभ्रुवाहन युद्ध तथा जनमेजय सर्प यज्ञ आदि रचनाओ को मणिपुरी मे अनूदित किया। युमखाईबाम चन्द्रसिह ने अष्ट कला लाना एव मयुरा विरह नामक रचनाओ को अनूदित किया।[7] डॉ एम कीर्तिसिह ने लिखा है कि उसी समय 'लोइसङ' नामक शासकीय सस्था

बनाई गई जो सस्कृत एव बगाली ग्रन्थो के अनुवाद एव पठन-पाठन की व्यवस्था करती थी। पाठ्यक्रम मे सस्कृत व्याकरण, स्मृति काव्य तथा वेदो के अध्ययन के साथ चैतन्य महाप्रभु से सबधित साहित्य का अध्ययन अनिवार्य था (पृ 183)। यहाँ विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि महाराजा भाग्यचन्द्र के शासनकाल में ही ब्रजबोली, मैथिली तथा सस्कृत के पद गाने की परम्परा का सूत्रपात हुआ। मणिपुरी भाषा मे गाने की परम्परा तो गरीबनिवाज के शासन काल मे ही स्थगित कर दी गई थी। अत इन आर्य भाषाओ के पद ही रासलीला, सकीर्तन एव धार्मिक अनुष्ठानो म गाने की परम्परा आरम्भ हुई। महाराजा गभीरसिह एव च द्रकीर्तिसिह क शासन काल म भागवत पुराण, विष्णु पुराण स्मृति शास्त्र तथा गीत गोविन्द जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थो का मणिपुरी भाषा मे अनुवाद किया गया।

ठाकुर भक्ति सिद्धान्त नामक व्यक्ति द्वारा महाराजा गभीरसिह के शासन काल मे श्री कृष्ण रस सगीत सग्रह ग्रन्थ लिखा गया जिसका सम्पादन-प्रकाशन श्री सूरचाँद शर्मा द्वारा, श्री श्री गोविन्द नर्तालय, इम्फाल द्वारा 1968 मे किया गया है। गोविन्द सगीत लीला विलास (मणिपुरी नृत्य शास्त्र) रचना महाराज भाग्यचद्र ने की थी, ऐसा डॉ एम कीर्तिसिह का विचार है (पृ 187)।

यह सस्कृत ग्रन्थ अनुवाद परम्परा 20 वी शताब्दी तक अबाध गति से चली आई है। आज भी विभिन्न सस्कृत धार्मिक ग्रन्था का मूल (देवनागरी मे) क साथ मे मणिपुरी भाष्य व्याख्या मे युक्त, ग्रन्थो का प्रकाशन हो रहा है। श्री नारायण शर्मा द्वारा 'गीता' का ऐसा ही गुटका प्रकाशित किया गया है। साथ ही यह तथ्य भी हमारे सामने है कि मणिपुरी जन-जीवन मे 'गीता' पाठ की परम्परा है और धार्मिक प्रवृत्ति के लोग नित्य पाठ करते हैं।

हिन्दी ग्रन्थों का अनुवाद

संस्कृत ग्रन्थो की परम्परा के साथ ही हिन्दी से मणिपुरी अनुवाद की परम्परा बीसवी शताब्दी मे आरभ हुई। जिसका उल्लेख अन्यत्र विस्तार से किया गया है।

लिपि के सदर्भ म अनुवाद ग्रथो का विस्तार से उल्लेख करना इसलिए आवश्यक हो गया कि देवनागरी तथा सस्कृत भाषा के मणिपुर मे ज्ञान की प्राचीनता स्थापित की जा सके। सन् 1925 से मणिपुर म हिन्दी भाषा के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था हुई जो आज भी सरकारी व गैर सरकारी सस्थाओ के माध्यम से जारी है। इन सस्थाओ से लाखो विद्यार्थियो ने हिन्दी परीक्षाए उत्तीर्ण करके देवनागरी लिपि का ज्ञान प्राप्त किया है।

मुद्राओं पर अंकित देवनागरी लिपि तथा अनुवाद परम्परा की प्राचीनता में देवनागरी लिपि की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है। संस्कृत के पठन-पाठन के (अठारहवीं शताब्दी से 'लोइसङ' विभाग में) प्रचलन से भी देवनागरी लिपि की निरन्तरता सिद्ध होती है, जो उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में भी टूटती नहीं है। आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के पश्चात् संस्कृत विषय मणिपुर के विद्यार्थियों के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय में दसवीं से अनिवार्य रहा। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में शिक्षित प्रत्येक व्यक्ति संस्कृत का विद्यार्थी रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी भाषा भी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती रही है।

इन तथ्यों के आधार पर मणिपुरी में देवनागरी लिपि का प्रचार प्राचीन काल से आधुनिक काल तक सिद्ध होता है।

पत्रकारिता और देवनागरी

मणिपुर में 1933 ई. में 'दैनिक मणिपुर' का प्रकाशन किया गया था और 1939 में 'मणिपुर पाओजेल' तथा 'इसी' पत्रों का प्रकाशन हुआ, 1943 से 'भाग्यवती' 'भाग्यवती मासिक' एवं 'भाग्यवती पत्रिका' का। इन पत्रिकाओं में से दूसरी व तीसरी का संबंध देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार से रहा है और मैतै भाषा को देवनागरी लिपि में लिखा जाता था। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि कई समाचार पत्रों में मणिपुरी के साथ रही है। आज भी 'नागरी पथ' दैनिक में मणिपुरी भाषा के एक-दो कॉलम देवनागरी में छापे जाते हैं। देवनागरी लिपि इस प्रकार शताब्दियों से आज तक मणिपुर में प्रचलित रही है, यह बात इन ऐतिहासिक साक्ष्यों से प्रमाणित हो जाती है। शिक्षित लोगों के लिए यह लिपि अपरिचित नहीं है। आधुनिक चलचित्रों के विज्ञापन, पोस्टर भी रोमन के साथ देवनागरी में होते हैं, जिन पर नजर पड़ती ही है और देवनागरी का अभ्यास सड़क पर चलते हुए भी होता है। कार्यालयों के नामपट्ट आदि में भी देवनागरी के प्रयोग के कारण यह लिपि अनभिज्ञ नहीं रह गई है।

मैतै लिपि और देवनागरी

जहाँ मणिपुर में मैतै लिपि अति प्राचीनकाल से प्रचलित है वहाँ देवनागरी भी उसकी सहयात्री रही है और आज भी है। यह बात ऐतिहासिक साक्ष्यों से प्रमाणित की जा चुकी है। आचार्य विनोबा भावे ने प्रान्तीय लिपियों के साथ सम्पर्क लिपि का स्वप्न देखा था और उनकी मान्यता थी कि देवनागरी लिपि ही सम्पर्क लिपि हो। जो लोग हिन्दी भाषा का विरोध करते हैं, मेरे विचार से उनको देवनागरी से तो कोई परहेज नहीं होना

चाहिए क्योंकि देवनागरी तो संस्कृत, मराठी और नेपाली (विदेशी भाषा) की लिपि रही है और है भी। यूरोप में अनेक भाषाएं हैं किन्तु सबने रोमन लिपि को अपनाया है। भारत में भी अनेक भाषाएं हैं जिनकी अपनी-अपनी लिपि है। लिपि केवल भाषा का माध्यम मात्र है, अतः किसी भी लिपि से प्रतिबद्धता का प्रश्न नहीं जोड़ा जाना चाहिए। सुविधा एवं आवश्यकता के लिए लिपि का प्रयोग किया जाता है। देवनागरी लिपि को यदि भारतीय भाषाएं पूर्ण रूप से न अपनाएं तो भी सह और सम्पर्क लिपि के रूप में अपनाएं तो सुविधा अवश्य होगी।

मैतै लिपि का प्रश्न एक ऐतिहासिक भूल से जुड़ा है, अतः मैं उसके प्रयोग-प्रचलन के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहूँगा। किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना मेरा उद्देश्य नहीं है, किन्तु मैं सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट कर्नल एच. भुवन सिंह (जो मणिपुर लोक सेवा आयोग के सदस्य और कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे) के एक लेख के कुछ अंश अवश्य उद्धृत करना चाहूँगा।

जिस समय मणिपुर में मैतै लिपि के पुनः प्रचलन की माँग जोरों पर थी, श्री एच. भुवन सिंह जो स्वयं मैतै हैं ने स्थानीय साप्ताहिक "रेजिस्टेंस" (24 अगस्त 1984, पृ. 4) में एक लेख 'मैतै स्क्रिप्ट इन दा नेशनल कोनटेक्स्ट" (राष्ट्रीय संदर्भ में मैतै लिपि) शीर्षक से लिखा। यद्यपि उन्होंने शीर्षक में मैतै लिपि की ओर ही संकेत किया था किन्तु उन्होंने अपने लेख में देवनागरी लिपि को सारे देश में अपनाने की बात कही। श्री सिंह विद्वान एवं प्रबुद्ध तो हैं ही, साथ ही वे विदेशों में भी रह चुके हैं। अपने अनुभवों एवं परिपक्व विचारों के आधार पर आपने संपूर्ण देश के लिए एक लिपि की आवश्यकता बताते हुए लिखा 'जब कोई व्यक्ति भारत के पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करता है तो वह असमी, बंगला और गुरुमुखी लिपियों को देखते हुए गुजरता है। जब उसका सामना उर्दू लिपि से होता है, तो उसको लगता है कि वह जनरल जिया के क्षेत्र में घुस गया है, यद्यपि उर्दू को भारत में भी गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। यदि आप विभिन्न लिपियों को पहचानते हैं तो आपको रेलवे स्टेशनों के नामपट्ट पढ़ने पर आसानी से ज्ञात हो जाएगा कि आपकी गाड़ी कौनसे राज्य में गुजर रही है, यह है हमारा भारत। जब ऐसा है, तो आश्चर्य क्या कि आन्दोलन हों, *भूख हड़तालें हों और यहाँ तक कि मैतै लिपि के प्रचलन के लिए रक्तपात* भी हो और बंगाली लिपि को निकटस्थ खिड़की से बाहर फेंका जाए।

श्री सिंह ने आगे लिखा है—शांत हो जाइये, शांत हो जाइये, आप अपना धैर्य क्यों छोड़ रहे हैं, केवल इसलिए कि दूसरे क्षेत्रीय हठधर्मी लोग *धैर्य खो चुके हैं? कल्पना कीजिए उस भारत की जिसमें केवल एक लिपि*

हो। कितना सुन्दर हो, यदि कोई व्यक्ति नाम पट्ट पढ सके और किसी दवा की दुकान म घुसकर सामान्य बिक्री करने वाली दुकान का पता न पूछे। कितना सुन्दर हो कि भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक गाडी चलाने वाला सडक के किनारे लगे किलोमीटर के पत्थर पढ सके। क्यो सकीर्णता पैदा करें ? क्यो अपने ही देश मे विदेश जैसी छवि उत्पन्न करें ? केवल इसलिए कि आपको अपनी भाषा से बहुत गहरा प्यार है। वास्तविकता को क्यों भूलें ? भावनाओ के प्रवाह की एक सीमा है, उससे आगे उन्हे जाने नही देना चाहिए।

श्री सिंह ने इतना कहने के बाद सपूर्ण भारत के लिए एक ही लिपि का होना सबके हित म बताया है। एक लिपि के लाभ गिनाते हुए कहा है कि इसमे सदेह नही कि लिपि सास्कृतिक समृद्धि की प्रतीक है किन्तु लिपि तो मात्रा बोली गई भाषा को लिखने का माध्यम ही तो है। सक्षेप मे इतना ही कि हम सास्कृतिक गर्व मे डूबे हुए हैं इसलिए हम समान लिपि स्वीकार करने को तैयार नही हैं। उन्होने आगे लिखा कि मैतै लिपि का आन्दोलन लगता है *अन्य भाषा और लिपियो के प्रति क्षेत्रीय दुराग्रह के अनुकरण* पर जन्मा है। केवल हम अपने गर्व का त्याग करना होगा। उसके बाद समान लिपि स्वीकार करना आसान होगा। शात भाव से लिपि की समस्या पर विचार कीजिए और भावना के अवरोध से ऊपर उठिए तो एक स्पष्ट चित्र उभर आएगा।

लेख के अत मे विद्वान लेखक ने देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि के रूप मे सम्पूर्ण भारत मे अपनाने की प्रार्थना की है। साथ ही सभी समकालीन लिपिया को राष्ट्रीय सग्रहालय की शोभा बढाने के लिए छोड देने का अनुरोध किया है।

लेखक के अपने विचार हैं, पाठक इन्हें स्वीकार करें या नही किन्तु इतना हम भी स्वीकार करना ही होगा कि श्री सिंह ने समस्या को वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखा है और केवल मणिपुर ही नही, सम्पूर्ण भारत के लिए एक लिपि की आवश्यकता को स्पष्ट कर दिया है। भगवान करे वह दिन शीघ्र आए और श्री भुवनसिंह की कल्पना साकार हो।

मेरा दृष्टिकोण है कि यदि वास्तविकता से भावुकता को अलग न भी किया जाए, यद्यपि कहने को बहुत कुछ है, सुझाव भी हैं, कारण भी हैं परन्तु मैं जो भी कहूगा उसको हिन्दी वालो की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति से लेकर दुराग्रह तक की सज्ञा दी जाएगी, अत. अपनी ओर से कुछ कहना अनावश्यक होगा। परन्तु मैं यहा एक पाश्चात्य विद्वान के विचार अवश्य ही उद्धृत करने की घृष्टता करूगा। श्री डी पी. एल. ड्राइ जो ब्रिटिश

शिक्षाविद् हैं, ने भारत में अंग्रेजी उच्चारण पढ़ाने के लिए देवनागरी लिपि को अपनाने की सलाह दी है। (देखिए-इंग्लिश लैंग्वेज टीचिंग, वोल्यूम VII, अक्टूबर नवम्बर 1967, हैदराबाद) यदि देवनागरी लिपि को अंग्रेजी उच्चारणों को सिखाने के लिए एक ब्रिटिश शिक्षा शास्त्री पैरवी कर सकता है तो क्या भारतवासी भारतीय भाषाओं को सिखाने सीखने के लिए देवनागरी का प्रयोग नहीं कर सकते हैं? इस संबंध में अहिन्दी भाषा-भारतीय चिंतकों से विदेशी विचारकों तक के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं परन्तु जब तक यह प्रश्न भावना से जुड़ा रहेगा, ये उदाहरण अनावश्यक सिद्ध होंगे। प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति एक लिपि के हानि-लाभ और उपयोगिता को जानता ही है। आवश्यकता मात्र वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाने की है।

मणिपुर की जनजातियां और देवनागरी

मणिपुर में कई जन-जातीय भाषाएं हैं जिनका अन्यत्र उल्लेख किया गया है। इन भाषाओं की अपनी कोई लिपि नहीं। ऐतिहासिक कारणों से तथा ईसाई मिशनरियों ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इन भाषाओं के लिए रोमन लिपि का प्रचार किया था जो आज भी जारी है। मणिपुर में लिपि का समस्या का यह दूसरा पहलू है। इन बोलियों का साहित्य तथा पाठ्य पुस्तकें आज भी रोमन-लिपि में प्रकाशित होती हैं। रोमन एक विदेशी एवं अवैज्ञानिक लिपि है जिसके स्थान पर देवनागरी लिपि के प्रयोग का प्रश्न राष्ट्रीय संदर्भ में महत्वपूर्ण है। विदेशी लिपि का प्रयोग संस्कृति के विरुद्ध है। संपूर्ण देश में देवनागरी का अपनाने की आवश्यकता के विषय में उपर्युक्त पंक्तियों में कहा जा चुका है। इन जन जातियों को रोमन लिपि एवं ईसाई धर्म के माध्यम से भारतीय जीवन की मुख्य धारा में मिलने से रोका गया है और आज भी रोका जा रहा है। इन जन जातियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने और इनका भारतीयकरण करने के लिए लिपि की दीवार तोड़नी होगी। यदि प्रयत्न किए जाएं तो ये जन-जातियाँ जब विदेशी लिपि अपनाने को तैयार हो गई तो अपने ही देश की सरल और वैज्ञानिक लिपि को क्यों नहीं अपनाएंगी? देवनागरी का विरोध है किन्तु इस विरोध का कारण ईसाई मिशनरी हैं। निहित स्वार्थवश और राष्ट्र विरोधी विघटनकारी भावना फैलाने के लिए देवनागरी का विरोध किया जा रहा है। ईसाई मिशन एवं अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व ही इन जन-जातियों में देवनागरी के मार्ग में बाधा है। जहाँ भी इन मिशनरियों की घुस-पैठ संभव नहीं हुई है, वहाँ देवनागरी को अपनाया गया है, अरुणाचल इस का ज्वलंत उदाहरण है। असम की कुछ जनजातियों की भी यही स्थिति

है। प्रो वी के गोक्क ने 'इग्लिश इन इडिया; इट्स प्रेजेण्ट एण्ड फ्यूचर' मे देवनागरी लिपि को समस्त भारतीय भाषाओ के लिए अपनाने को राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना है।

उत्तर-पूर्वांचल के इन राज्यो मे राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ सक्रिय हैं, विघटनकारी तत्व सिर उठा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति मे राष्ट्रीय एकता के संदर्भ मे इन क्षेत्रो मे देवनागरी को अपनाने का महत्व स्वत: सिद्ध है। अत: रोमन लिपि के स्थान पर देवनागरी के प्रयोग के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए। फिर इन जन-जातियो के विद्यार्थियो के लिए भी हिन्दी भाषा अनिवार्य है ही। वे देवनागरी से परिचित हैं, केवल उनके भाषा की पाठ्य-पुस्तकें, कोश आदि देवनागरी में तैयार करके देवनागरी का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है। सरकार और स्वैच्छिक सस्थाओ को इस दिशा मे कार्य करना चाहिए।

संदर्भ :

1. डॉ जी ए ग्रियर्सन : लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इडिया, वाल्यूम I पृ॰ 51
2. टी. सी हडसन लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इडिया, वाल्यूम III पार्ट III पृ. 21
3. प्रो. नन्दलाल शर्मा · मैलैलॉन, पृ. 6
4. प्रो उब्बु तोमचो सिह कल्चरल पनी, नवम्बर 1969
5. श्री एम बीरासिंह तथा श्री एच. रोमनीसिह-दा मणिपुरी थियेटर एण्ड ड्रामा—सेमिनार प्रकाशन-ऑल मणिपुर थियेटर वार्फ्स, इम्फाल, 1968.
6. डॉ एम. कीर्तिसिंह-रिलिजियस डेवलपमेंट्स इन एटीन एण्ड नाइनटीथ सेंचुरीज-(1980), प्र मणिपुर स्टट कला अकादमी, इम्फाल, पृ. 131.
7. श्री एन. खेलचन्द्रसिंह—आदि का मणिपुर साहित्य जी इतिहास, पृ (154-186)

5 मणिपुर की हिन्दी प्रचारक संस्थाएं

मणिपुर में हिन्दी की अनेक प्रचारक संस्थाएं हैं जिनके नाम ऐतिहासिक यात्रा वाले अध्याय में दिये जा चुके हैं किन्तु प्रत्येक संस्था का अपना इतिहास है और गतिविधियां भी। यहां पूरा इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सका। अतः महत्वपूर्ण एवं सक्रिय संस्थाओं के इतिहास तथा कार्यों का विवरण आवश्यक है। काल क्रमानुसार इन संस्थाओं का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। संस्थाओं के परिचय के पश्चात् कुछ हिन्दी सेवियों का परिचय भी दिया गया है। इन संस्थाओं को दो भागों में बांटा गया है—शिक्षण संस्थाएं तथा अन्य संस्थाएं।

मणिपुर की हिन्दी प्रचारक शिक्षण संस्थाएं

मणिपुर में हिन्दी प्रचारक संस्थाओं को भी दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: राजकीय तथा अर्द्ध राजकीय शिक्षण संस्थान और स्वैच्छिक संस्थान। राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय शिक्षण संस्थाओं का परिचय भी विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत दिया जा रहा है।

केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाएं—

केन्द्रीय विद्यालय

मणिपुर राज्य में चार केन्द्रीय विद्यालय हैं जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा चलाए जाते हैं। इनमें से प्रथम लम्फेलपाट, इम्फाल, द्वितीय लागजिंग, इम्फाल में तृतीय लोक्ताक प्रोजेक्ट, लोक्ताक में है। इनमें केन्द्रीय सरकार के अधिकारियों के बच्चों के साथ मणिपुर के सरकारी, अर्द्ध सरकारी अधिकारियों एवं अन्य बच्चों को भी स्थान रहने पर पढ़ने का अवसर मिलता है। कक्षा एक से दस तक इन विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन किया जाता है, इन विद्यालयों में प्रवेश के लिए लोग लालायित रहते हैं, यहां तक कि स्थानीय मंत्रियों के बच्चे भी इनमें पढ़ते हैं। अतः इनके द्वारा मणिपुर में हिन्दी प्रचार का कार्य किया जा रहा है।

सैनिक स्कूल :

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा मणिपुर में एक सैनिक स्कूल की पगई, इम्फाल में स्थापना की गई है। वहां कक्षा छः से दस तक हिन्दी

अनिवार्य विषय के रूप मे पढाई जाती है। इसमें मणिपुर के अतिरिक्त नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा, असम एवं अरुणाचल के विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण करते हैं तथा हिन्दी सीखते हैं।

हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय :
(भारत सरकार, मणिपुर केन्द्र, इम्फाल)

26 अगस्त 1985 से गृह मत्रालय द्वारा उक्त शिक्षण योजना के अन्तर्गत एक हिन्दी प्राध्यापक की नियुक्ति की गई है। इम्फाल स्थित केन्द्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयो तथा स्थानीय बैंको मे सन् 1985 से हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम का आरम्भ किया गया है। महालेखाकार मणिपुर, आकाशवाणी केन्द्र, डाकतार विभाग, आयकर आदि केन्द्रीय कार्यालयों के कर्मचारियों के साथ विभिन्न स्थानीय बैंको मे हिन्दी शिक्षण आरम्भ हो चुका है। अब तक कई कर्मचारी इस योजना के अन्तर्गत हिन्दी की परीक्षाए भी उत्तीर्ण कर चुके हैं। किन्तु आकडे उपलब्ध नही हो सके हैं।

उल्लेखनीय तथ्य यह है कि सन् 1955 ई. मे योजना आरम्भ की गई थी किन्तु इसका मणिपुर मे क्रियान्वयन सन् 1985 मे हुआ। यदि यह योजना तीस वर्ष पूर्व लागू की जाती तो हिन्दी के प्रचार में कितनी सहायता मिलती। केन्द्रीय कार्यालयो की सख्या एवं कर्मचारियो की सख्या देखते हुए एक अध्यापक की नियुक्ति अपर्याप्त है। और अध्यापको की नियुक्ति तथा राजधानी के बाहर भी शिक्षण केन्द्र खोले जाने चाहिए।

(II) प्रान्तीय सरकार द्वारा सचालित शिक्षण संस्थाए
सरकारी विद्यालय —

मणिपुर सरकार के द्वारा प्रकाशित वर्ष 1983-84 के प्रशासनिक प्रतिवेदन के अनुसार मणिपुर मे 2962 विद्यालय हैं। इनम कक्षा 5 से आठ तक हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप म पढ़ाई जाती है। मणिपुर की पाठशालाओ म पहले कक्षा तीन से आठ तक हिन्दी अध्यापन किया जाता था किन्तु 1983 से कक्षा छ से आठ तक ही पढ़ाई जाती है, किन्तु 1988 से पुन कक्षा तीन से आठ तक पढाई जावेगी।

भँरोदान हिन्दी हाइ स्कूल, इम्फाल एव हिन्दी हाइ स्कूल, कांगला थोगबी तथा काला पहाड के विद्यालयो में सभी विषयों का अध्यापन हिन्दी के माध्यम से किया जाता है।

मणिपुर के सभी हाइ स्कूलो तथा हायर सैकेन्डरी स्कूलो मे हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था है। किन्तु हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी के स्थान पर अन्य विषय पढाने पड़ते हैं। क्योंकि हिन्दी विषय लेने वाले विद्यार्थियों की

अभाव है। अनेक अध्यापकों को तो शिक्षा विभाग में विशेष अधिकारी (ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी) के रूप में नियुक्त कर दिया गया है। तथा कक्षा तीन से कक्षा पांच तक अध्यापन की व्यवस्था समाप्त होने के बाद अनेक रियायतों में हिन्दी अध्यापकों को अन्य विषय पढ़ाने को विवश होना पड़ा है।

दिगम्बर जैन हाइ स्कूल, चतुर्थ आसाम राइफल स्कूल एवं गुरु नानक हाइ स्कूल इम्फाल की दो पाठशालाएं हैं जहां हिन्दी कक्षा एक से दस तक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। हर कृष्ण मिशन द्वारा संचालित *पाठशाला में हिन्दी संस्कृत अध्यापन की विशेष व्यवस्था की गई है।*

सरकारी महाविद्यालय

मणिपुर में कुल 32 महाविद्यालय हैं जिनमें केवल छः में हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था है। डी एम कालेज आफ आर्ट्स एण्ड कामर्स, इम्फाल में बी ए आनर्स में हिन्दी, कोर विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। धनप्रिया महिला महाविद्यालय, इम्फाल, प्रोविडेंसी कॉलेज, मोट बुंग तथा नादिया चाद कॉलेज, इम्फाल में भी हिन्दी बी ए तक पढ़ाई जाती है। काकचिंग एवं नम्बोल स्थानों पर भी बी. ए. स्तर तक हिन्दी अध्यापन होता है।

मणिपुर सरकार द्वारा संचालित दो हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र भी इम्फाल में कई वर्षों से केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। एक महाविद्यालय है, जहां स्नातक स्तर की प्रशिक्षण व्यवस्था है तो दूसरे में दसवीं पास अध्यापकों हेतु सर्टिफिकेट कोर्स की प्रशिक्षण व्यवस्था उपलब्ध है। इन केन्द्रों के विद्यार्थी आगरा जाकर एक महीने के लिए रहते हैं। हिन्दी वातावरण में रहकर वे हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। इन केन्द्रों में नवीकरण पाठ्यक्रम भी चलाये जाते हैं, जो अध्यापकों हेतु उपयोगी हैं।

मणिपुर विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

वस्तुत वर्तमान हिन्दी विभाग जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय *स्नातकोत्तर केन्द्र, कांचीपुर, इम्फाल का अंग था। सन् 1979-80 में* हिन्दी विभाग आरम्भ हुआ। जनवरी 1980 में प्रथम सिमेस्टर में आठ विद्यार्थियों को एम ए में प्रवेश दिया गया। डॉ देवदत्त कौशिक एसोसिएट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष एवं श्री उदयप्रकाश सिंह, एसिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किये गये। डॉ जगमलसिंह सन् *1980* अप्रैल में पार्ट टाइम अध्यापक नियुक्त किये गये। सन् 1980 मणिपुर का सबसे अशांत वर्ष था जब भूमिगत विद्रोही गतिविधियां चरम सीमा पर थी। डॉ देवदत्त कौशिक

दो-तीन महीने रहकर दिल्ली चले गये और उदयप्रकाश जी यहा सम्भवतः कुल पाच छ महीने रहे, वे भी लौट गये। प्रथम सिमेस्टर की पढाई डॉ जगमलसिह और डॉ एस तोम्बासिह (जिनकी नियुक्ति हिन्दी विभाग मे 22 सितम्बर, 1980 को हुई।) ने डॉ ए दीनमणी सिह की सहायता से पूरी की। डॉ के इबोहलसिह तथा डॉ. मार्कण्डेराय ने भी पार्टटाइम अध्यापक के रूप मे विभाग मे कार्यारम्भ किया। सन् 1982 मे श्री लम्बोदर झा की विभाग मे असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप मे नियुक्ति हुई। श्री महेशप्रसाद सिन्हा भी पार्टटाइम टीचर रहे और डॉ जवाहरसिह ने भी मार्च सन् 1984 म पार्टटाइम अध्यापक के रूप मे कार्यारम्भ किया। डॉ जगमलसिह को जुलाई, 1984 मे विभाग मे स्थाई नियुक्ति मिलने से पूर्व पार्ट टाइम अध्यापक के रूप मे तीन बार सेवानिवृत्त किया गया तथा पुन नियुक्ति भी की गई। सन् 1984 जुलाई मे विभाग मे चार सदस्य स्थाई हो गये तथा फरवरी 1985 म डॉ कृष्णनारायण प्रसाद की प्रोफेसर पद और डॉ देवराज की असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति हुई। इसी वर्ष रिसर्च एसोसिएट के रूप में कु ह सुवदनी देवी ने भी विभाग मे कार्यभार सम्हाला। सम्प्रति विभाग मे एक प्रोफेसर, तीन एसोसिएट प्रोफेसर तथा दो असिस्टेंट प्रोफेसर तथा एक रिसर्च एसोसिएट है। डॉ एस तोम्बा हिन्दी विभाग से मणिपुरी विभाग मे एसोसिएट प्रोफेसर बनकर चले गये। श्री ए सोमरेन्द्रो शर्मा (कार्यालय सहायक) तथा श्री एम समदेन सिह (चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी) विभाग के परिवार के शुरू से सदस्य है।

विभाग मे ब्रिजकोर्स, एम ए, एम फिल. तथा शोध की सुविधाए उपलब्ध है। एम फिल पाठ्यक्रम 1987-88 से आरम्भ होगा। विभाग की विभिन्न गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत है।

जब 1 अप्रैल, 1980 को जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने अपने केन्द्र को मणिपुर विश्वविद्यालय को सौंपा तब से विभाग मणिपुर विश्वविद्यालय का केन्द्र है।

मणिपुर विश्वविद्यालय के एम ए हिन्दी पाठ्यक्रम की विशेषता यह है कि इसमे एक प्रश्न-पत्र मणिपुरी भाषा एव साहित्य और दूसरा मणिपुरी से हिन्दी और हिन्दी से मणिपुरी अनुवाद का है। अग्रेजी या अन्य भारतीय भाषाओ से भी हिन्दी म अनुवाद करने का विकल्प रखा गया है। अनुवाद वाले प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत विभाग के पास एक सुव्यवस्थित योजना है जिसके अन्तर्गत हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकारो की रचनाओं का मणिपुरी म अनुवाद कराया जा रहा है। दूसरी ओर मणिपुरी भाषा की श्रेष्ट कृतियो का हिन्दी मे अनुवाद कराया जा रहा है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से तथा आधुनिक

भारतीय भाषाओ से निकटता स्थापित करने एवं पारस्परिक आदान-प्रदान हेतु पाठ्यक्रम में अनुवाद के सिद्धान्त पक्ष के साथ एक पुस्तक के अनुवाद की व्यवस्था है।

विभाग के विद्यार्थी एव अध्यापक मणिपुर के विभिन्न क्षेत्रो में जाकर हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य करते हैं। विभाग के विद्यार्थियो को प्रतिवर्ष हिन्दी प्रदेशो की यात्रा पर भी ले जाते हैं जिससे उन्हें हिन्दी बोलने सुनने व सीखने का अवसर प्राप्त हो सकें। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से भी दो विद्यार्थियो को हिन्दी प्रदेश की यात्रा पर भेजा गया था।

मणिपुर विश्वविद्यालय की स्थापना (1 अप्रैल, 1981) के पश्चात् हिन्दी विभाग मे शोधकार्य आरम्भ हुआ। निम्नांकित शोधार्थी पी-एच डी. उपाधि प्राप्त कर चुके हैं :—

नाम	वर्ष	विषय	निदेशक
1. डा चन्द्रेश्वर दुबे	1985	हिन्दी और नेपाली भाषा की व्याकरणिक कोटियां का तुलनात्मक अध्ययन	डा. एस तोम्बा सिंह
2. डा लम्बोदर झा	1986	पश्चिमी बंगाल मे मैथिली की विभाषा मुट्टी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	डा कृष्णनारायण प्रसाद मागध
3. डा श्याम लाल	1986	राजस्थानी और हरियानी लोकगीतो का तुलनात्मक अध्ययन	डा. जगमलसिंह
4. डा अनन्तकुमार नाथ	1986	ग्वालपाडे जिले का मनसा काव्य पाठ सपादन और अनुशीलन	डा. कृष्णनारायण प्रसाद मागध
5. डा मथुराप्रसाद	1987	वाज्जिका और असमिया सस्कार गीतो का तुलनात्मक अध्ययन	,,
6. डा. अरुणप्रकाश ढोंडियाल	1987	हिमांशु जोशी के आचलिक कथा साहित्य मे समसामयिक परिस्थितियों की अभिव्यक्ति	डा. जगमलसिंह

7. डा. हीरालाल गुप्त 1987 आंचलिक्ता के परिप्रेक्ष्य में नागार्जुन के उपन्यासों का अध्ययन — डा. जवाहरप्रसाद सिंह

निम्नांकित शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं :—

1. निदेशक : डा. एस. तोम्बासिंह, एसोसिएट प्रोफेसर मणिपुरी भाषा एवं साहित्य विभाग, कांचीपुर।
    1. श्रीमती वी विक्टोरिया देवी (1982)
       विषय : मणिपुरी और हिन्दी के प्रत्ययों का तुलनात्मक अध्ययन"
    2. श्री अरिबम ब्रजकुमार शर्मा
       विषय : "मणिपुरी कोशों का उद्भव और विकास"
    3. श्री एस रजितसिंह
       विषय : 'हिन्दी और मणिपुरी के रूपीमों का तुलनात्मक अध्ययन'

डा. एस. तोम्बासिंह स्थानीय लोगों में प्रथम पी-एच डी. हैं तथा मणिपुर विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम हिन्दी में आपके निर्देशन में डॉ. चन्द्रेश्वर दुबे ने पी-एच. डी प्राप्त की।

हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर—

2. निदेशक : डा. कृष्णनारायण प्रसाद, मागध, प्रोफेसर
    1. कुमारी एल. वेदान्ती देवी (1985),
       विषय : "महाराज कुमारी विनोदिनी देवी एवं मृणाल पांडेय के कथा और नाटक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन"।
    2. कुमारी निराजना महन्त (1986),
       विषय : "मगही और असमिया लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन"।
    3. कुमारी रमा श्रीवास्तव (1986),
       विषय : "रामायणी कथा और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन"।
    4. श्री गोरखनाथ मिश्र (1986),
       विषय : "राम रसायन और रामरस लहरी का तुलनात्मक अध्ययन"।
    5. श्री दिनेशकुमार चौबे (1986),
       विषय : "राम कथा और सप्तकाण्डेर रामायण का तुलनात्मक अध्ययन"।
3. निदेशक : डा. जवाहर प्रसाद सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर :
    1. श्रीमती शारदा पांडेय (1984),

विषय : "फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का शिल्प"।

2. श्री हेमकांति सिन्हा (1985).
विषय : "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी बंगला कविता का तुलनात्मक अध्ययन"।
3. श्री बेचन सिंह (1985),
विषय : "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में मध्यम वर्ग"।
4. श्री ध्यानी शर्मा (1987),
विषय : "नागार्जुन . व्यक्ति और विचारधारा"।

4 निदेशक : डा. जगमल सिंह एसोसिएट प्रोफेसर

1. श्री शेरसिंह (1984),
विषय : ' हिन्दी के प्रकृतिवादी उपन्यास"।
2. श्री लक्ष्मीनारायण कारपेंटर (1986),
विषय : "राजस्थान और ब्रज के लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन"।
3. *श्री सगोलसेम लनचेनबा मीतै (1987),*
विषय : 'हिन्दी और मणिपुरी लोकगाथाओं में कथानक रूढ़ियाँ'।
4. श्री खेमानन्द शर्मा (1987),
विषय : "राजस्थानी और नेपाली लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन।"
5. श्री शिवशंकर राय (1987),
विषय : "गाजीपुर जिले का मौखिक साहित्य"।

5. निदेशक : डा. देवराज, एसोसिएट प्रोफेसर

1. श्री ऋषभदेव शर्मा (1985),
विषय "सन उन्नीस सौ सत्तर के पश्चात् की हिन्दी कविता का अनुशीलन (राष्ट्रीय, राजनैतिक और सामाजिक संदर्भ में विशेष)"
2. श्री शिवनारायण प्रसाद (1987),
विषय : "विष्णु प्रभाकर के साहित्य में व्यक्त विचारधारा का विश्लेषणात्मक अध्ययन"।
3. कुमारी सरिता जैन (1987),
विषय : "शिव प्रसाद सिंह का कथा साहित्य"।

6. निदेशक . डा. लम्बोदर झा, एसोसिएट प्रोफेसर

1. सुश्री एल इबेमहल देवी (1987),
विषय : "ब्रजबुली गीति काव्य के परिप्रेक्ष्य में मणिपुरी गीति काव्य का अनुशीलन"।

2. सुश्री सुन्दरी अहानथेंबी (1987),
विषय : "हिन्दी एवं मणिपुरी नाट्य साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन"।

7. डा. क. इबोहल सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर

1. श्री एम. अचौबी सिंह (1987),
विषय : "हिन्दी और मणिपुरी के प्रत्ययों का तुलनात्मक अध्ययन"।

2. श्री राजकुमार खिदिर चांदसिंह (1987),
विषय : "हिन्दी और मणिपुरी लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन"।

3 श्री एस लोकेन्द्र शर्मा (1987),
विषय : "मणिपुरी भाषा मे हिन्दी से आगत शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'।

प्रेसिडेंसी कालेज, मोटबुड.

8. निदेशक डा. महात्मासिंह, व्याख्याता

1. श्री जगदीश सिंह (1987),
विषय : हरिकृष्ण प्रेमी एव उदयशकर भट्ट के नाटको का तुलनात्मक अध्ययन।

2 श्री राम सुधार (1987),
विषय : भोजपुरी लोक गीतों का अध्ययन।

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग में अनुवाद कार्य

1980 मे जब मणिपुर में स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन अध्यापन आरम्भ हुआ तो डॉ नामवर सिंह ने पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय मुझसे विचार-विमर्श किया। मैंने उन्हे सुझाव दिया कि स्थानीय आवश्यकताओ और आकाक्षाओं को ध्यान मे रखकर ही जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, स्नातकोत्तर केन्द्र, इम्फाल के लिए एम, ए हिन्दी का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाए। मैंने उनसे अनुवाद (मणिपुरी से हिन्दी तथा हिन्दी से मणिपुरी) तथा मणिपुरी भाषा एव साहित्य का परिचयात्मक इतिहास पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करने की संस्तुति की। डॉ. नामवर सिंह ने इस सुझाव का स्वागत किया तथा दोनो ही विषय पाठ्यक्रम मे सम्मिलित कर लिये गए। ज्ञातव्य है कि डॉ. नामवर सिंह जी तत्कालीन केन्द्र में समय-समय पर आया करते थे तथा उन्हें स्थानीय वातावरण की स्वय अच्छी जानकारी थी। उनकी व्यक्तिगत जानकारी उपयोगी सिद्ध हुई।

परिणाम-स्वरूप एम. ए. के प्रथम सत्र मे उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियो द्वारा निम्न मणिपुरी पुस्तको का हिन्दी अनुवाद करवाया गया :—

1. श्री विजयानन्द द्वारा श्री सो काला चांदसिह की पुस्तक 'सक्षिप्त मणिपुरी साहित्य का इतिहास' के प्रथम अध्याय आदिकाल का अनुवाद किया गया।
2 श्री अ ब्रजकुमार शर्मा द्वारा श्री समरेन्द्र के नाटक 'जज साहब की इमुड' का अनुवाद किया गया।
3 कुमारी हजारी मयुम इबेयाइमा देवी ने श्री एल सोमरेन्द्र सिंह के नाटक 'तीर्थ यात्रा' का हिन्दी अनुवाद किया।

यह अनुवाद क्रम 1981 मे मणिपुर विश्वविद्यालय बन जाने पर भी जारी रहा।

इसके बाद विभाग मे एम ए. उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियो द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को निम्न तालिका म दिखाया गया है

मूल पुस्तक/लेखक/भाषा	अनुवादक	वर्ष
1 अनुराधापुर आश्रमगी राजकुमार मोइरायेम इनाउ सिंह, मणिपुरी रेडियो नाटक	कु एल वेदान्तीदेवी अनुराधापुर आश्रम का राजकुमार	1983-84
2 अनोबा अयुक माइबम रामचरण सिंह मणिपुरी नाटक	श्री थोंयोम थोइबा सिंह नव प्रभात	1983-84
3 कर्णगी अराइबा याहिम श्री निङोम्बम इयोबी सिंह मणिपुरी नाटक	कु क्षेत्रिमयुम प्रमिला देवी कर्ण का अन्तिम शयन	,, ,,
4 इलिश अमागी माहाओ श्री एन. कु ज मोहन सिंह मणिपुरी कहानी सग्रह	श्री ए के. नरेन्द्र जीत सिंह	,,
5 पिस्तौल अमा कुन्दो लैई अमा डॉ ए दीनमणि सिंह मणिपुरी कहानी सग्रह	श्री से मयुम ऐरावत सिंह एक पिस्तौल व एक कुन्दोफूल	,,
6. जज साहेब की इमूङ अराम्बम समरेन्द्र मणिपुरी नाटक	कुमारी सुन्दरी अहानथेंबी जज साहब का परिवार	1984-85

7. मोराम्बी अडाओबी डॉ ए दीनमणी सिंह मणिपुरी कहानी संग्रह	कुमारी एल इबेमहल देवी पुतली के पगली	,,
8 प्रेम चंद की (सात) श्रेष्ठ कहानिया हिन्दी कहानी संग्रह	श्री वाई तोम्बा सिंह	,,
9 रामचरितमानस (गीता प्रेस) के गद्यानुवाद हिन्दी से	सर्व श्री नवा सिंह, मनोबी सिंह, लोकेन्द्र जीत सिंह, श्रीमती सत्यरानी देवी श्रीमती इबेमहल देवी आदि।	1985-86

अन्य भाषाओं से अनुवाद :

श्रीमती शारदा पाडे, श्री नील कुमार साहू, श्रीमती प्रमिला नागर, श्री सुरेन्द्र कुमार पाडेय ने अग्रेजी पुस्तको का अनुवाद कार्य किया।

नेपाली साहित्य के इतिहास के 150 पृष्ठो का नेपाली भाषा से हिन्दी अनुवाद श्री शातिराम भट्टराइ द्वारा मेरे निदेशन मे 1985 ई म किया गया।

हिन्दी से मणिपुरी अनुवाद का प्रारम्भ विभाग मे डॉ ए. दीनमणि सिंह जी ने किया। मणिपुरी विभाग मे काम करते हुए भी प्रेम के कारण आप हिन्दी विभाग मे अनुवाद कार्य के लिए विद्यार्थियो का निदेशन करते रहे तथा कक्षाए भी पढ़ाते रहे। उस समय विभाग मे अध्यापको की कमी थी।

बाद मे डॉ इबोहल सिंह काङजम तथा कुमारी हजारी मयुम सुवदनी देवी के निर्देशन मे हिन्दी मणिपुरी तथा मणिपुरी हिन्दी अनुवाद कार्य किया जा रहा है। डॉ जगमल सिंह एव डॉ जवाहर सिंह अग्रेजी से हिन्दी अनुवाद का निदेशन करते हैं।

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग मे लघुशोध प्रबन्ध :

1982 के सत्र में श्री हीरालाल गुप्ता, श्री शेर सिंह, एव कुमारी इबेमहल थानु ने 'हिन्दी तथा मणिपुरी भाषा का व्यतिरेकी अध्ययन' पर अलग-अलग तीन लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किए। इन तीनों शोध प्रबन्धों का निदेशन डॉ स तोम्बा सिंह, तत्कालीन विभागीय अध्यक्ष ने किया।

डॉ स तोम्बा सिंह के निदेशन में श्री वाई कुन्ज बिहारी सिंह ने 1984-85 सत्र म हिन्दी और मणिपुरी कारक रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा।

1985-86 के सत्र म श्री सगोलसेम लनचेनबा मीतै ने राजस्थानी और मणिपुरी त्योहार गीतों का व्यतिरेकी अध्ययन तथा श्री तारा सिंह विष्ट ने

'राजस्थानी और नेपाली त्यौहार गीतों का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक लघु-शोध प्रबन्ध डॉ. जगमल सिंह के निदेशन मे प्रस्तुत किया जबकि श्री ख्याली शर्मा ने नागार्जुन के कथासाहित्य पर डॉ. जवाहर प्रसाद सिंह के निदेशन मे लघु-शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया।

व्याख्यान माला :

जब भी इम्फाल मे हिन्दी के विद्वान पधारते हैं तो उन्हें बुलाकर विभाग मे व्याख्यान करवाने की परम्परा रही है। प्रो विष्णुकान्त शास्त्री, प्रो. विद्यानिवास मिश्र, डॉ कृष्ण कुमार शर्मा (के. हि स , आगरा) डॉ दुर्गा दीक्षित, डॉ श्रीमती व स आनन्द (एन सी.ई आर टी), डॉ एन रमन नायर, डॉ श्रीधर सिंह आदि के अतिरिक्त केन्द्रीय हिन्दी सस्थान के निदेशक डॉ वी जी मिश्र और अन्य विद्वान जब भी मणिपुर आये, विभाग मे उनके व्याख्यान करवाये गये।

मणिपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की गतिविधियो का विस्तार से उल्लेख करने का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि विभाग स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान मे रखते हुए हिन्दी को मणिपुरी के निकट लाने का प्रयास कर रहा है तथा दोनो भाषाओं के परस्पर आदान-प्रदान द्वारा दोनो के भाषा-साहित्य को समृद्ध करने की दृष्टि से प्रयत्नशील है। विभाग की स्थापना के साथ उक्त लक्ष्य को ध्यान मे रखकर प्रयत्न किए जा रहे हैं। अनुवाद कार्यों, लघु-शोध-प्रबन्धो, शोध-प्रबन्धो द्वारा भारतीय भाषाओं से पारस्परिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया अपनाई गई है। हिन्दी विभाग अभी अपना शैशवकाल समाप्त करके बाल्यकाल मे पदार्पण कर चुका है। बिना किसी शोध सहायता के विभाग ने मणिपुरी भाषा, साहित्य, सस्कृति, धर्म एव इतिहास सम्बन्धी गवेषणा का कार्य हिन्दी मे आरम्भ किया है, जिससे हिन्दी जगत मणिपुर, मणिपुरी भाषा साहित्य से परिचित हो सके।

गवेषणा को तुलनात्मक आधार पर नियोजित किया गया है। मणिपुरी लोकसाहित्य से हिन्दी लोक साहित्य की तुलना की विभिन्न स्थानीय जनजातीय एव हिन्दी, पूर्वांचल की भाषाओं और साहित्य से तुलना की, बहुभाषी शब्दकोश निर्माण की स्थानीय आवश्यकताओ एव जनाकाक्षाओं की पूर्ति हेतु विभाग के सम्मुख वृहद् योजना एक चुनौती बनकर खडी है। विभाग सुसगठित टोली (टीम) के रूप मे इस चुनौती का सामना करने को तत्पर है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण कार्य है और भावी योजनाए भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, अत. सरकारी

एवं गैर सरकारी संस्थाओं को विभाग की योजनाओं को पूरा करने में सहयोग करना चाहिए।

हिन्दी परिषद्, हिन्दी विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय :

डॉ देवराज, डॉ. इबोहलसिंह काङजम एवं डॉ. जगमल सिंह के प्रयत्नों से विभाग में "परिषद्" का गठन हुआ। "परिषद्" का उद्घाटन दिनांक 12 दिसम्बर 1987 मणिपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो के. जे. महालय द्वारा किया गया। "परिषद्" की ओर से वार्षिक पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित हो गया है। उपर्युक्त तीनों व्यक्तियों के सम्पादन में प्रथम अंक प्रकाशित किया गया है। पत्रिका में सभी सामग्री मणिपुर से सम्बन्धित है तथा विभाग के प्राध्यापकों एवं लेखकों द्वारा तैयार की गई है।

अन्य संस्थाएं—

मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इम्फाल

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की प्रांतीय शाखा है—मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इम्फाल। "समिति" के असम-प्रदेश के संचालक श्री यमुना प्रसाद श्रीवास्तव 1939 में प्रचार कार्य के निमित्त गोहाटी से इम्फाल आए। उनके भाषणों से प्रेरणा पाकर मणिपुर में 1940 में मणिपुर हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई, जिसका कार्यालय थोकचोम मधुसिंह जी के घर में था और पदाधिकारी निम्न थे—अध्यक्ष श्री राधा मोहन शर्मा, मंत्री श्री थोकचोम मधुसिंह एवं कोषाध्यक्ष श्री थागजम रघुमणि सिंह।

"समिति" की ओर से वर्धा से श्री जयेन्द्र वर्मा "साहित्यरत्न" को मणिपुर में प्रचारक नियुक्त किया गया। उनके प्रयत्नों से इम्फाल में कई स्थानों पर वर्ग खोल दिये गए और इन वर्गों में अनेक लोगों ने हिन्दी सीखना आरम्भ किया।

1940 ई में काका साहेब कालेलकर जी और परीक्षा मंत्री श्री अमृत लाल नाणावटी ने इम्फाल की यात्रा की। काका साहब कालेलकर जी ने मणिपुर की जनता को कई स्थानों पर भाषण दिये और उनमें मणिपुर को भारत का अंग बताते हुए राष्ट्रभाषा सीखने की प्रेरणा दी। इन भाषणों का अनुकूल प्रभाव पड़ा और जनता ने हिन्दी सीखने में रुचि दिखाई। 1942 ई. में 10 मई को इम्फाल शहर पर जापान ने बम वर्षा की और यह शांत प्रदेश युद्ध की विभीषिका का शिकार बन गया। उसी वर्ष श्री थोकचोम मधुसिंह जी जो हिन्दी प्रचार के इतिहास की अग्रिम पंक्ति में थे और निष्ठावान कर्मठ कार्यकर्त्ता थे, की मृत्यु हो गई। युद्ध और मधुजी की मृत्यु से हिन्दी प्रचार कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

श्री कैशाम कुंजबिहारी सिंह भी जो प्रारम्भ से ही हिन्दी प्रचार कार्य से जुड़े थे, ने युद्ध के दौरान गाव-गांव मे जाकर राष्ट्रभाषा वर्ग खोले। श्री कैशाम कुंजबिहारी एव प राधा मोहन शर्मा जी के प्रयत्नो से राष्ट्रभाषा प्रचार कार्य पुनर्जीवित हुआ। दोनों सज्जनों ने परीक्षा केन्द्र खोला और क्रमश केन्द्र व्यवस्थापक एव प्रमाणित प्रचारक बन कर हिन्दी प्रचार कार्य में जुट गए।

1946-47 मे श्री छत्रध्वज शर्मा जी ने वर्धा मे प्रचारक प्रशिक्षण शिविर मे भाग लिया और उसके बाद वे मणिपुर प्रान्त के लिए जिला प्रमाणित प्रचारक नियुक्त किये गये। श्री छत्रध्वज शर्मा की 27 अप्रेल, 1975 को गुर्दे के रोग के कारण मृत्यु हो गई। श्री शर्मा ने सन् 47 से 75 तक निरन्तर हिन्दी प्रचार कार्य किया। शर्मा जी ने हिन्दी प्रचार के लिए अध्यापन किया, सगठन किया, व्यक्तिगत सपर्क एव प्रभाव से नेताओ तथा जनता की राष्ट्रभाषा मे रुचि उत्पन्न की, विभिन्न पाठ्य-पुस्तकें लिखीं जो हिन्दी-मणिपुरी भाषाओ तथा देवनागरी तथा बगला-असमी लिपि मे लिखी गई थी, जिससे हिन्दी भाषी लोगो को मणिपुरी तथा मणिपुरी लोगो को हिन्दी सीखने में सुविधा हो। उनके प्रयत्नों तथा मणिपुर मे हिन्दी प्रचार से सतुष्ट हो 'समिति' की प्रचार समिति की बैठक प्रयाग मे राजर्षि पुरुषोत्तम दास टडन को अध्यक्षता मे हुई जिसमे मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इम्फाल नामक प्रान्तीय सस्था खोलने का निणय किया गया। श्री शर्मा तथा तत्कालीन प्रचारकों के उत्साह एव प्रचार के परिणाम स्वरूप ही 1950 मे मणिपुर को एक पूर्ण राज्य मानकर इस शाखा की स्थापना की गई। ज्ञातव्य है कि मणिपुर का भारत म विलय 15 अक्टूबर 1949 को हुआ था और उस समय तक मणिपुर मे एकतत्र था। श्री ला कालाचाद सिंह शास्त्री को समिति का अध्यक्ष, श्री छत्रध्वज शर्मा मत्री, श्री कृष्णचन्द्र शर्मा सहमत्री और श्री ले. आबीर सिंह कोषाध्यक्ष नियुक्त किय गये तथा श्री गौरहरि शर्मा जी तथा श्री वा नियाई सिंह प्रथम समिति के सदस्य थे। 'म रा मा प्र. समिति' का अस्थायी कार्यालय ओ. के (बुक) स्टोर, इम्फाल म एक जनवरी, 1951 को खोला गया।

'म रा. मा. प्र. समिति' के कार्य एव उत्साह के परिणाम स्वरूप 2-3 जुलाई 1953 को मणिपुर स्टेट कांग्रेस के राजनीतिक सम्मेलन मे हजारो लोगो की उपस्थिति मे राष्ट्रभाषा प्रचार के सम्बन्ध म निम्न प्रस्ताव पारित किया गया .

"अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अन्तर्गत मणिपुर प्र समिति, मणिपुर के गावा मे कई सालों से आज तक राष्ट्रभाषा हिन्दी

का प्रचार करके जनता की सेवा कर रही है, यह बात सबको ज्ञात ही है। अतः आज का राजनैतिक सम्मेलन यह निर्णय करता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार कार्य के लिए गाव-गाव मे राष्ट्रभाषा वर्ग और विद्यालय खोले जाए और वर्तमान राष्ट्रभाषा विद्यालयो को जीवित रखने के लिए मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए मणिपुर एव केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया जाए।

'वर्धा समिति' के मुख्यालय से प्रधानमत्री श्री मोहन लाल भट्ट ने भी 19-1-55 को मणिपुर का दौरा किया तथा परीक्षा केन्द्रो व विद्यालयो के निरीक्षण के साथ सभी प्रचारकों-अध्यापको से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया। वे नेताओ से, गणमान्य नागरिको से तथा प्रमुख अधिकारियो से भी मिले तथा राष्ट्रभाषा प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया।

26-11-55 को अखिल भारतीय काग्रेस कमटी, नई दिल्ली के अध्यक्ष श्री ढेबर भाई मणिपुर आए तथा राष्ट्रभाषा भवन का शिलान्यास किया। उनके शिलान्यास के अवसर पर दिए गए भाषण से प्रचारको म नया उत्साह उत्पन्न हुआ। इस राष्ट्रभाषा भवन का उद्घाटन 15 अगस्त 1955 को राज्यसभा के भूतपूर्व सदस्य श्री एल. जी तम्बोक द्वारा किया गया। 'समिति' का कार्यालय इसी भवन म स्थापित किया गया।

1958 मे श्री जगमोहन जी रैना मणिपुर के मुख्यायुक्त बनकर आए। श्री रैना और श्रीमती विमला रैना, श्री एस डी बहुगुणा तत्कालीन निदेशक, शिक्षा विभाग, मणिपुर सरकार ने श्री छत्रध्वज शर्मा के प्रयत्नो के फलस्वरूप मणिपुर मे हिन्दी प्रचार म गहरी रुचि दिखाई तथा दोनो के सहयोग से मणिपुर के हिन्दी प्रचार मे विशेष प्रगति हुई। उसी समय से 'समिति' को राज्य सरकार से अनुदान भी प्राप्त हुआ और विद्यालय के लिए हिन्दी पुस्तकें भी वितरित की गईं।

'समिति' ने एक पुस्तकालय एव वाचनालय भी आरम्भ किया, जिससे विद्यार्थियों के साथ-साथ हिन्दी प्रेमी जनता को भी हिन्दी पुस्तकें एव पत्र-पत्रिकाए पढने की सुविधा उपलब्ध हुई। सन् 1976 से पुस्तकालय एव वाचनालय को मानव ससाधन विकास मत्रालय, भारत सरकार की ओर से अनुदान भी मिलता है।

'समिति' ने अपने कार्यालय भवन मे ही जब राष्ट्रभाषा रत्न की कक्षाए प्रारम्भ की तो डॉ. जगमल सिंह ने प्रात काल एव सध्या समय पाच सत्र तक स्वेच्छा से अध्यापन काय किया। डॉ जवाहर सिंह म भी दो वर्षों तक रत्न कक्षाओ मे स्वेच्छा से अध्यापन कार्य किया। 9 मई 1976 को राज्य योजना आयोग मणिपुर के उपाध्यक्ष श्री थोईथोई सिंह ने सरकारी

राष्ट्रभाषा हिन्दी महाविद्यालय, अवापूनी का उद्घाटन किया । यह महाविद्यालय भवन, कमेटी के सचिव श्री के सहदेव शर्मा जी के प्रयत्नो से बनाया गया ।

श्री ध्वजध्वज शर्मा जी की मृत्यु के बाद श्री गोपीनाथ जी समिति के संचालक एवं मंत्री पद पर कार्य करने लगे । श्री गोपीनाथ जी भी हिन्दी के प्रति पूर्ण समर्पित व्यक्ति हैं । राष्ट्रभाषा प्रचार के प्रति उनकी निष्ठा प्रशसनीय है । मृदुभाषी श्री गोपीनाथ जी ने अपने प्रयत्नो से इम्फाल कारागृह मे चीफ हेड वार्डन श्री वीरमणि सिंह जी से मिलकर बंदियो के लिए कारावास मे ही वर्ग खोला । जेल मे ही परीक्षा केन्द्र की स्थापना भी की गई, किन्तु लगभग छः वर्ष तक यह केन्द्र वहा चला और 1980 मे प्रशासनीय कारणो से अधिकारियो ने इसको बन्द कर दिया ।

मणिपुर प्रचार समिति, इम्फाल ने मणिपुर हिन्दी प्रचार का 1940 से कार्य किया । निम्न तालिकाओ से समिति की उपलब्धि का पाठक स्वय मूल्यांकन कर सकेंगे —

मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इम्फाल परीक्षार्थी संख्या

तालिका—1

वर्ष	परीक्षार्थी सख्या	वर्ष	परीक्षार्थी सख्या	वर्ष	परीक्षार्थी सख्या
1940	44	1951	1928	1961	4972
1941	49	1952	2344	1962	4096
1942	32	1953	1567	1963	4097
1943-44	महायुद्ध	1954	1504	1964	4376
1945	101	1955	1803	1965	4378
1946	163	1956	1915	1966	2763
1947	767	1957	2205	1967	2584
1948	1313	1958	2360	1968	2208
1949	1591	1959	3590	1969	1594
1950	1507	1960	4810	1970	1736
योग	5567		24,026		32,904

तालिका—2

वर्ष	परीक्षार्थी सख्या	वर्ष	परीक्षार्थी सख्या	वर्ष	परीक्षार्थी सख्या
1971	2074	1977	2263	1982	2024
1972	2123	1978	2308	1983	1901
1973	2383	1979	2126	1984	1720
1974	1372	1980	1767	1985	1633
1975	2294	1981	2173	1986	2323
1976	2738				

तालिका—3

प्रथम-दशक 1940-50	द्वितीय-दशक 1951-60	तृतीय-दशक 1961-70	चतुर्थ-दशक 1971-80	पचम-दशक 1981-86	योग
5567	24026	32904	21448	11774	95719

निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रारम्भ से अब तक के परीक्षा केन्द्र प्रमाणित प्रचारक और शिक्षण केन्द्रो की सख्या का सहज आभास हो सकेगा —

वर्ष कब से	वर्ष कब तक	परीक्षा-केन्द्र	प्रमाणित-प्रचारक	शिक्षण-केन्द्र
1940	1947	01	02	62
1947	1961	76	47	62
1961	1986	52	22	62

'समिति' के तत्वाधान मे हिन्दीतर हिन्दी नव-लेखन शिविर 1985-86 मे आयोजित किया गया। यह शिविर केन्द्रीय हिन्दी शिक्षा निदेशालय की योजना के अन्तर्गत आयोजित किया गया।

सन् 1984-85 से मानव ससाधन विकास मत्रालय की सहायता से राष्ट्र-भाषा शिविर अयोजित किया जाता है, जिसमे स्थानीय विद्वानो को व्याख्यानो के लिए आमत्रित किया जाता है। 'समिति' के रजत एव स्वर्ण जयन्ती समारोहों के अवसर पर इम्फाल में स्थानीय शाखा भी विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन करती है। वर्धा से भी विभिन्न अवसरो पर विद्वान आकर स्थानीय प्रचारको को प्रोत्साहित करते हैं। नागपुर एव दिल्ली विश्व-हिन्दी सम्मेलनो मे स्थानीय प्रचारकों ने भी भाग लिया है। वर्धा में आयोजित

विभिन्न कार्यक्रमो या बैठको मे भाग लेने के लिए समय-समय पर स्थानीय शाखा के प्रचारक कार्यकर्ता यहाँ की यात्रा करते हैं। श्री गोपीनाथ जी शर्मा मानव ससाधन मत्रालय की हिन्दी शिक्षा समिति के सदस्य हैं अत वे इस समिति की बैठको मे समय-समय पर भाग लेकर मणिपुर मे हिन्दी प्रचार की समस्याओ की ओर मत्रालय का ध्यान आकर्षित करते हैं। समिति प्रति-वर्ष श्री छत्रध्वज शर्मा, समिति के भूतपूर्व मत्री एव सचालक की पुण्य-स्मृति मे 27 मई को स्मृति-दिवस का आयोजन भी करती है। सभी राष्ट्रीय पर्वों, हिन्दी दिवस तथा विभिन्न कवि लेखको की जयन्ती के अवसर पर समिति विशेष कार्यक्रमो का आयोजन करती रहती है। प्रतिवर्ष ये आयो-जन विभिन्न स्थानो पर किए जाते हैं जिनमे हिन्दी प्रेमी सामान्य व्यक्ति आमन्त्रित किए जाते हैं। स्थानीय हिन्दी के विद्वानों, राजनैतिक नेताओ, हिन्दी सेवियो और मत्रियो के भाषण भी होते हैं। हिन्दी प्रचार के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना का प्रचार करना समिति का उद्देश्य है।

समिति के पदाधिकारियों की तालिका

वर्ष	अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मत्री	कोषाध्यक्ष
1940 से 44	श्री प राधामोहन शर्मा	—	श्री थोकचोम मधु सिंह	श्री था. रघुमणि सिंह
1944 से 50	" " "	—	श्री के. कुंज बिहारी सिंह	"
1950 से 65	" ला कालाचांद सिंह शास्त्री	—	" अ छत्रध्वज शर्मा	श्री त. आबीर सिंह
1966 से 1975	श्री त आबीर सिंह	—	" अ छत्रध्वज शर्मा	—
1975 से 1981	" त. आबीरसिंह	श्री बाबूधन सिंह	श्री गोपीनाथ शर्मा	--
1981 से 1986	" श्री बाबूधनसिंह	श्री ना अचौसिंह	"	—
1986	" स बाबूधनसिंह	श्री ना अचौसिंह	श्री गोपीनाथ शर्मा	श्री था मणि सिंह

स्थानीय समिति के समय-समय पर कार्य-समिति में अनेक सदस्य भी रहे हैं। विस्तारभय के कारण मात्र वर्तमान कार्य समिति के सदस्यो के नाम दिए जा रहे हैं श्री एन नीलकान्त, श्री के. याइम्बा शर्मा, श्री किशाम नदिया सिंह तथा श्री एल नवसिंह।

6 मणिपुर की हिन्दी प्रदेशों से अपेक्षाएं

हिन्दी का प्रश्न भारतीय राष्ट्रीयता से इतना गहरा जुड़ा हुआ है कि यदि गम्भीरता से सोचें तो लगता है कि भाषा की सेवा और देश की सेवा के बीच कोई विभाजन रेखा ही नहीं रह गयी है। इसके ऐतिहासिक कारण हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन, भारतीय पुनर्जागरण और आधुनिक भारत के निर्माण म हिन्दी भाषा की भूमिका अथाह महत्वपूर्ण है। हिन्दी का इतिहास भारतीयता का न केवल जनक है बल्कि उसका सरक्षक भी है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि जब देश में हिन्दी की आधी अपने पूरे वेग पर थी उस समय देश भक्ति भी अपनी चरम सीमा पर थी। जैसे-जैसे हिन्दी की आधी मन्द पड़ती गयी, देश भक्ति का प्रबल भाव भी कम होता गया। यद्यपि इसका एक कारण यह भी है कि भारत की परतन्त्रता अप्रत्यक्ष रूप से स्वय राष्ट्रीयता की प्रेरक थी किन्तु परतन्त्रता जिस जागरण को जन्म देने वाली थी, उसे स्वर हिन्दी भाषा के द्वारा मिला। हिन्दी ने सारे देश-चिन्तकों को वह समान माध्यम दिया, जिससे वे परस्पर निकट आ सके और शत्रु को देश निकाला देने के लिए समान कार्यक्रम पर एक जुट होकर अमल कर सके। काका कालेलकर रहे हों या महात्मा गाधी या उस समय के अन्य राष्ट्रीय नायक, प्रत्येक ने इस भाषा से आम भारतीय तक पहुँचने मे सफलता प्राप्त की। इससे वे अपने पीछे विशाल जन-बल को इकट्ठा कर सके और स्वतन्त्रता के लिए समर्थ आन्दोलन चला सके। सन् 1947 के बाद राष्ट्र भाषा बनने के सर्वथा योग्य भाषा को किस प्रकार राजनैतिक द्वेष का शिकार बनाया गया, यह अब चर्चा लायक प्रसग भी नहीं रह गया है। मैं सिर्फ इतना ही कहूगा कि यदि हमारे राजनैतिक उत्तराधिकारी और बौद्धिक हिन्दी को खिलौना बनने से बचाकर सही अर्थों में राष्ट्र भाषा बना सके होते तो राष्ट्र आज अस्थिरता के दौर से नहीं गुजरता।

राष्ट्रीय कर्तव्य में विलम्ब के कारण परिस्थितियां बहुत बदल चुकी हैं। इसका अन्दाज केवल इस तथ्य से ही लगाया जा सकता है कि हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है—यह वाक्य कहना उतना ही खतरनाक हो गया है, जितना परतन्त्र भारत मे स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है—वाक्य कहना था। हिन्दीतर प्रदेशों में स्थिति की भयकरता का अनुमान

सन अधिकतर हिन्दी प्रदेशों मे ही करती हैं। इससे समारोहों में उपस्थिति तो जरूर अच्छी होती है किन्तु सारे देश का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता। तो एक तो हिन्दी सस्थाओं को प्रत्येक तीसरे वर्ष अहिन्दी प्रान्तों मे सम्मेलन आयोजित करने चाहिए। दूसरे, जिस वर्ष सम्मेलन स्थल हिन्दी प्रदेश हो, उस वर्ष भी अहिन्दी प्रदेशीय प्रतिनिधियों को अधिकाधिक मात्रा में बुलाए जाने का प्रबन्ध करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में यह भी महत्वपूर्ण है कि सम्मेलन से पहले हिन्दी प्रचारकों के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। कम से कम 15 दिन के प्रशिक्षण शिविर में अहिन्दी क्षेत्रीय हिन्दी प्रचारकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस प्रशिक्षण के 2 भाग होंगे। पहले भाग मे हिन्दी प्रचार की कठिनाइयों को काबू पाने और प्रचार की गति तेज करने की विभिन्न तकनीकों एव पद्धतियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। दूसरे भाग में प्रचारकों को हिन्दी भाषा व उसके साहित्य का नवीनतम ज्ञान कराया जाना चाहिए। इन शिविरो के माध्यम से ऐसे हिन्दी प्रचारक तैयार किये जा सकते हैं जो अधिक लगन, साहस और समर्पण की भावना से अहिन्दी भाषी क्षेत्रो में हिन्दी प्रचार कार्य करेंगे।

अहिन्दी क्षेत्रों के हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहन –

हिन्दी प्रदेशों की हिन्दी अकादमियों, प्रकाशकों और विश्वविद्यालयों को हिन्दीतर क्षेत्रों के हिन्दी लेखकों की पुस्तकें प्रकाशित करने में मिशनरी भावना का परिचय देना चाहिये। मणिपुर में कुछ लोग हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिख रहे हैं और कुछ अनुवाद कार्य कर रहे हैं। यह अनुवाद हिन्दी ग्रन्थों का मणिपुरी भाषा और मणिपुरी ग्रन्थों का हिन्दी भाषा में हो रहा है। दो भाषाओं की निकटता तथा हिन्दी के पक्ष में वातावरण बनाने की दृष्टि से यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है, किन्तु हिन्दी क्षेत्रों से इनका प्रकाशन नहीं हो रहा है। लेखक या अनुवादक के पास इतने साधन नहीं हैं कि वह स्वय अपना प्रकाशन कर सकें। कुछ लोग किसी प्रकार पुस्तक प्रकाशित करते हैं, तो पाठकों की समस्या है। अतः न केवल पुस्तकें छापी जानी चाहिये बल्कि हिन्दी पाठकों द्वारा उनका स्वागत भी किया जाना चाहिये।

अहिन्दी भाषी लोग किसी-किसी प्रदेश से हिन्दी भाषा में पत्रिकाएँ भी प्रकाशित करते हैं। मणिपुर से ही कई पत्रिकाएँ शुरू हुई थीं। इनमें से 2 बराबर निकल रही हैं। किन्तु पाठक सख्या की दृष्टि से ये बहुत दरिद्र हैं। परिणामत इनका जीवन अनिश्चित है। हिन्दी क्षेत्रों के लोग पाठक और लेखक दोनो रूपों में इन पत्रिकाओं का सहयोग करके हिन्दी राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं।

हिन्दी शिक्षा को प्रोत्साहन—

हिन्दी प्रदेश में प्रत्येक विश्वविद्यालय को अपने यहाँ सुविधानुसार कुछ स्थान हिन्दीतर क्षेत्रों के हिन्दी शिक्षा के इच्छुक छात्रों के लिए आरक्षित करने चाहिये। चुने गये छात्रों की शिक्षा का भार विश्वविद्यालय को उठाना चाहिए। यह कार्य हिन्दी विभागों द्वारा भी किया जा सकता है। अपने वार्षिक बजट का एक छोटा अंश वे एक या दो छात्रवृत्ति के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। प्रारम्भ में इसमें कठिनाई होगी, क्योंकि नियमों में परिवर्तन करना पडेगा और हो सकता है कि कहीं-कहीं हिन्दी विभागों के माननीय प्राध्यापकों को अपनी जेब से भी कुछ धन का त्याग करना पड़े। तब भी इस योजना को राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में स्वीकार करके होने वाली असुविधा का सामना किया जा सकता है। जो विश्वविद्यालय और हिन्दी विभाग इस योजना को शुरू करें, उन्हें अहिन्दी क्षेत्र की हिन्दी सेवी संस्थाओं को विधिवत सूचना भेजने का ध्यान रखना चाहिए।

मेरठ की राष्ट्रीय हिन्दी परिषद ने अपनी ओर से इस प्रकार की चार छात्रवृत्तियां प्रारम्भ की हैं। परिषद के इस कार्य से दक्षिण भारत में एम. ए एवं एम. फिल कोर्स छोड़कर जाने वाले कुछ छात्रों को रोकने में मदद मिली। इस एक उदाहरण से भी हिन्दी प्रेमी इस योजना की उपादेयता समझ सकते हैं।

हिन्दी सेवियों का सम्मान :

अहिन्दी भाषी हिन्दी सेवी लोगों को स्वतन्त्रता सेनानी कहना नितान्त उचित है। पूर्वांचल के लोग गांधीजी से प्रेरित होकर सामाजिक सेवा में जुटे। गांधीजी की प्रेरणा से इन्होंने सामाजिक जागरण, राजनैतिक स्वतंत्रता और राष्ट्रभाषा के लिए एक साथ काम किया। इस क्रम में इन्हें अंग्रेज सरकार या उनके पॉलिटिकल एजेण्टों द्वारा दिये गए कष्टों को झेलना पड़ा। स्वतन्त्रता के बाद, सीधे-सीधे राजनैतिक कार्यकर्त्ता कहे जाने वालों को तो स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का प्रमाण-पत्र और पेंशन जैसी सुविधाएं मिल गयीं। किन्तु आजादी के बाद भी निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रभाषा के लिए कार्य करने वालों को कोई सम्मान नहीं मिला। यह काम सरकार का है, जिस पर हम जैसे साधारण नागरिकों का कोई प्रभाव नहीं है। तब भी हिन्दी सेवी संस्थाएं हिन्दी सेवियों के सम्मान की परम्परा कायम कर सकती हैं। प्रत्येक वर्ष अहिन्दी क्षेत्रों के हिन्दी प्रचारकों का सार्वजनिक, अभिनन्दन किया जाना चाहिए। इसके लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं के साथ पत्र व्यवहार करके उन्हें मार्ग व्यय देकर आमन्त्रित करना चाहिए और

वह तो लडाई की भाषा थी, विरोध का हथियार था, किन्तु अब किसी से विरोध या लड़ाई नहीं रह गई अत. यह हथियार भी व्यर्थ हो गये।

भारत को स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् यह भावना भी समाप्त प्राय: हो गई। श्री कोइराग सिंह जो मणिपुर के भूतपूर्व मुख्यमंत्री हैं, ने उस जमाने मे आजाद हिन्द फौज मे भाग लिया था और उन्होंने हिन्दुस्तानी भाषा सीखी थी। उन्हे आज भी अपने हिन्दुस्तानी भाषा ज्ञान पर गर्व है। उनका कहना है कि सुभाषचन्द्र बोस ने हिन्दुस्तानी भाषा को आजाद हिन्द फौज की भाषा बनाया था। अत: वे भारत की एकता के लिए आज भी उसे महत्वपूर्ण मानते हैं।

श्री आई. तम्पोक सिंह, जो सम्प्रति कांग्रेस के नेता हैं, कई बार मंत्री रह चुके हैं, का कहना है कि हिन्दी उन्होंने डॉ राममनोहर लोहिया की प्रेरणा से सीखी थी। जब भी उन्हें भाषण देना होता, चाहे जन सभा मे या सोश-लिस्ट पार्टी की सभाओं मे तो डॉ सा (लोहिया जी) के आदेशानुसार हमको हिन्दी मे बोलना पडता था। हमने स्वतन्त्रता की लडाई लडने के लिए इस भाषा को अपनाया था और आज भी इसको अपनाया जाना चाहिए। यह मणिपुर की जनता के लिए आवश्यक है। हम कटे हुए या पृथक नहीं रह सकते।

15 अक्तूबर 1949 के दिन मणिपुर भारत गणराज्य मे सम्मिलित हो गया, तो मणिपुर के लोगो को आशा थी कि जिस हिन्दी भाषा को स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय ही राष्ट्रभाषा मान लिया गया, अब भारत की राष्ट्रभाषा जरूर बनेगी और हुआ भी वैसा ही। संविधान द्वारा हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित की गई। स्वतन्त्र भारत में हिन्दी को विशेष सम्माननीय स्थान प्राप्त होगा और अंग्रेजी के स्थान पर इसी का व्यवहार होगा—इस विचार से प्रेरित होकर लोगों ने हिन्दी पठन-पाठन मे रुची दिखलाई। यह रुची 1963 ई तक बढती ही गई और उन दिनो गली-गली व गाव-गाव हिन्दी की पाठशालाए खुल गई। परन्तु 1963 मे केन्द्रीय सरकार ने जब हिन्दी के स्थान पर 15 वर्ष तक अंग्रेजी को सरकारी भाषा के रूप मे रखने की घोषणा कर दी और बाद म अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए राजभाषा बनाए रखने की घोषणा कर दी तो मणिपुर मे हिन्दी के प्रति उदासीनता उत्पन्न हुई। लोग निराश हो गए कि भारत मे हिन्दी का कोई भविष्य ही नही है। निश्चय ही वह उत्साह नौकरी के प्रश्न से जुडा था और नौकरी के बाजार मे जब हिन्दी की माँग दिखाई नहीं दी तो यहा के लोगो मे हिन्दी के प्रति उपेक्षा-उदासीनता का भाव आना स्वाभाविक ही था।

हिंदी के प्रति उस समय दिखाए गए उत्साह के परिणाम-स्वरूप ही 1950 से 1963 तक के बीच इम्फाल नगर और उसके आस-पास के नगरों एव गावों मे हिन्दी की पाठशालाए खोली गई थी। इन पाठशालाओं मे सुबह-शाम कक्षाएँ होती थी तथा इनके विद्यार्थी विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं मे सम्मिलित होते थे। मुझे हिन्दी के प्रति उदासीनता के विषय मे किए गए सर्वेक्षण से पता चला कि यहाँ लोगो ने सोचा था कि अग्रेजी चली जाएगी, हिन्दी राष्ट्रभाषा है। और अब देश के अन्य लोगों के साथ सपर्क के लिए और रोजी रोटी के लिए, हिन्दी सीखनी चाहिए। किन्तु इन सभावनाओ के पूरा होने की जब कोई आशा नहीं रही तो यहाँ के लोग हिन्दी स विमुख हो गए। आजादी के साथ आम आदमी के कई सपने जुडे थे। व सपने एक-एक कर टूटते गए। हिन्दी की मृगमरीचिका भी भग हुई। राजनैतिक दासता तो चली गई किंतु मानसिक नहीं। शासन एव शासित का अतर रखने के लिए अफसरशाही और नेताओ ने भी अग्रेजी का मोह नही छोडा। सरकार के शैथिल्य का प्रभाव जनमानस पर पडना स्वाभाविक ही था।

उस तेरह वर्ष के समय में मणिपुर मे कितने लोगो ने हिन्दी सीखी, इसके सही आँकडे तो उपलब्ध नहीं हो सके, किंतु आज मणिपुर में प्रत्येक कार्यालय, चिकित्सालय, विद्यालय, महाविद्यालय या दुकान में भी चले जाइये तो लगभग 35 से 50 वर्ष की आयु के लोगो के बीच कोई विरला ही मिलेगा जिसने हिन्दी की कोई परीक्षा उत्तीर्ण नही की हो। डॉक्टर, वकील, इजिनियर या दूकानदार सभी ने हिन्दी पढी ही नही, परीक्षाए भी पास की। उन दिनो मणिपुर मे हिन्दी लोकप्रिय थी, वह हिन्दी प्रचार का ज्वार था जो बाद मे राजभाषा अधिनियमो के कारण भाटे मे परिवर्तित हो गया।

हिन्दी के प्रति मणिपुर में उत्पन्न होने वाली उदासीनता का प्रमुख कारण यद्यपि यही था, किंतु इसके साथ अन्य कारण भी हैं।

सर्व प्रथम कुछ ऐतिहासिक एव राजनैतिक कारणो की चर्चा की जाए। मणिपुर मे सस्कृत एव हिन्दी का प्रवेश ब्राह्मण प्रव्रजन के साथ हुआ, जिन्होने यहाँ वैष्णव धर्म फैलाया। कहते हैं मणिपुर के प्राचीन पुयर (पुराण) ग्रथ जलवा दिए गए। राजा को वैष्णव धर्म मे दीक्षित किया गया और मणिपुर को वैष्णव राज्य घोषित कर दिया। अब लोग ब्राह्मणो एव वैष्णव धर्म को अपने प्राचीन धर्म को समाप्त करने का प्रमुख कारण मानने लगे हैं। अत वैष्णव धर्म एव ब्राह्मणों के प्रति जनाक्रोश स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इसी क्रम मे हिन्दी को भी ब्राह्मणो की भाषा के रूप म देखा जा रहा है। राजनैतिक दृष्टि से भी एक नई चेतना जिसका श्रेय विदेशियो को दिया

जा रहा है, उभर आई है कि मणिपुर भारत से अलग है, उसकी सभ्यता, संस्कृति एव जाति-वश भिन्न हैं। दिल्ली सरकार शोषक सरकार है, हिन्दी भाषी है और उसने मणिपुर को अपना साम्राज्य बना लिया है। जबकि यह वास्तविकता नहीं है और न ही अधिक लोग इन बातो को मानते हैं, किंतु मुट्ठी भर चीन, बगलादेश मे प्रशिक्षित भूमिगत लोगों की यह धारणा है, जो अन्य कुछ युवा लोगो मे भी फैल रही है। वर्तमान वैष्णव मत पर आधारित सभ्यता एव संस्कृति को भी ये पुनर्जागरण मे विश्वास करने वाले लोग त्याग देना चाहते हैं। इसी क्रम मे एक बार मदिर तोडने आरम्भ किए गए,किंतु बाद म बहुमत से इसका विरोध हुआ और यह प्रवृत्ति रोक दी गई। ये बदलते हुए सास्कृतिक मूल्य भी हिन्दी विरोध के लिए उत्तरदायी हैं। हिन्दी पर आरोप लगाते हुए यहाँ के कुछ युवाओ का कथन है—यह ब्राह्मणा व मारवाडियो की भाषा है और ये दोनों शोषक हैं अत यह शोषको की भाषा है। इनके लिए हिन्दी शोषण का प्रतीक है। हिन्दी का त्रिभाषा सूत्र क अतर्गत पढाया जाना भी ये लोग हिन्दी को आरोपित करना ही मानते हैं।

मणिपुर घाटी मे हिन्दी का विरोध प्रबल नहीं है, बल्कि प्रचार हो रहा है, किंतु पर्वतीय भाग मे जहाँ पर्वतीय जातियाँ रहती हैं, वहाँ हिन्दी, हिन्दू, हिन्दू संस्कृति, और भारतीयता का सुनियोजित ढग से विरोध किया जाता है। ज्ञातव्य है कि पर्वतीय जातियाँ एक-दो को छोडकर सब ईसाई बन गई हैं। ईसाई धर्म का प्रचार ईसाई मिशनरियो के द्वारा किया जाता है, किंतु साथ मे सभ्यता-संस्कृति, भाषा विरोधी प्रचार भी।

डॉ देवराज ने इसे ईसाई मिशनरियों का षड्यत्र कहकर समस्या का सटीक विवेचन करते हुए लिखा है, "न केवल हिन्दी, बल्कि भारत की सभी भाषाओ और भारतीय राष्ट्रीयता को सबसे बडा खतरा ईसाई मिशनरियों से है। मणिपुर मे ही नहीं, पूरे पूर्वांचल मे इनके संस्थान हैं। इनकी कार्य-पद्धति यह है कि ये लोग विभिन्न नामो वाली सेवा-संस्थाए व शिक्षा-संस्थाए बनाकर सुदूर क्षेत्रो के अपेक्षाकृत निर्धन व्यक्तियो के बीच गहरी पैठ बनाते हैं।" यह एक खतरनाक रहस्य है कि हिन्दी के साथ साथ मणिपुरी भाषा का विरोध भी होने लगा है।

1983 से पर्वतीय जातियो के लोगो ने मणिपुरी भाषा सीखने से मना कर दिया है तथा मणिपुरी जो इस राज्य की सपर्क भाषा है, उसको स्कूलो म पढाए जाने का विरोध किया जा रहा है।

हि दी प्रचार के मार्ग मे जीविका का प्रश्न भी एक बाधा है। हिन्दी पढकर अहिन्दी भाषी राज्य मे केवल हिन्दी अध्यापक का पद प्राप्त किया जा सकता है और कोई अच्छी नौकरी मिलने की सभावना न होने से भी

लोग हिन्दी के प्रति उदासीनता दिखाते हैं। यहाँ राज्य-सरकार एवं केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो मे अंग्रेजी मे काम होता हैं, अतः लोग हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी पढना पसद करते हैं।

मणिपुर की हिन्दी प्रचारक सस्थाए आर्थिक विपन्नता की स्थिति से गुजर रही हैं। केन्द्रीय सरकार एव राज्य सरकार के द्वारा दी जाने वाली धन-राशि समय पर नही मिलती और जो मिलती है वह भी अपर्याप्त होती है। आर्थिक सकट भी हिन्दी प्रचार के मार्ग मे बहुत बड़ी समस्या है।

हिन्दी-क्षेत्रो के लोगो ने जीविकोपार्जन के लिए हिन्दी अध्यापन को चुना तथा यहा आए, किंतु इनमे मिशनरी भावना का पूर्ण अभाव है। इनका उद्देश्य केवल धन कमाना तथा पेट-पालन करना होता है। ये लोग कुंठाग्रस्त हैं, हिन्दी पढने के लिए आने वाले विद्यार्थियो को प्रेरणा देने के स्थान पर ये लोग निरुत्साहित करते हैं। स्थानीय प्रचार संस्थाओं एव प्रचारको से सपर्क करने मे अपनी मान-हानि समझते हैं। इससे भी हिन्दी प्रचार-प्रसार के कार्य मे बाधा उत्पन्न हुई है।

यहाँ की हिन्दी सस्थाओ के पास अर्थाभाव का विवरण मैं ऊपर दे चुका हू। अर्थाभाव के कारण यहाँ हिन्दी पुस्तको एव पत्र-पत्रिकाओ का भी अभाव है।

ऊपर ईसाई मिशनरियो के हिन्दी विरोधी कार्यों की ओर सकेत किया गया। हिन्दू धर्म थोपने और मणिपुर धर्म को नष्ट करने, मैतै भाषा के ग्रंथों को जलाने की बातो का उल्लेख भी किया गया है। वास्तविकता यह है कि यह भावना लगभग सौ-डेढ सौ वर्ष पहले से अंग्रेज ऑफिसरो ने इस क्षेत्र का इतिहास या सस्कृति आदि पर पुस्तकें लिखकर फैलाई। कौन नहीं जानता की उनकी योजना फूट डालकर राज करने की थी? जिन बातों का उल्लेख मैंने ऐतिहासिक घटनाए कहकर किया है, उनकी ऐतिहासिकता के परीक्षण के क्या प्रयत्न किए गए? यदि यही सच है, तो मणिपुर का आदिम धर्म सनामही, लाइहराओबा पर्व, मायबी परम्परा, पाखङ्बा पूजा आदि समाप्त क्यों नहीं हुई? वास्तविकता यह है कि दोनों धर्म शताब्दियो से कदम से कदम मिलाकर साथ चले हैं। मणिपुर की गौरवशाली परम्पराए, उन्नत संस्कृति एव कला आज भी जीवित है। बीसवीं शताब्दी का आधुनिक दृष्टिकोण भी उनको नष्ट नहीं कर सका। 'मैतै' (मणिपुर) समाज आज भी अपनी प्रथाओ और परम्पराओ को कायम रखे हुए है, इसकी स्पष्ट झलक आज भी मणिपुरी समाज के जन-जीवन व व्यवहार में देखी जा सकती है। पड़ोसी राज्य असम की लिपि नष्ट हो गई या मृत प्राय, किंतु मणिपुरी लिपि (मैतै मयेक) आज भी जीवित है। बगावती बगला-अक्षरो

लिपि को अपनाने के बाद भी मैतै मयेक मे लिखी जाती रही है। वैष्णव धर्म मेरे विचार से मणिपुरी धरती पर आकर मणिपुरी हो गया। यहाँ उसको अपनाया गया किंतु स्थानीय आवश्यकताओ के अनुसार उसका संस्कार किया गया। प्रो. एन. तोम्बी सिंह जो चिंतक-दार्शनिक, लेखक और राजनेता हैं, राज्य के मंत्री भी रह चुके हैं तथा इस समय संसद सदस्य हैं, का कथन यहाँ उद्धृत करना चाहूंगा, "उन्होंने (भाग्यचंद्र महाराज) गोविन्द जी को नव अवतार के रूप मे ग्रहण किया, जो मणिपुर मे रहने और प्रत्येक मणिपुर के हृदय मे निवास करने आया था। ऐसी स्थिति भी आई कि गोविन्दजी को जो पूजा सामग्री अर्पित की जाय वह वृन्दावन जैसी ही हो। इस प्रस्ताव को महाराजा ने पूर्णत अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि हम केवल गोविन्द जी को वही अर्पित करना है जो भोजन, वेश-भूषा, भवन निर्माण, बर्तन और पूजा पद्धति मे, हम श्रेष्ठ मानते हैं।" (मणिपुर एण्ड मेन स्ट्रीम- प्र. एन के सिंह, इम्फाल, पृ 26) स्वेच्छा से अपनाए गए और इच्छानुसार किए गए परिवर्तनो के बाद वह धर्म थोपा गया कहना कहाँ तक उचित है ? किन्तु यह दीर्घ दुरभिसंधि का परिणाम है। अंग्रेजों ने फूट डालने के लिए हिन्दू धर्म पूर्व और हिन्दू धर्म पश्चात् कहकर जो इतिहास का काल-विभाजन किया, उस विषय पर विद्वानों ने सोचा नहीं। बाद मे अंधानुकरण किया गया और परिणाम स्वरूप आज हिन्दू धर्म का विरोध किया जा रहा है और मूलभूत तथ्यो की उपेक्षा की जा रही है। अंग्रेजी के थोथे तर्कों को प्रस्तुत किया जा रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि मणिपुर ने वैष्णव धर्म स्वीकार किया था और वैष्णव धर्म से केवल लिया ही नही उसको दिया भी। मैं तो कहूंगा कि जो लिया उसको सूद सहित चुका दिया। बंगाल मे जाकर शाक्त प्रभाव से लुप्तप्राय वैष्णव धर्म की चैतन्य सम्प्रदाय की, उसी की जन्म भूमि मे पुन प्रतिष्ठा महाराज भाग्य चंद्र ने की थी। संपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओ का हिन्दी के संदर्भ मे पुनर्परीक्षण आवश्यक है और सत्यान्वेषण की आवश्यकता है। राष्ट्र विरोधी शक्तियो के षड्यंत्र को यदि बेनकाब किया जा सके तो स्थिति स्पष्ट हो सकती है। आज भी ईसाई मिशनरियो द्वारा मणिपुर म शिक्षण-संस्थाओ की आड मे अंग्रेजी भाषा, ईसाई धर्म, पाश्चात्यकरण तथा राष्ट्र विरोधी भावना का प्रचार किया जा रहा है। मणिपुर मे भूमिगत विद्रोही गतिविधियाँ उखरुल मे शुरू हुई। क्या इसका संबंध डब्लु. पेटिग्रयु (1893) के शिक्षा एवं ईसाई धर्म के प्रचार से है ? *इस प्रश्न की छानबीन आवश्यक* है। अंग्रेजी माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का प्रचार न केवल हिन्दी किन्तु मणिपुरी तथा अन्य मणिपुरी जन-जातीय भाषाओं के भी विरुद्ध है। इस तथ्य को समझने की आवश्यकता है।

हिन्दी विषय विकल्प के रूप मे पढने वाले विद्यार्थियो को प्रतिवर्ष हिन्दी भाषी राज्यो के महाविद्यालयों एव विश्वविद्यालयो में कम से कम एक महीने के लिए भेजने की व्यवस्था सरकारी तथा गैर सरकारी सस्थाओ की ओर से की जानी चाहिए। व्यावहारिक ज्ञान एव बोलने की क्षमता के विकास के लिए यह आवश्यक है।

यहाँ हिन्दी पाठ्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर बनाया जाना चाहिए जिसम साहित्य या सिद्धान्तों क स्थान पर व्याव-हारिक पक्ष पर बल हो तथा रोजगार की दृष्टि स भी उपयोगी हो।

मणिपुर मे हिन्दी प्रचार की समस्याओ के समाधान क लिए यहाँ कुछ सुझाव प्रस्तुत है।

मणिपुर म जो राष्ट्र विरोधी लहर दिखलाई देती है, उसको हटाने के लिए और स्थानीय लोगो का विश्वास प्राप्त करने के प्रयत्न किये जाने चाहिए तथा लोगो म यह विश्वास जगाया जाना चाहिए कि हिन्दी कभी शोषण का माध्यम नही बनी और न बनेगी। यह साधु-सतो एव जनता की भाषा है।

हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओ म मणिपुर के सम्बन्ध में आलेख प्रकाशित किए जाएँ, जिससे मणिपुर के लोगो का विश्वास जीता जा सके। मणिपुर के लोगो म यह विश्वास व्याप्त है कि उनकी उपेक्षा की जाती है। यह सत्य भी है कि मणिपुरी के साहित्य एव समृद्ध सस्कृति के सम्बन्ध मे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ म बहुत कम सामग्री प्रकाशित होती है। भावात्मक एकता की दृष्टि से यह अत्यावश्यक काय है। हिन्दी निदेशालय एव हिन्दी प्रका-शकों को ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना बनानी चाहिए जो मणि-पुर की उन्नत एव समृद्ध सस्कृति से परिचय करवा सकें। मणिपुरी भाषा एव साहित्य की श्रेष्ठ कृतियो का हिन्दी मे अनुवाद और प्रकाशन तथा हिन्दी की रचनाओं का मणिपुरी मे अनुवाद एव प्रकाशन इस दिशा म महत्वपूर्ण कार्य है, जो यथा शीघ्र किया जाना चाहिए।

मणिपुर के पर्वतीय भाग के लोगों का विश्वास जीतने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। उनकी भाषाओ एव बोलियों तथा हिन्दी के शब्दकोश तैयार किये जाने चाहिए। उनकी लोक-कथाओ तथा लोक गीतो के सकलन हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित करके हिन्दी से पर्वतीय-जन का निकट सपर्क स्थापित करने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। उनकी भाषाओं और बोलियों के लिए रोमन लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि में पुस्तकें उपलब्ध कराई जानी चाहिए तथा ऐसे मिशनरी लोगो को सामने आना चाहिए जो उनमे अपने देश की सास्कृतिक-धरोहर का प्रचार करें तथा यह

भावना जागृत करें कि वे भारतीय हैं और उन्हें अपनी संस्कृति की निशानी देवनागरी का प्रयोग करना चाहिए।

मणिपुर की घाटी के वैष्णव हो या पर्वतीय लोग, जब तक अंग्रेजी का वर्चस्व बना रहेगा, उनमे कभी भी हिन्दी तो क्या, अपनी भाषा या बोली के प्रति भी लगाव उत्पन्न नही होगा। मणिपुर सरकार को चाहिए कि केन्द्रीय शासित प्रदेश परिषद द्वारा 1957 ई. मे पारित सरकारी भाषा अधिनियम को तुरन्त लागू करे और अंग्रेजी के स्थान पर मणिपुरी को राजकाज की भाषा के रूप मे काम लेना शुरू करे। जब तक ऐसा नही होता मणिपुरी भाषा तथा पर्वतीय लोगो की भाषाओ का मार्ग भी अवरुद्ध रहेगा और हिन्दी के प्रयोग या महत्व की सभावनाए भी कम ही रहेगी। यदि मणिपुरी भाषा का प्रयोग आरम्भ होता है तो हिन्दी शब्दो का मणिपुरी भाषा मे और अधिक प्रयोग होगा। अभी भी मणिपुरी भाषा मे हिन्दी के बहुत से शब्द काम लिए जाते हैं।

राज्य एव केन्द्रीय सरकार क्रमश मणिपुरी एव हिन्दी को व्यावहारिक रूप मे राजभाषा बना दें तो हिन्दी के द्वारा नौकरी मिलने की सभावनाए बढ जाएगी और इसके परिणामस्वरूप हिन्दी का मणिपुर मे तेजी से प्रचार होगा। अत. राजभाषा अधिनियम यथाशीघ्र क्रियान्वित किए जाने चाहिए। इससे अनुवादकों व दुभाषियो की माँग भी बढ जाएगी और हिन्दी पढ़े लिखे स्थानीय लोगो को अच्छी नौकरियो की सभावना बढ जाएगी।

हिन्दी प्रचारक सस्थाओ को अनुदान राशि पर्याप्त मात्रा मे मिलनी चाहिए, जिससे ये सस्थाए हिन्दी का प्रचार सुचारु रूप से कर सकें।

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ एव पुस्तको के लिए उचित अनुदान दिया जाना चाहिए। साथ ही प्रकाशको एव सस्थाओ को उदारतापूर्वक यहाँ अपनी पत्र-पत्रिकाए या पुस्तकें निशुल्क भेजनी चाहिए। इस सम्बन्ध मे डॉ. देवराज का कथन देखिए, "*हिन्दी के प्रकाशक कभी भी यह दायित्व* अनुभव नही करते कि वे अपनी नवीनतम प्रकाशन-सूची आवश्यक रूप से अहिन्दी भाषी क्षेत्रो की सस्थाओ के पास भेजें। वे तो अवसर मिलते ही, जो मात्र कही नही खपता, उसे इन क्षेत्रो मे येन-केन प्रकारेण झोंकने और पैसे बनाने का प्रयास करते हैं। पत्रिकाओ की भी यही स्थिति है। जहाँ से पैसा, प्रशसा या अतिशयोक्ति पूर्ण समीक्षा की सभावना होती है, वहाँ तो सपादक अपनी पत्रिका भेजने को लालायित रहते हैं किन्तु राष्ट्र के सुदूर पर्वतीय अचलो मे अपनी पत्रिका नि शुल्क भेजने का साहस कुछ इने-गिने सपादक ही दिखा पाते हैं।"

हिन्दी प्रदेशो की सस्थाओ को चाहिए कि वे मणिपुर मे अपने वार्षिक सम्मेलन आयोजित करें। इस सबध में पुन. डॉ देवराज के शब्दो को उद्धृत करना चाहूगा, "मणिपुर जैसे सीमात प्रदेश के अधिकाश हिन्दी अध्यापक, प्रचारक और विद्यार्थी इनमे शामिल हो सकेंगे, हिन्दी की अनेक समस्याओ को वहीं सुना और हल किया जा सकेगा, हिन्दी सेवियो को अगले वर्ष भर लगन से कार्य करने की प्रेरणा मिल सकेगी, हिन्दी प्रदेशो के लोग इन क्षेत्रों के प्रत्यक्ष दर्शन करके हिन्दी के लिए अधिक उपयोगी योजनाए बना सकेंगे और यहाँ की हिन्दी सेवी सस्थाओ के कार्य का मूल्याकन किया जा सकेगा। इससे उन सस्थाओ पर भी नजर रखी जा सकेगी, जो इन क्षेत्रो म सिर्फ सरकारी अनुदान पाने के लिए हिन्दी के नाम पट्ट का प्रयोग कर रही हैं।

हिन्दी प्रदेशों की सस्थाओ को ऐसे शिविर लगाने चाहिए जिनमे यहाँ के अध्यापको मे हिन्दी प्रचार की भावना जागृत की जा सके। साथ ही इन अध्यापकों एव प्रचारकों को भारत की मुख्य चिन्तन धारा एव सास्कृतिक धारा से जोडने के प्रयत्न भी किए जाने चाहिए और यह कार्य हिन्दी-क्षेत्रो मे इन अध्यापको एव प्रचारको के वार्षिक प्रशिक्षण शिविरो द्वारा हो सकता है।

हिन्दी प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय एकता के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी प्रदेशो के लोग मणिपुर से सास्कृतिक-मडल बुलवाएँ और यहाँ अपने सास्कृतिक प्रतिनिधि मडल भी भेजें। यह कार्य विभिन्न सस्थाओ द्वारा तथा सरकार के माध्यम से किया जाना चाहिए।

जब तक हिन्दी-प्रदेशो के लोग मणिपुर के साथ सास्कृतिक आदान-प्रदान नही करेंगे, हिन्दी के प्रचार-प्रसार की सभावनाएँ गौण ही रहेगी तथा राष्ट्रीय एकता का सूत्र भी सुदृढ नही हो पाएगा। हिन्दी क्षेत्र के लोग मणिपुर को इसके नृत्य एव खेल-कूद के लिए जानते हैं, या फिर यहाँ की भूमिगत गतिविधियो के सदर्भ म। किन्तु उन्हें मणिपुर की वीर-प्रसू भूमि के गौरवमय इतिहास, समृद्ध सस्कृति और अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन करना चाहिए। यहाँ प्रकृति ने ससार की दुर्लभ-अनुपम वस्तुएँ सजोकर रखी हैं और वे वस्तुएँ हैं—बारहसिंग के सींगो जैसे सींग वाला हिरण, सिरोही लिलि पुष्प तथा लोकताक झील मे तैरते द्वीप।

शिविरो एव वार्षिक सम्मेलनों से मणिपुर म हिन्दी के प्रचार मे गति आएगी, साथ ही आगन्तुक मणिपुर की समृद्ध सस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन करने के साथ अपने देश को जान सकेंगे। यह राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य होगा।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अब तक मणिपुर में केवल दो नवलेखक शिविरों का आयोजन किया है, जब कि यहाँ उनके शिविर निरन्तर आयोजित किए जाने चाहिए। मणिपुर की उपेक्षा करना हिन्दी ही नहीं राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी अनुचित है। यहाँ के दो विद्यार्थियों को मेरी जानकारी में केवल 1982 ई में हिन्दी प्रांतों की यात्रा पर निदेशालय द्वारा भेजा गया था, जब कि यहाँ से प्रतिवर्ष विद्यार्थी हिन्दी प्रदेशों की यात्रा पर भेजे जाने चाहिए। खेद का विषय है कि निदेशालय के विभिन्न कार्यक्रमों की सूचना समय पर मणिपुर में नहीं पहुँचती और न ही भेजी जाती है। 'निदेशालय' को मणिपुर की हिन्दी संस्थाओं से निकट सम्पर्क बनाए रखना चाहिए।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार को चाहिए कि जो संस्थाएं स्थापित हैं, पुरानी हैं, उनको आर्थिक अनुदान उदारतापूर्वक दें। हाँ, संस्थाओं के संबंध में अनुदान देने से पूर्व पूरी जानकारी प्राप्त की जाए, साथ ही गोपनीय जाँच द्वारा उनकी गतिविधियों की जानकारी अनुदान देने से पूर्व की जाए। हिन्दी के क्षेत्र में काम करने वाले स्थानीय लोगों से गोपनीय प्रतिवेदन माँगे जा सकते हैं। केवल निरीक्षण हेतु एक दल भेजना पर्याप्त नहीं है। जाँच एवं गोपनीय प्रतिवेदन के तरीके से भारत सरकार अवांछित संस्थाओं पर खर्च की जाने वाली धन राशि का अपव्यय रोक सकती है और वांछित संस्थाओं को आवश्यकतानुसार धन प्रदान कर सकती है। पूर्वांचल में, विशेष रूप से मणिपुर में हिन्दी लेखकों एवं अनुवादकों के सम्मुख प्रकाशन की समस्या है, अतः मंत्रालय को इस क्षेत्र के लेखकों को मौलिक लेखन एवं अनुवाद प्रकाशन के लिए पर्याप्त अनुदान देना चाहिए। बहु भाषी कोश निर्माण या भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, लिपि एवं लोक संस्कृति के अध्ययन के लिए विशेष योजना बनाकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा 'हिन्दी निदेशालय' के माध्यम से शोध-कार्य कराया जाना चाहिए। युद्ध-स्तर पर जन-जातीय भाषाओं की पुस्तकों को देवनागरी में प्रकाशित कर उनका मुफ्त वितरण किया जाना भी आवश्यक है। सरकारी संस्थान जो मंत्रालय के अधीन काम करते हैं, को मणिपुर की हिन्दी संस्थाओं एवं व्यक्तियों से निकट संपर्क स्थापित करके यहाँ की समस्याओं को समझकर ही भावी योजनाएं तैयार करनी चाहिए। स्थानीय हिन्दी सेवियों से परामर्श उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

गृह मंत्रालय ने केवल एक अध्यापक की 1985 में नियुक्ति की है। मंत्रालय द्वारा यहाँ कार्यरत केन्द्रीय कर्मचारियों को हिन्दी पढ़ने के लिए अधिक सुविधाएं दी जानी चाहिए तथा अविलम्ब अधिक अध्यापकों की

नियुक्ति की जानी चाहिए। साथ ही राज्य कर्मचारियों जिन्हें हिन्दी सीखने एवं परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है, को भी अपने केन्द्रीय कर्मचारियों के साथ (यदि कोई चाहे तो) पढ़ने का अवसर दिया जाए, क्योंकि राज्य सरकार की ओर से ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। केवल राजधानी इम्फाल में ही गृह मंत्रालय ने अपनी हिन्दी शिक्षण योजना आरम्भ की है। राज्य के जिलों के मुख्यालयों में भी यह योजना पहुँचनी चाहिए, क्योंकि वहाँ भी केन्द्रीय सरकार के कार्यालय हैं।

मणिपुर में कई ऐसे हिन्दी सेवक हैं जिन्होंने करीब पचास वर्ष तक हिन्दी की सेवा की है। कुछ कर भी रहे हैं। अत्यंत खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि इन हिन्दी सेवियों की महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए न तो हिन्दी की अखिल भारतीय संस्थाओं ने कोई योजना बनाई है, न ही भारत सरकार ने ही। आवश्यकता इस बात की है कि पूर्वांचल के राज्यों में हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया जाए तथा पुरस्कार भी दिए जाएं। इसका परिणाम यह होगा कि हिन्दी-सेवा भावना बढ़ेगी। कुछ हिन्दी सेवी स्वर्गवासी हो चुके हैं। कुछ की अवस्था इस समय 85 और 90 वर्ष के बीच है, इनकी वृद्धावस्था को देखते हुए सरकार एवं विभिन्न अखिल भारतीय संस्थाओं को इन्हें अलंकृत करने की योजना अविलम्ब क्रियान्वित करनी चाहिए।

मणिपुर एवं पूर्वांचल के हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए विशेष छात्रवृत्ति का प्रावधान अत्यावश्यक है। जन-जातीय विद्यार्थी हिन्दी की छात्रवृत्ति में बिल्कुल रुचि नहीं रखते हैं। इसका कारण यह है कि उन्हें अध्ययन हेतु वैसे ही उदारता पूर्वक छात्रवृत्ति दी जाती है और हिन्दी छात्रवृत्ति के लिए आधार योग्यता, अंकों का निश्चित प्रतिशत है और ये छात्रवृत्तियाँ सीमित हैं। मणिपुर तथा पूर्वांचल के राज्यों में जन-जातीय क्षेत्र में हिन्दी का प्रसार भूमिगत विद्रोही गतिविधियों, राष्ट्रीय एकता सुरक्षा एवं भारतीयकरण की दृष्टि से कितना महत्वपूर्ण है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है, यह तो सर्व विदित है। अतः हिन्दी के लिए जन-जातीय विद्यार्थियों को दी जाने वाली सामान्य छात्रवृत्तियों से अधिक आकर्षक छात्रवृत्तियाँ दी जाएँ। साथ ही इस क्षेत्र में प्रत्येक मुख्यालय पर आवासीय विद्यालयों की स्थापना की जाए, जहाँ रहकर विद्यार्थियों को हिन्दी वातावरण प्राप्त हो, उनमें राष्ट्रीय भावनाओं का विकास किया जाए किंतु ये विद्यालय निश्चय ही मिशन भावना वाले लोगों के द्वारा चलाए जाएं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा इस क्षेत्र के विद्यार्थियों को वर्धा में आवासी सुविधा प्रदान करती है और एक सौ रुपये प्रतिमास की छात्रवृत्ति देती है। इस छात्रवृति की धनराशि और प्रत्येक राज्य के लिए उपलब्ध स्थान बढ़ाए जाने चाहिए। वर्धा ही नहीं, अन्य स्थानों पर भी ऐसे विद्यालयों की स्थापना की जाए तथा वहाँ का पाठ्यक्रम ऐसा हो कि विद्यार्थी वहाँ शिक्षा प्राप्त करके विभिन्न प्रतियोगिताओं में सम्मिलित हो सकें। सेना, केन्द्रीय शासन के कार्यालयों आदि की प्रतियोगिता परीक्षाओं में सम्मिलित होने के योग्य परीक्षार्थी तैयार किए जाए। यदि यह आकर्षक योजना इन पाठ्यक्रमों से जोड़ दी जाए और विशेष छात्रवृत्तियाँ दी जाए तो इन विद्यालयों में प्रवेश के लिए भीड़ लग जाएगी।

पूर्वांचल की वर्तमान परिस्थितियों एवं पृथकतावादी प्रवृति को देखते हुए सभी सम्बद्ध संस्थाओं एवं व्यक्तियों को अविलम्ब आवश्यक कदम उठाने चाहिए। हिन्दी यहाँ केवल भाषा ही नहीं है राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम है, इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस दिशा में सभी संभव प्रयत्न आवश्यक हैं। कानून और व्यवस्था तथा शांति बनाए रखने के लिए सेना या सुरक्षा बलों का विकल्प भारतीयकरण है, जो स्थायी एवं प्रभावकारी होगा। पूर्वांचल की आर्थिक प्रगति और समृद्धि भी शांति पर निर्भर करती है। अंग्रेजी माध्यम की मिशन स्कूलों के प्रति विशेष आकर्षण का कारण प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने का लक्ष्य है। हिन्दी शिक्षण संस्थाओं के साथ यह तत्व जोड़ दिया जाए तो पश्चिमीकरण एवं अंग्रेजीकरण रुक जाएगा तथा भारतीयकरण व हिन्दीकरण की प्रवृति का प्रसार होगा।

आकाशवाणी केन्द्र, इम्फाल के कार्यक्रमों की यथास्थान प्रशंसा की गई तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका बताई गई है। किंतु आज भी इम्फाल केन्द्र के कार्यक्रमों में काफी सुधार की आवश्यकता है। हिन्दी वार्ता का कार्यक्रम सप्ताह में केवल एक बार होता है, वह भी केवल दस मिनट के लिए। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी के कार्यक्रम सप्ताह में कम से कम तीन बार रखे जाए।

फौजी भाइयों के लिए केवल आधे घण्टे के लिए प्रतिदिन एक कार्यक्रम आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित किया जाता है, जबकि इसका समय एक घण्टे से कम नहीं होना चाहिए तथा हिन्दी फिल्मी गानों के अतिरिक्त इसमें विविधता हो। दूसरा एक हिन्दी फिल्मी गीतों का 30 मिनट का फरमाइशी कार्यक्रम सप्ताह में तीन दिन प्रसारित किया जाता है। ये तीनों हिन्दी

कार्यक्रम मणिपुर में कितने लोकप्रिय हैं, इसके आकड़े तो मैं नहीं दे सकता किंतु दो बातें जरूर कहना चाहूंगा । यदि आप इन कार्यक्रमों के समय सड़क पर जा रहे हों तो ऊँची आवाज में चीखते रेडियो/ट्रांजिस्टर पर आप कार्यक्रम सुनते जाइये और चलते जाइये । तात्पर्य यह है कि हर घर में ये कार्यक्रम सुने जाते हैं । दूसरी बात यह है कि फरमाइशी गीत कार्यक्रम में फरमाइश करने वालों की संख्या से इस कार्यक्रम की लोकप्रियता का अनुमान सहज ही लगा सकते हैं । अतः मेरा सुझाव यह है कि हिन्दी के वर्तमान कार्यक्रमों के समय में वृद्धि की जाए तथा विविधभारती कार्यक्रम भी मणिपुर से प्रसारित किए जाए ।

8 मणिपुर के हिन्दी लेखकों की समस्याएं एवं समाधान

मणिपुर एक अहिन्दी भाषी प्रान्त है, जहाँ पर हिन्दी लेखकों, कवियो, समीक्षकों आदि का अभाव नही है, किंतु इन लेखकों के सम्मुख अनेक समस्याएं हैं। मणिपुर सुदूर पूर्वांचल प्रदेश है, जहाँ यातायात एवं आवागमन के सीमित साधन उपलब्ध हैं। भारत के अन्य भागों से मणिपुर स्थल-मार्ग से केवल सड़क परिवहन से जुड़ा है और रेल यातायात की सुविधा उपलब्ध नही है। रेल केन्द्र तक जाने के लिए दिन भर की पर्वतीय मार्ग की बस से यात्रा करनी पड़ती है, जो बहुत ही कष्टप्रद है। इम्फाल से सिलचर या दीमापुर तक जाने के लिए सड़क मार्ग हैं। इन दो मार्गों के अतिरिक्त तीसरा स्थल मार्ग नही है। मणिपुर की राजधानी गोहाटी एवं कलकत्ता से वायुमार्ग द्वारा जुड़ी हुई है, किंतु यह यात्रा व्ययसाध्य है, यद्यपि प्रतिदिन दोनों स्थानों के लिए एक-एक उड़ान की व्यवस्था है। इसलिए मणिपुर के निवासियों की भाँति ही, मणिपुर के हिन्दी रचनाकार भी देश के मुख्य भाग से तथा हिन्दी क्षेत्र से अलग से हो जाते हैं।

मणिपुर पहुँचने या मणिपुर से जाने के मार्ग में प्राकृतिक अवरोध है। नदियों एवं पर्वतों को पार करके ही मणिपुर से आना-जाना सम्भव है। रचनाकार हो या समीक्षक, उसे भ्रमण के द्वारा विभिन्न अनुभव होते हैं, जिनका उसके लेखन तथा समीक्षा पर प्रभाव पड़ता है। किंतु भ्रमण के मार्ग में उल्लेखित बाधाएं हैं तथा मणिपुर से आना-जाना श्रम, कष्ट एवं व्यय साध्य है।

मणिपुर भारत के अन्य भागों से दूर है तथा प्राकृतिक बाधाएं हैं, जिन्होंने इस प्रदेश के निवासियों, उनकी सभ्यता, संस्कृति आदि को एक कठोर सीमा-रेखा में बाध दिया है। यहां की अपनी समस्याएँ हैं, जिनका संबंध केवल यहां के जीवन से है। निश्चय ही यहाँ भी कुछ सामान्य समस्याएं या जीवन पद्धति हैं किंतु साथ ही इसकी अपनी विशिष्टता अवश्य है। पर्वत शृंखलाओं की चारदीवारी में मणिपुर की संस्कृति प्रकृति द्वारा सुरक्षित है। अत. यहां का लेखक भी इस चार-दीवारी में जहाँ शारीरिक

रूप से बन्द है, वहाँ मानसिक रूप से भी। अतः उसका दृष्टिकोण बहुत ही सीमित रह जाता है। उसकी दृष्टि मणिपुर के पर्वतो के पार नहीं जा पाती। मणिपुरी भाषा के किसी प्राचीन कवि ने मणिपुर की प्रशसा में निम्न पंक्तियाँ लिखी थी

मणिपुर सना-लैमायोल / विगना कोयना पसावा होना कोयना पगाक्पा।

(अर्थात्) "हे मेरे मणिपुर! मुख्य स्वर्ण भू मे सर्वश्रेष्ठ भूमि तुम्हारी। प्रकृति ने स्वय बनाई पर्वत प्राचीर तुम्हारी। प्रकृति-पुत्र पर्वत सजग प्रहरी तुम्हारे।" यही पर्वत-प्रहरी बीसवीं शताब्दी के अत मे भी अवरोध बने हुए हैं। यहाँ का लेखक यहाँ की स्वर्ण भूमि एव पर्वत प्राचीरो के बाहर झाँकने का प्रयत्न करके भी नहीं झाँक पाता। यदि यातायात के साधन सुलभ होते, रेल यहाँ आ जाती तो यहाँ के निवासियो का भारत के विभिन्न भागो से सम्पर्क आसान होता और यहाँ के कवियो एव लेखको का रचना परिवेश-फलक वृहद होता।

मणिपुर मे हिन्दी साहित्यकारो को दो वर्गों मे रखा जा सकता है- एक वे जो मणिपुर के निवासी हैं, और दूसरे वे जो मणिपुर मे भारत के अन्य भागो से आए हैं। दोनों की कुछ समस्याएँ सामान्य हैं, तो कुछ अलग आइये इन पर क्रमश विचार किया जाए।

मणिपुर के हिन्दी लेखको के लिए उनकी रचनाओ के प्रकाशन का अवसर नही है। मणिपुर मे हिन्दी पुस्तको का बाजार नही है, अतः कोई भी स्थानीय प्रकाशक हिन्दी पुस्तक छापने को तैयार नही होता। मणिपुर के स्थानीय लेखको की जो भी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनके प्रकाशन की व्यवस्था की अपनी कहानी है।

श्री अतोम बापू शर्मा जी ने सन 1951 मे "मणिपुर का सनातन धर्म" पुस्तक हिन्दी मे लिखी तथा प्रकाशित भी स्वय ने ही की। उन्होने पुस्तक की भूमिका मे लिखा है कि पुस्तक प्रकाशन मे मेरी जेब खाली हो गई। सभवत यह मणिपुर के हिन्दी लेखक की प्रथम पुस्तक है, जिसमे लेखक ने मणिपुरी सनातन धर्म की भारत के वैदिक धर्म से समानता का उल्लेख किया है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य है, किन्तु प्रकाशन की व्यवस्था लेखक को जेब खाली करके स्वय ही को करनी पडी।

श्री निशान सिह नितम एक अनुवादक हैं जिन्होने मणिपुरी के प्रथम प्रसिद्ध एव लोकप्रिय उपन्यास "माधवी" (लेखक डॉ कमल) का हिन्दी अनुवाद किया। उन्हें पुस्तक का प्रकाशन स्वय ही करना पडा और छपवाने के लिए दिल्ली जाना पडा। इससे पूर्व श्री निशान ने लोक गाथा

खम्बा-थोइबी के आधार पर अपना एक नाटक इम्फाल मे "खम्बा थोइबी" शीर्षक से छपवाया था किन्तु छपाई की भूलो के अतिरिक्त प्रेस मे आवश्यक साधनों के अभाव मे पुस्तक सुन्दर नही बन सकी थी। अत माधवी के अनुवाद को लेकर वे दिल्ली रहे और छपवाकर दो महीने बाद लौटे, जिससे आर्थिक दृष्टि से श्री निशान विपन्न हो गए।

श्री एल कानाचाद सिंह ने 'खम्ब-थोइबी" को लोक कथा के रूप मे प्रकाशित करवाया है। शिक्षा विभाग, मणिपुर सरकार ने पुस्तक प्रकाशन हेतु 700 रु का अनुदान दिया तब पुस्तक 1978 ई मे ओ के स्टोर द्वारा प्रकाशित की गई।

मार्च 1976 मे श्री आचार्य राधागोविन्द जी कविराज ने अपनी कविता की पुस्तक स्वय ने प्रकाशित की। सम्भवत किसी मणिपुरी कवि की यह पहली हिन्दी कविता पुस्तक है।

मणिपुर हिन्दी अकादमी, इम्फाल की स्थापना का लक्ष्य भी मणिपुरी लेखकों, समीक्षकों एव कवियो की पुस्तको को सहकारी आधार पर प्रकाशित करना है, क्योंकि अन्यत्र प्रकाशन की सम्भावनाएँ गौण हैं। प्रकाशन की समस्या इन कतिपय उदाहरणो से स्पष्ट हो जाती है। मणिपुर के साहित्यकारो के जीवन की सराहना करनी पडती है कि उन्होंने इन समस्त बाधाओ के उपरात भी हिन्दी ग्रथो का प्रकाशन किया है।

मणिपुर के स्थानीय लेखको के लेखन स्तर की समस्या भी जटिल है। अहिन्दी भाषी होने के कारण उनकी भाषा मे प्रौढता एव परिष्कार का वह स्तर नहीं आ पाता जो हिन्दी भाषी लेखको की भाषा मे पाया जाता है। अत मणिपुर के बाहर मणिपुर के लेखक की रचना का प्रकाशित हो पाना और भी कठिन हो जाता है।

बाहर के प्रकाशक सद्य लाभ की दृष्टि से ही पुस्तक प्रकाशित करते हैं। जब भी पाठ्य-पुस्तको या अन्य प्रकार स सद्य लाभ प्राप्त हुआ, बाहर के प्रकाशको ने मणिपुर के साहित्यकारो की पुस्तकें प्रकाशित की अन्यथा नही।

स्थानीय लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य एव केन्द्रीय सरकार की ओर से तथा विभिन्न स्वैच्छिक सस्थाओ की ओर से किसी भी पुरस्कार की योजना मणिपुर मे अभी तक नही है। इसलिए मणिपुर निवासी हिन्दी के स्थान पर मणिपुरी भाषा मे ही लिखना चाहते हैं।

मणिपुर मे हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ का अभाव होने के कारण स्थानीय लेखको की रचनाओ का समय-समय पर प्रकाशन सम्भव नहीं है, अत ये साहित्यकार निरुत्साहित हो जाते हैं। जो भी पत्रिकाएँ निकाली गई हैं उनके पास भी लेखकों को पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नही है। लेखन

यश एव धन अर्जित करने के लिए किया जाता है। किन्तु यहाँ दोनों ही का अभाव है।

समाधान :

प्रकाशन समस्या को हल करने के लिए राज्य या केन्द्रीय सरकार की सहायता से मणिपुर मे हिन्दी ग्रथ अकादमी की स्थापना की जानी चाहिए जिसके द्वारा स्थानीय लेखको की पुस्तको के सम्पादन के बाद प्रकाशन की व्यवस्था होने के साथ ही स्तर के लेखन की समस्या भी हल हो सकती है।

प्राकृतिक बाधा एव दूरी की समस्या को दूर करने के लिए मणिपुर के लेखको के लिए राज्य एव केन्द्र सरकार भारत-भ्रमण की योजना बनाए तथा उन्हें राजकीय खर्च पर यात्रा की सुविधा उपलब्ध करवाए ताकि उनके लेखन का फलक विस्तृत एव बृहत हो सके।

मणिपुर के स्थानीय लेखको के लिए राज्य एव केन्द्रीय सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के पुरस्कार व सम्मान देने की वार्षिक योजना तुरन्त बनाई जानी चाहिए, जिससे लेखको को प्रोत्साहन प्राप्त हो।

राज्य सरकार की ओर से एक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जाना चाहिए। उसमे प्रकाशित होने वाली प्रत्येक रचना के लिए उचित पारिश्रमिक भी दिया जाना चाहिए। इससे स्थानीय साहित्यकार अवश्य ही हिन्दी में लिखने की प्रेरणा ग्रहण करेगे।

देश के प्रकाशको को मात्र लाभ की चिंता छोडकर मणिपुर के साहित्यकारो की रचनाओं तथा अनुवादो का प्रकाशन करना चाहिए। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भी मणिपुर के लेखको की पुस्तको के प्रकाशित होने पर उनकी प्रतियाँ अवश्य क्रय करे। इससे प्रकाशक यहाँ के लेखको की पुस्तकें प्रकाशित करने को तैयार होगे।

मानव-संसाधन विकास मत्रालय इस क्षेत्र के लेखको के प्रकाशन की विशेष योजना बनाए तथा विशेष प्रकाशन अनुदान का प्रावधान करे।

मणिपुर मे भारत के अन्य भागों के हिन्दी लेखकों की समस्याए

मणिपुर मे जीविकोपार्जन के लिए भारत के अन्य भागो से भी लेखक यहा आकर जीवन यापन कर रहे हैं। ये अपने जन्म-स्थान से कट जाते हैं। इनके हृदय मे निर्वासन की पीडा एव टीस उत्पन्न तो होती ही है, जिससे इनका मानस कुण्ठाग्रस्त हो जाता है। लेखन के प्रकाशन की समस्या इन्हें तोड देती है। प्रकाशन हेतु व्यक्तिगत सम्पर्क आज के युग मे बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। सुदूर देश के अतिम छोर पर बैठकर व्यक्तिगत सपर्क की सभावना ही गौण हो जाती है तथा अपने स्तर या उससे भी हीन स्तर की रचनाओं का प्रकाशन देखकर इनके मन मे हीन भावना एव स्थायी ग्रथि बन जाती है जो इनके लेखन के मार्ग मे बाधक होती है।

हिन्दी-प्रदेशों मे प्रकाशन की समावना अधिक होती है, क्योंकि वहां लेखक एव प्रकाशक अपने सम्पर्क से सदा लाभ प्रदान कर सकते हैं। लेखक प्रकाशक को कई तरह से उपकृत करने की स्थिति में होते हैं, जबकि यहां रहने वाला हिन्दी लेखक अपनी जीविका हेतु सघर्षरत रहता है। उसका अस्तित्व ही क्या कि वह किसी का उपकार कर सके। परिणामस्वरूप यहां के हिन्दी लेखकों को प्रकाशन यात्राओं का आयोजन करना पड़ता है और अपनी रचनाओ के प्रकाशन हेतु कई पापड बेलने पड़ते हैं। यहा जब भी कोई प्रकाशक आता है तो उसका न केवल विशिष्ट आतिथ्य करना पड़ता है, बल्कि उसके साथ-साथ घूमना भी पड़ता है तब कहीं कोई पुस्तक छप पाती है। इससे लेखक के स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है तथा उसके लेखन म उसका प्रतिबिम्ब भी झलकता है। वहा भी वह समझौतावादी बन जाता है।

स्थानीय लेखक को पुस्तक के प्रकाशन हेतु कभी राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त हो जाता है किन्तु बाहर के हिन्दी लेखक के लिए यह सभावना भी नहीं है। केन्द्रीय सरकार, स्वैच्छिक सस्थाओ अथवा मणिपुर के बाहर से प्रकाशन सहायता का तो प्रश्न ही नहीं उठता है।

इन समस्याओ के अतिरिक्त स्थानीय लेखकों की समस्याओं से बाहर से आए हिन्दी लेखकों की सभी समस्याए समान ही हैं। यहा का बाहरी हिन्दी भाषी लेखक भी एक अहिन्दी भाषी वातावरण मे रहता है, जिससे उसके स्तर पर भी प्रभाव अवश्य पड़ता है।

अहिन्दी भाषी लेखकों को कुछ पुरस्कार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय देता है किन्तु हिन्दी भाषी मणिपुरी लेखकों को उस योजना मे भी कुछ दिया जाना सभव नहीं है या और कोई भी पुरस्कार या सम्मान इनके लिए आरक्षित नही है। अत इनका रचनाकार पलायन कर जाता है।

इनकी विडम्बना यह है कि ये जिस मूल राज्य के निवासी होते हैं, वहाँ की साहित्य या ग्रथ अकादमियाँ इन्हें मणिपुर निवासी मानती हैं और इनको प्रकाशन सहयोग या पुरस्कार नहीं दिए जा सकते हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना मे केवल अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक ही पुरस्कृत किए जाते हैं। इस प्रकार ये किसी भी योजना मे अधिकार पूर्वक सम्मिलित नही हो सकते।

इस प्रकार के लेखकों के लिए साहित्य अकादमी तथा राज्य साहित्य अकादमियो को अपने नियमो मे आवश्यक परिवर्तन करके प्रकाशन सहयोग तथा पुरस्कार योजनाए बनानी चाहिए।

9 मणिपुरी भाषा में आगत हिन्दी शब्दावली

मणिपुरी भाषा को विद्वानों द्वारा चीनी परिवार के उप-परिवार तिब्बती-बर्मी के अंतर्गत रखा गया है। स्पष्ट है कि उनके अनुसार आर्य भाषा परिवार से मणिपुरी का संबंध नहीं है और हिन्दी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। इस मत के परीक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि पंडित अतोम बापू शर्मा एवं डब्नु युमजाओ सिंह मणिपुरी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से मानते हैं। महाभारत काल से ही आर्य भाषा परिवार के लोगों के मणिपुर आने से मणिपुरी भाषा मे आर्य भाषा परिवार की भाषाओं के शब्दों का प्रचलन आरंभ हुआ। चित्रांगदा मणिपुर की राजकुमारी थीं। उनके पिता का नाम चित्रवाहन एवं पुत्र का नाम बभ्रुवाहन था। ये तीनों शब्द संस्कृत तत्सम शब्द हैं, साथ ही मणिपुर शब्द भी जो अज्ञात काल से प्रचलित है। सृष्टि के पश्चात् अथवा गुरु शिदबा अर्थात् आदि देव शिव जी ने जब देवी देवताओं के साथ मणिपुर की धरती पर प्रथम नृत्य किया था तो अनन्त नाग ने रंगभूमि को अपनी मणि से आलोकित किया था अतः इसका नाम मणिपुर रखा गया। अतः सृष्टि के साथ ही गुरु, शिव, मणि, अनन्त एवं नाग संस्कृत शब्दों का मणिपुरी भाषा में प्रयोग का प्रमाण मणिपुर की यह पौराणिक कथा है। अतः मणिपुरी में आगत शब्दावली की यात्रा आर्य भाषा की प्राचीनतम भाषा संस्कृत से आरंभ होती है और यह यात्रा परवर्तीकाल में भी निरन्तर जारी रही है।

प्रत्येक शब्द का इतिहास है और शब्द किसी समाज के इतिहास पर भी प्रकाश डालते हैं। मणिपुरी भाषा में आगत शब्द यह तथ्य स्पष्ट करते हैं कि मणिपुर के आर्य भाषा परिवार की भाषा संस्कृत से तथा उसके बोलने वालों से अज्ञातकाल से संबंध रहे हैं।

सातवीं और आठवीं शताब्दी के ऐतिहासिक दस्तावेज भी मणिपुरी भाषा में तत्सम शब्दों के प्रयोग को प्रमाणित करते हैं। सन् 1470 व उसके बाद भारत के पश्चिमी भागों से तथा आस पास के राज्यों से ब्राह्मण प्रव्रजन का क्रम आरंभ होता है। उसी समय से हिन्दी के तत्सम, तद्भव एवं देशज

शब्दों का प्रयोग मणिपुरी भाषा में होने लगा। आज मणिपुरी भाषा में लगभग 50% शब्दावली आगत शब्दावली है, जिसमें से आधे से अधिक शब्द हिन्दी भाषा के हैं। अन्यत्र यह कहा गया है कि मणिपुर में हिन्दी भाषा विभिन्न कारणों से द्वितीय सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। अतः उसके शब्दों का बहुत अधिक मात्रा में प्रयोग आश्चर्य का विषय नहीं है। मणिपुर के इतिहासकारों और विद्वानों में प्रसिद्ध स्वर्गीय डब्लु युमजाओ सिंह और अतोम बापू शर्मा ने तो मणिपुरी भाषा के विभिन्न शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत शब्दों से सिद्ध की है तथा उनके रूप परिवर्तन एवं ध्वनि परिवर्तन के ठोस भाषा वैज्ञानिक प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं।

मणिपुरी भाषा में हिन्दी के तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इनमें प्रमुखता संज्ञा की है। व्यक्ति वाचक संज्ञाओं की मणिपुरी में भरमार है। उदाहरणार्थ :—चेतन, ज्ञानेश्वर, इन्द्रकुमार, गोपाल, कृष्ण, गोकुल, समरेन्द्र, श्याम सुन्दर, विश्वेश्वर, मणि, चन्द्रमणि, सुवदनी, वेदान्ती, गभीनी, जामिनी (यामिनी), व्रज कुमार, कुमार, धनजय, राधा विनोद, देवेन्द्र, जय, वीर जीत, मारजीत, व्रजवासी, राधा, चन्द्रसखी, इन्द्रकुमार, व्रजमणि, गौरहरि, गौरमणि, कुजकिशोर, विम्बावती, मजुरी धर्णप्रिया, धनमजरी, रूपवती, रूपमहल, विजय, गोविन्द, काला चाँद, लाला, लाल, देवी, सिंह, श्रीमती, श्री, वीर मगल, वीर, नीलमणि, नीलो (नाला से), रघुमणि, गुरु छात्र-छात्री, सरस्वती, वीणापाणि, वेदान्ती, पूर्णमासी, पूर्णिमा, एकादशी, रामनवमी, जयती, रास, सकीर्तन, मृदग, रस, अलकार, सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, रूपक, राष्ट्रपति, अध्यक्ष, मुख्यमत्री, विधान सभा, परिषद, सभा, सभापति, मत्री, प्रधान मत्री, गाडी पत्रिका, दैनिक, खबर, मासिक, राजा, महाराजा, महारानी, रानी, राजकुमार, राजकुमारी, पापड, जिलेबी (जलेबी), कचौरी, सिंघाडा (समोसा), भुजिया, पूडी, पकोरा (पकोडा), गुल्ला (रस गुल्ला), जामुन (गुलाब जामुन), बर्फी, मिठाई, कोबी (गोभी), भिलेन्द्रो (भिंडी), रस मिठाई, काव्य, महाभारत, रामायण आदि।

मणिपुरी एक जीवित भाषा है और जीवित भाषा निरन्तर विभिन्न भाषाओं के विभिन्न शब्द ग्रहण करती है। मणिपुरी इसका अपवाद कैसे हो सकती है? उसका शब्द भडार निरन्तर विभिन्न भाषाओं के शब्दों से समृद्ध हुआ है—चीनी भाषा से 'चे' (कागज), मुक (स्याही), वर्मा से 'टा' शब्द भी मणिपुरी भाषा में लिए गए हैं। दरकार, फजर (प्रात काल) आदि अरबी-फारसी शब्द भी उसमें ग्रहण किए गए हैं। संस्कृत तत्सम शब्द हिन्दी शब्द भंडार का मुख्य स्रोत हैं और मणिपुर में भी वे शब्द तत्सम या तद्भव रूप म ग्रहण किये गये हैं। प्रक्रिया आज भी जारी है।

सर्वप्रथम सन् 410 ई. में रामायण की कथाओं के रंगमंच पर प्रदर्शन की बात मणिपुरी रंगमंच एवं नाटक से जुड़ी है। मणिपुरी नाटक के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करने वाले विद्वानों का यह मत है। स्पष्ट ही रामायण के पात्रों, नगरों स्थानों के नाम तो मणिपुर में उसी समय से प्रचलित हो गए होंगे। यदि धर्म नहीं तो साहित्य के माध्यम से संस्कृत शब्द मणिपुरी भाषा में सर्वप्रथम आए होंगे। कुछ विद्वान तो मणिपुरी भाषा की उत्पत्ति ही संस्कृत से मानते हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति एवं रूप, ध्वनि, अर्थ आदि परिवर्तन का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हुआ है। इस क्षेत्र में इस शताब्दी के तीसरे दशक में डब्ल्यू युमजाओ और अतोम बापू ने कुछ काम किया था। उसके बाद इस क्षेत्र में काम नहीं हुआ है। भविष्य में मणिपुरी भाषा के उद्गम और विकास एवं शब्दों की व्युत्पत्ति पर काम होने पर ही स्थिति स्पष्ट होगी। जो परस्पर विरोधी बातें भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कही जा रही हैं, उनका निराकरण होने पर ही स्थिति स्पष्ट होगी। इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मणिपुरी भाषा में साहित्यिक शब्दों को संस्कृत से ग्रहण किया गया है। अलंकार, व्याकरण एवं काव्यशास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली, तत्सम रूप में ग्रहण की गई है। उपन्यास, अलंकार कौमुदी आदि शब्द इस बात के प्रमाण हैं।

धर्म के साथ धार्मिक शब्दावली भी मणिपुरी भाषा में आई। सभी देवी-देवताओं के नाम, व्रत, पूजा, उपवास आदि के नाम, पूजा सामग्री के नाम आदि शब्द मणिपुरी भाषा में आए हैं।

राजनीति से सम्बन्धित शब्द सत्याग्रह, घेराव, बंदों, पदों के नाम आदि भी मणिपुर में तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं।

शिक्षा संबंधी शब्द भी मणिपुरी में हिन्दी से आए हैं। इतिहास, भूगोल अंक गणित जैसे शब्द इसके उदाहरण हैं।

विधि एवं कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले शब्द भी हिन्दी से मणिपुरी भाषा में आए हैं। न्यायालय, प्रार्थना पत्र, दरखास (दरख्वास्त) आदि ऐसे शब्द हैं, जो मणिपुरी भाषा में प्रयुक्त होते हैं।

शब्दों का आगमन अज्ञात काल से आरंभ हुआ है और आज भी शब्द आ रहे हैं। इनसे मणिपुरी भाषा के शब्द-भंडार में अभिवृद्धि हो रही है, साथ ही हिन्दी-मणिपुरी का संबंध प्रगाढ़ होता जा रहा है। हिन्दी ग्रंथों के मणिपुरी भाषा में अनुवाद के कारण भी मणिपुरी भाषा में हिन्दी शब्दों का प्रचलन बढ़ रहा है। हिन्दी ग्रंथों की अनुवाद परम्परा में हिन्दी से अनूदित ग्रंथों का उल्लेख किया जा चुका है।

हिन्दी शब्दो का मणिपुरी भापा मे प्रवेश हुआ है, किंतु यह आदान हुआ, प्रदान भी अवश्यम्भावी है, मणिपुरी भापा की कुछ पुस्तको का हिन्दी मे अनुवाद किया गया है। भविष्य मे भी यह परम्परा जारी रहेगी और हिन्दी भापा भी मणिपुरी भापा के शब्द ग्रहण करेगी। सच तो यह है कि हिन्दी शब्द भडार मणिपुरी ही नही, अन्य आधुनिक भारतीय भापाओ के शब्दो को ग्रहण करके समृद्ध होगा। मणिपुर पर हिन्दी में बहुत कम पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। यदि मणिपुर के विविध-पक्षो पर हिन्दी मे ग्र थ लिखे जाते रहेगे तो एक दिन हिन्दी मे मणिपुरी भापा के अनेक शब्द प्रवेश कर सकेंगे। भविष्य मे इस प्रकार शब्दो के आदान-प्रदान की सभावनाओ से कोई इन्कार नही कर सकता है।